10 सूरए यूनुस

आयत 1-5 (सूरए यूनुस, 10:1-5) का विश्लेषण:

आयत 1:

आयत का विवरण:
"मै उस ख़ुदा के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान रहम वाला है।"
संदर्भ: सूरए यूनुस, आयत 1
आधारित तत्व (Nyaya Element):
प्रमाण (Valid Knowledge)
विश्लेषण:
यह आयत ख़ुदा के नाम की शुरुआत है, जो अपनी दयालुता और करुणा का परिचायक है। Nyaya **दर्शन के अनुसार, किसी भी धार्मिक कथन का प्रमाणीकरण आवश्यक होता है। हालांकि, यहाँ पर ख़ुदा की दयालुता का दावा किया गया है, लेकिन इसका कोई प्रमाण या ठोस आधार प्रस्तुत नहीं किया गया है। यह केवल विश्वास पर आधारित है और इसे प्रमाणित या सत्यापित नहीं किया जा सकता है।**
प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: किसी को भी किसी और के करुणामयी गुण का प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं मिल सकता।**
- **अनुमान: यह एक विश्वास है, जिसका कोई तात्त्विक या वैज्ञानिक आधार नहीं है।**
- **उदाहरण: किसी व्यक्ति के गुणों का प्रमाणीकरण उसी व्यक्ति द्वारा या उस पर विश्वास करने वालों के द्वारा किया जाता है, न कि तार्किक या प्रमाणिक आधार से।**
  संरचित तर्क:
- **प्रतिज्ञा: ख़ुदा का दयालु और रहम करने वाला होना।**
- **हेतु: किसी प्रमाण या सत्य से इसका समर्थन नहीं होता।**
- **उदाहरण: वास्तविकता में, केवल विश्वास आधारित दावे सटीक प्रमाण नहीं होते।**
- **निगमन: यह आयत प्रमाण और तर्क के दृष्टिकोण से अव्यावहारिक है।**
  निष्कर्ष:
  Nyaya **दर्शन के अनुसार, यह आयत केवल विश्वास पर आधारित है, जो प्रमाणिक ज्ञान के सिद्धांत के खिलाफ है।**

आयत 2:

आयत का विवरण:
"ये आयतें उस किताब की हैं जो अज़सरतापा (सर से पैर तक) हिकमत से मलूउ (भरी) है।"
संदर्भ: सूरए यूनुस, आयत 2
आधारित तत्व (Nyaya Element):
प्रमेय (Object of Knowledge)
विश्लेषण:
यह आयत यह दावा करती है कि यह पुस्तक "हिकमत से भरपूर" है। Nyaya दर्शन में, किसी भी ज्ञान का प्रमाणीकरण जरूरी होता है। "हिकमत" का केवल शब्दों से दावा करना पर्याप्त नहीं होता; इसके पीछे वास्तविक प्रमाण और आधार होना चाहिए। बिना तात्त्विक प्रमाण के, "हिकमत" का दावा निराधार प्रतीत होता है।
प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: हिकमत का कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं दिखाया गया।**
- **अनुमान: कोई भी ज्ञान बिना प्रमाण के पूरा नहीं माना जा सकता।**
- **उदाहरण: वैज्ञानिक सिद्धांत तभी लागू होते हैं जब उनके पीछे ठोस प्रमाण हो।**
  संरचित तर्क:
- **प्रतिज्ञा: यह पुस्तक हिकमत से भरी हुई है।**
- **हेतु: हिकमत का दावा प्रमाण या ठोस आधार से नहीं जुड़ा है।**
- **उदाहरण: किसी भी शास्त्र का प्रमाणीकरण उसके तथ्यों और प्रमाणों से किया जाता है।**
- **निगमन: यह आयत प्रमाणीकरण के संदर्भ में अशक्त है।**
  निष्कर्ष:
  Nyaya दर्शन के दृष्टिकोण से, यह आयत प्रमाणिकता के बिना एक तात्त्विक दावा करती है और अतः इसे अव्यावहारिक और अप्रमाणित माना जा सकता है।

आयत 3:

आयत का विवरण:
"क्या लोगों को इस बात से बड़ा ताज्जुब हुआ कि हमने उन्हीं लोगों में से एक आदमी के पास वही भेजी कि

(बे ईमान) लोगों को डराओ और ईमानदारों को इसकी ख़ुश ख़बरी सुना दो कि उनके लिए उनके परवरदिगार की बारगाह में बुलन्द दर्जे हैं (मगर) कुफ्फार (उन आयतों को सुनकर) कहने लगे कि ये (शख़्स तो यक़ीनन सरीही जादूगर) है।"

संदर्भ: सूरए यूनुस, आयत 3

आधारित तत्व (Nyaya Element):

हेतु (Reason)

विश्लेषण:

यह आयत उन लोगों की प्रतिक्रिया को दर्शाती है जो मानते हैं कि वह जो संदेश दे रहे हैं, वह एक जादू है। Nyaya दर्शन में, किसी भी विचार या विश्वास का आधार तर्कसंगत होना चाहिए। यहाँ पर लोग यह मानते हैं कि यह संदेश जादू है, लेकिन इसके पीछे कोई तर्क या प्रमाण नहीं दिया गया है।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: जादू के प्रमाण या तात्त्विक आधार की अनुपस्थिति।**
- **अनुमान: जादू केवल भ्रम होता है, इसका कोई वास्तविक प्रमाण नहीं होता।**
- **उदाहरण: धर्म और तर्क के बीच अंतर को समझना जरूरी है।**
  संरचित तर्क:
- **प्रतिज्ञा: संदेश जादू जैसा प्रतीत होता है।**
- **हेतु: कोई प्रमाण या तर्कसंगत आधार नहीं है।**
- **उदाहरण: यथार्थ में, जादू वास्तविक नहीं है।**
- **निगमन: यह आयत "हेतु" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती।**
  निष्कर्ष:
  Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत तर्क के दृष्टिकोण से अस्पष्ट और अप्रमाणित है।

आयत 4:

आयत का विवरण:

"इसमें तो शक ही नहीं कि तुमरा परवरदिगार वही ख़ुदा है जिसने सारे आसमान व ज़मीन को 6 दिन में पैदा किया फिर उसने अर्श को बुलन्द किया वही हर काम का इन्तज़ाम करता है (उसके सामने) कोई (किसी का) सिफारिषी नहीं (हो सकता) मगर उसकी इजाज़त के बाद वही ख़ुदा तो तुम्हारा परवरदिगार है तो उसी की इबादत करो तो क्या तुम अब भी ग़ौर नहीं करते।"

संदर्भ: सूरए यूनुस, आयत 4

आधारित तत्व (Nyaya Element):

व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:

यह आयत ब्रह्मांड की उत्पत्ति और ख़ुदा की सत्ता पर जोर देती है। Nyaya दर्शन के "व्याप्ति" के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी घटना का परिणाम अवश्य एक कारण से जुड़ा होना चाहिए। इस आयत में ब्रह्मांड की उत्पत्ति का दावा किया गया है, लेकिन इसका कोई प्रमाणित और सत्य आधार नहीं दिया गया है।

प्रमाण और तर्क **(Criticism with Nyaya Logic):**

- प्रत्यक्षा: ब्रह्मांड की उत्पत्ति को देखा नहीं जा सकता।
- अनुमान: इसके बारे में कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।
- उदाहरण: ब्रह्मांड की उत्पत्ति पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण आवश्यक है।

  संरचित तर्क:
- प्रतिज्ञा: ब्रह्मांड का निर्माण और ख़ुदा की सत्ता।
- हेतु: प्रमाण के बिना यह दावा अव्यावहारिक है।
- उदाहरण: यह आयत भौतिक प्रमाणों और साक्ष्यों के बिना दावा करती है।
- निगमन: यह आयत प्रमाण और तर्क के दृष्टिकोण से अनुपयुक्त है।

  निष्कर्ष:

  Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत प्रमाणहीन और असत्य के खिलाफ है।

आयत 5:

आयत का विवरण:

"तुम सबको (आख़िर) उसी की तरफ लौटना है ख़ुदा का वायदा सच्चा है वही यक़ीनन मख़लूक को पहली मरतबा पैदा करता है फिर (मरने के बाद) वही दुबारा जिन्दा करेगा ताकि जिन लोगों ने इमान कुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए उनको इन्साफ के साथ जज़ाए (ख़ैर) अता फरमाएगा और जिन लोगों ने कुफ्र एख़्तियार किया उन के लिए उनके कुफ्र की सज़ा में पीने को खौलता हुआ पानी और दर्दनाक अज़ाब होगा।"

संदर्भ: सूरए यूनुस, आयत 5

आधारित तत्व **(Nyaya Element):**

हेतु (Reason)

विश्लेषण:

यह आयत पुनर्जन्म और न्याय का दावा करती है। Nyaya दर्शन में, किसी भी कृत्य या घटना का विश्लेषण तर्क और प्रमाण के आधार पर किया जाना चाहिए। इस आयत में मृत्यु के बाद पुनर्जन्म की बात की जा रही

है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या तात्त्विक आधार नहीं दिया गया है।
प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा:** पुनर्जन्म और मृत्यु के बाद की घटनाओं को देखा नहीं जा सकता।
- **अनुमान:** इन घटनाओं का कोई भौतिक या तार्किक प्रमाण नहीं है।
- **उदाहरण:** पुनर्जन्म पर विश्वास केवल धार्मिक दृष्टिकोण से आता है, इसका कोई प्रमाण नहीं है।
 संरचित तर्क:
- **प्रतिज्ञा:** पुनर्जन्म और मृत्यु के बाद का जीवन।
- **

हेतु:** इसका कोई वैज्ञानिक या प्रमाणित आधार नहीं है।

- **उदाहरण:** साकार प्रमाणों के बिना, पुनर्जन्म का दावा सही नहीं माना जा सकता।
- **निगमन:** यह आयत प्रमाण और तर्क के दृष्टिकोण से अव्यावहारिक है।
 निष्कर्ष:
 Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत प्रमाणीकरण के बिना, केवल विश्वास आधारित है और तार्किक रूप से विवादित है।

आयत 6-10 (सूरए यूनुस, 10:6-10) का विश्लेषण:

आयत 6:

आयत का विवरण:
"वही वह (ख़ुदाए क़ादिर) है जिसने आफ़ताब को चमकदार और महताब को रौषन बनाया और उसकी मंज़िलें मुक़र्रर की ताकि तुम लोग बरसों की गिनती और हिसाब मालूम करो ख़ुदा ने उसे हिकमत व मसलहत से बनाया है वह (अपनी) आयतों का वाक़िफ़कार लोगों के लिए तफ़सीलदार बयान करता है।"
संदर्भ: सूरए यूनुस, आयत 6
आधारित तत्व (Nyaya Element):
प्रमेय (Object of Knowledge)
विश्लेषण:
यह आयत सूरज और चाँद के सृजन और उनके उद्देश्य पर आधारित है, जो कालगणना के लिए महत्वपूर्ण हैं। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी प्राकृतिक घटना का ज्ञान तर्क और प्रमाण पर आधारित होना चाहिए। इस आयत में ब्रह्मांड की संरचना के बारे में दावा किया गया है, लेकिन इसका प्रमाण या तात्त्विक आधार नहीं दिया गया है।
प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- प्रत्यक्षा: सूरज और चाँद की संरचना को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जा सकता है।
- अनुमान: इसका दावा केवल धार्मिक दृष्टिकोण से है, जिसका कोई भौतिक या वैज्ञानिक आधार नहीं है।
- उदाहरण: ब्रह्मांड की उत्पत्ति के सिद्धांत वैज्ञानिक प्रमाणों पर आधारित होते हैं।

संरचित तर्क:

- प्रतिज्ञा: सूरज और चाँद का सृजन और उनकी भूमिका।
- हेतु: इसका कोई भौतिक प्रमाण या तात्त्विक आधार नहीं है।
- उदाहरण: इन ग्रहों की सृष्टि और कार्यक्षमता के बारे में वैज्ञानिक प्रमाण उपलब्ध हैं।
- निगमन: यह आयत प्रमाण और तर्क के दृष्टिकोण से अप्रमाणित है।

निष्कर्ष:

Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत तात्त्विक दृष्टिकोण से अप्रमाणित है और प्रमाणिक ज्ञान के सिद्धांत के खिलाफ है।

आयत 7:

आयत का विवरण:

"इसमें ज़रा भी शक नहीं कि रात दिन के उलट फेर में और जो कुछ ख़ुदा ने आसमानों और ज़मीन में बनाया है (उसमें) परहेज़गारों के वास्ते बहुतेरी निषानियाँ हैं।"

संदर्भ: सूरए यूनुस, आयत 7

आधारित तत्व (Nyaya Element):

व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:

यह आयत रात और दिन के परिवर्तन और प्रकृति के अन्य संकेतों को परहेज़गारों के लिए निशानियाँ मानती है। Nyaya दर्शन में, किसी घटना या प्रक्रिया का कोई निश्चित कारण होना चाहिए। यहाँ पर रात और दिन के परिवर्तन का उल्लेख किया गया है, लेकिन इसके लिए तात्त्विक कारणों का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं प्रस्तुत किया गया है।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- प्रत्यक्षा: रात और दिन के परिवर्तन को अवलोकन से देखा जा सकता है।
- अनुमान: इसका धार्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है, जिसका कोई भौतिक आधार नहीं है।

- उदाहरण: दिन और रात का परिवर्तन एक प्राकृतिक प्रक्रिया है, जिसे वैज्ञानिक रूप से समझा जा सकता है।

  संरचित तर्क:
- प्रतिज्ञा: रात और दिन के परिवर्तन का परहेज़गारों के लिए संकेत।
- हेतु: इसका कोई तात्त्विक आधार नहीं है।
- उदाहरण: प्राकृतिक घटनाएँ केवल भौतिक प्रक्रियाओं पर आधारित होती हैं।
- निगमन: यह आयत प्रमाण और तर्क के दृष्टिकोण से अव्यावहारिक है।

  निष्कर्ष:

  Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत केवल धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है और वास्तविक तात्त्विक आधार से रहित है।

आयत 8:

आयत का विवरण:

"इसमें भी शक नहीं कि जिन लोगों को (क़यामत में) हमारी (बारगाह की) हुज़ूरी का ठिकाना नहीं और दुनिया की (चन्द रोज़) ज़िन्दगी से निहाल हो गए और उसी पर चैन से बैठे हैं और जो लोग हमारी आयतों से ग़ाफिल हैं।"

संदर्भ: सूरए यूनुस, आयत 8

आधारित तत्व (Nyaya Element):

प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण:

यह आयत क़यामत और ईश्वर की बारगाह में वापस लौटने का बयान करती है। Nyaya दर्शन में, किसी भी धार्मिक विचार का आधार प्रमाणित होना चाहिए। यहाँ पर क़यामत और जीवन के बाद के परिणामों की चर्चा की गई है, लेकिन इसका कोई ठोस प्रमाण नहीं है।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- प्रत्यक्षा: क़यामत के बाद की घटनाओं का प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं है।
- अनुमान: यह केवल धार्मिक विश्वास है, जिसका कोई भौतिक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।
- उदाहरण: जीवन के बाद की स्थिति पर कोई प्रमाण नहीं है, यह केवल विश्वास का मामला है।

  संरचित तर्क:
- प्रतिज्ञा: क़यामत के दिन ईश्वर के पास लौटना।
- हेतु: इसका कोई प्रमाण या तात्त्विक आधार नहीं है।

- उदाहरण: केवल विश्वास के आधार पर किसी घटना का दावा करना प्रमाणिक नहीं होता।
- निगमन: यह आयत तर्क और प्रमाण के दृष्टिकोण से अपर्याप्त है।

  निष्कर्ष:

  Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत प्रमाणिक नहीं है और यह विश्वास आधारित है।

आयत 9:

आयत का विवरण:
"यही वह लोग हैं जिनका ठिकाना उनकी करतूत की बदौलत जहन्नुम है।"
संदर्भ: सूरए यूनुस, आयत 9
आधारित तत्व (Nyaya Element):
हेतु (Reason)
विश्लेषण:
यह आयत उन लोगों का उल्लेख करती है जो अपनी गलतियों की वजह से दोज़ख़ में जाएंगे। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी कर्म का फल तर्कसंगत होना चाहिए। यहाँ पर कर्मों के आधार पर दोज़ख़ का हवाला दिया गया है, लेकिन इस दावे के लिए कोई तात्त्विक या वैज्ञानिक आधार प्रस्तुत नहीं किया गया।
प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- प्रत्यक्षा: कर्मों के परिणाम को देखा नहीं जा सकता।
- अनुमान: कर्मों का फल केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित होता है, इसका कोई भौतिक आधार नहीं है।
- उदाहरण: कर्मों का फल केवल मनुष्य के विश्वास पर निर्भर करता है, जो तात्त्विक रूप से प्रमाणित नहीं हो सकता।

  संरचित तर्क:
- प्रतिज्ञा: बुरे कर्मों का फल जहन्नुम।
- हेतु: इसका कोई वास्तविक प्रमाण या आधार नहीं है।
- उदाहरण: कोई भी धार्मिक विचार बिना प्रमाण के सही नहीं हो सकता।
- निगमन: यह आयत वैज्ञानिक या तात्त्विक आधार से रहित है।

  निष्कर्ष:

  Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत प्रमाणिक और तार्किक दृष्टिकोण से अव्यावहारिक है।

आयत 10:

आयत का विवरण:

"बेषक जिन लोगों ने इमान कुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए उन्हें उनका परवरदिगार उनके इमान के सबब से मंज़िल मक़सूद तक पहुँचा देगा कि आराम व आसाइश के बाग़ों में (रहेगें) और उन के नीचे नहरें जारी होगी उन बाग़ों में उन लोगों का बस ये कौल होगा ऐ ख़ुदा तू पाक व पाकीज़ा है और उनमें उनकी बाहमी (आपसी) ख़ैरसलाही (मुलाक़ात) सलाम से होगी और उनका आख़िरी क़ौल ये होगा कि सब तारीफ ख़ुदा ही को सज़ावार है जो सारे जहाँन का पालने वाला है।"

संदर्भ: सूरए यूनुस, आयत 10

आधारित तत्व (Nyaya Element):

प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण:

यह आयत अच्छे कर्म करने वालों के लिए स्वर्ग के सुखों का वर्णन करती है। Nyaya दर्शन में, किसी भी धार्मिक विचार का प्रमाण होना चाहिए। यहाँ पर स्वर्ग और उसके सुखों का उल्लेख किया गया है, लेकिन इसका कोई ठोस प्रमाण नहीं है।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: स्वर्ग और नर्क का प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं है।**
- **अनुमान: यह धार्मिक विश्वास पर आधारित है, इसका वैज्ञानिक या भौतिक प्रमाण नहीं है।**
- **उदाहरण: स्वर्ग और नर्क के अस्तित्व का कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।**
  संरचित तर्क:
- **प्रतिज्ञा: अच्छे कर्मों का फल स्वर्ग में मिलेगा।**
- **हेतु: इसका कोई प्रमाण या तात्त्विक आधार नहीं है।**
- **उदाहरण: प्रमाण के बिना स्वर्ग और नर्क का दावा तर्कसंगत नहीं है।**
- **निगमन: यह आयत प्रमाणिक और तात्त्विक दृष्टिकोण से अव्यावहारिक है।**
  निष्कर्ष:
  Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत विश्वास पर आधारित है और प्रमाणिक नहीं है।

आयत 11-15 (सूरए युनूस, 10:11-15) का विश्लेषण:

आयत 11:

आयत का विवरण:

"और जिस तरह लोग अपनी भलाई के लिए जल्दी कर बैठे हैं उसी तरह अगर ख़ुदा उनकी शरारतों की सज़ा

में बुराई में जल्दी कर बैठता है तो उनकी मौत उनके पास कब की आ चुकी होती मगर हम तो उन लोगों को जिन्हें (मरने के बाद) हमारी हुज़ूरी का खटका नहीं छोड़ देते हैं कि वह अपनी सरकशी में आप सरग़िरदा रहें।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 11

आधारित तत्व (Nyaya Element):

हेतु (Reason)

विश्लेषण:

यह आयत ईश्वर की दया और इंसान के कर्मों के परिणामों पर चर्चा करती है। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी घटना का कारण तर्कसंगत और प्रमाणित होना चाहिए। यहाँ पर यह कहा गया है कि यदि ईश्वर तुरंत सजा देने पर आमादा होते तो लोग जल्दी ही नष्ट हो जाते, लेकिन ईश्वर ने उनकी अवधि बढ़ा दी है। यह एक धार्मिक दृष्टिकोण है और इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: किसी के कर्मों की तात्त्विक सजा का अनुभव नहीं किया जा सकता।**
- **अनुमान: यह दृष्टिकोण केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित है।**
- **उदाहरण: कर्मों की तात्त्विक सजा का कोई वैज्ञानिक या भौतिक प्रमाण नहीं है।**
  संरचित तर्क:
- **प्रतिज्ञा: ईश्वर अपनी दया से लोगों को समय देते हैं।**
- **हेतु: यह दावा विश्वास पर आधारित है, जिसका कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।**
- **उदाहरण: कर्मों का फल धार्मिक विश्वास पर आधारित होता है, जबकि विज्ञान में इसका कोई प्रमाण नहीं होता।**
- **निगमन: यह आयत वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अप्रमाणित है।**
  निष्कर्ष:
  Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत तर्क और प्रमाण के दृष्टिकोण से अव्यावहारिक है और विश्वास आधारित है।

आयत 12:

आयत का विवरण:

"और इन्सान को जब कोई नुकसान छू भी गया तो अपने पहलू पर (लेटा हो) या बैठा हो या ख़ड़ा (गरज़ हर हालत में) हम को पुकारता है फिर जब हम उससे उसकी तकलीफ को दूर कर देते है तो ऐसा खिसक जाता है जैसे उसने तकलीफ के (दफा करने के) लिए जो उसको पहुँचती थी हमको पुकारा ही न था जो लोग ज़्यादती करते हैं उनकी कारस्तानियाँ यूँ ही उन्हें अच्छी कर दिखाई गई हैं।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 12
आधारित तत्व (Nyaya Element):
प्रमेय (Object of Knowledge)
विश्लेषण:
यह आयत इंसान के स्वभाव को दर्शाती है जब वह मुश्किलों से बचने के लिए भगवान को पुकारता है। Nyaya दर्शन में, किसी भी घटना का कारण तर्कसंगत और प्रमाणित होना चाहिए। यह आयत इस प्रकार के व्यवहार की आलोचना करती है, जहाँ इंसान तकलीफों से बचने के बाद भूल जाता है कि उसने ईश्वर से सहायता माँगी थी। यह केवल एक मानवीय स्वभाव है और इसका कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।
प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: कोई व्यक्ति अपनी स्थिति में बदलाव के बाद अपनी शरण को भूल सकता है।**
- **अनुमान: यह केवल एक मानव स्वभाव पर आधारित है और इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।**
- **उदाहरण: जब किसी को तकलीफ होती है, तो वह मदद के लिए किसी भी स्रोत को पुकार सकता है, और बाद में राहत मिलने पर उस घटना को भूल सकता है।**
  संरचित तर्क:
- **प्रतिज्ञा: इंसान की भूलने की प्रवृत्ति।**
- **हेतु: यह केवल एक मानव स्वभाव है, जिसका कोई वैज्ञानिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं है।**
- **उदाहरण: किसी भी धार्मिक घटना का वास्तविक तात्त्विक आधार नहीं होता।**
- **निगमन: यह आयत मानव स्वभाव को दर्शाती है, लेकिन इसके कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं हैं।**
  निष्कर्ष:
  Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत केवल मानव स्वभाव पर आधारित है, और इसका तात्त्विक या भौतिक प्रमाण नहीं है।

आयत 13:

आयत का विवरण:
"और तुमसे पहली उम्मत वालों को जब उन्होंने शरारत की तो हम ने उन्हें ज़रुर हलाक कर डाला हालाकि उनके (वक़्त के) रसूल वाजेए व रौशन मोज़िज़ात लेकर आ चुके थे और वह लोग ईमान (न लाना था) न लाए हम गुनेहगार लोगों की यूँ ही सज़ा किया करते हैं।"
संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 13
आधारित तत्व (Nyaya Element):
प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण:

यह आयत उन पिछली उम्मतों की चर्चा करती है जिन्होंने अपने रसूलों की बातों को न माना और उनकी सजा का सामना किया। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी घटना का कारण तर्कसंगत और प्रमाणित होना चाहिए। यह आयत धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है और इसमें किसी तात्त्विक या वैज्ञानिक प्रमाण का अभाव है।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: पिछली उम्मतों की सजा का प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं है।**
- **अनुमान: यह केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित है।**
- **उदाहरण: इतिहास में किसी समूह की सजा का कोई ठोस वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।**

  संरचित तर्क:
- **प्रतिज्ञा: पिछले लोगों की सजा।**
- **हेतु: इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।**
- **उदाहरण: पिछली उम्मतों की सजा का कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं मिलता।**
- **निगमन: यह आयत केवल विश्वास पर आधारित है, और इसका तात्त्विक आधार नहीं है।**

  निष्कर्ष:

  Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत अप्रमाणिक है और विश्वास आधारित है।

आयत 14:

आयत का विवरण:

"फिर हमने उनके बाद तुमको ज़मीन में (उनका) जानषीन बनाया ताकि हम (भी) देखें कि तुम किस तरह काम करते हो।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 14

आधारित तत्व (Nyaya Element):

प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण:

यह आयत बताती है कि अल्लाह ने पिछली उम्मतों के बाद वर्तमान उम्मत को ज़मीन पर अधिकार दिया है, ताकि वे देख सकें कि वह कैसे काम करते हैं। Nyaya दर्शन में, किसी भी ऐतिहासिक या धार्मिक घटना का प्रमाण प्रमाणिक रूप से होना चाहिए। यह आयत धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, और इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- प्रत्यक्षा: वर्तमान उम्मत को मिली जमीन का कोई ठोस प्रमाण नहीं है।
- अनुमान: यह केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है।
- उदाहरण: किसी भी भूमि का वितरण विज्ञान या तात्त्विक प्रमाण पर आधारित नहीं होता।

संरचित तर्क:

- प्रतिज्ञा: वर्तमान उम्मत को मिली ज़मीन।
- हेतु: इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।
- उदाहरण: वर्तमान सत्ता या अधिकार का कोई तात्त्विक आधार नहीं होता।
- निगमन: यह आयत भौतिक प्रमाण से रहित है।

निष्कर्ष:

Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत विश्वास आधारित है और इसका कोई भौतिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं है।

आयत 15:

आयत का विवरण:

"और जब उन लोगों के सामने हमारी रौशन आयते पढ़ीं जाती हैं तो जिन लोगों को (मरने के बाद) हमारी हुजूरी का खटका नहीं है वह कहते है कि हमारे सामने इसके अलावा कोई दूसरा (कुरान लाओ या उसका रद्दो बदल कर डालो (ऐ रसूल तुम कह दो कि मुझे ये एख़्तेयार नहीं कि मै उसे अपने जी से बदल डालूँ मै तो बस उसी का पाबन्द हूँ जो मेरी तरफ वही की गई है मै तो अगर अपने परवरदिगार की नाफरमानी करु तो बड़े (कठिन) दिन के अज़ाब से डरता हूँ।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 15

आधारित तत्व **(Nyaya Element):**

प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण:

यह आयत कुरान के प्रति ईमान और उसके पालन की आवश्यकता पर बल देती है। Nyaya दर्शन के अनुसार, कोई भी धार्मिक कानून या नियम तर्क और प्रमाण के आधार पर होना चाहिए। यह आयत एक व्यक्तिगत दृष्टिकोण को दर्शाती है, जो प्रमाण के बिना आधारित है।

प्रमाण और तर्क **(Criticism with Nyaya Logic):**

- प्रत्यक्षा: कोई भी धार्मिक आदेश केवल विश्वास और आत्म-पालन पर आधारित होता है।
- अनुमान: इसका कोई वैज्ञानिक या भौतिक प्रमाण नहीं है।
- उदाहरण: कोई भी धार्मिक किताब बिना प्रमाण के स्वीकृत नहीं हो सकती।

- **संरचित तर्कः**
- **प्रतिज्ञाः कुरान का पालन।**
- **हेतुः इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।**
- **उदाहरणः केवल विश्वास के आधार पर कोई भी किताब प्रमाणिक नहीं मानी जा सकती।**
- **निगमनः यह आयत प्रमाणिक दृष्टिकोण से अव्यावहारिक है।**

  निष्कर्षः

  Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत विश्वास आधारित है और वैज्ञानिक या भौतिक प्रमाण से रहित है।

आयत 16-20 (सूरए युनूस, 10:16-20) का विश्लेषणः

आयत 16:

आयत का विवरणः
"(ऐ रसूल) कह दो कि ख़ुदा चाहता तो मै न तुम्हारे सामने इसको पढ़ता और न वह तुम्हें इससे आगाह करता क्योंकि मै तो (आख़िर) तुमने इससे पहले मुद्दतों रह चुका हूँ (और कभी 'वही' का नाम भी न लिया)..."
संदर्भः सूरए युनूस, आयत 16
आधारित तत्व (Nyaya Element):
प्रमेय (Object of Knowledge)
विश्लेषणः
यह आयत पैगंबर को अपना संदेश देने के संदर्भ में स्पष्ट करती है कि यह कोई व्यक्तिगत प्रयास नहीं था, बल्कि अल्लाह की इच्छा से यह संदेश प्रस्तुत हुआ। Nyaya दर्शन में किसी भी सूचना का प्रमाण और प्रमाणिकता आवश्यक है। यहाँ यह कहा गया है कि यदि अल्लाह चाहता तो पैगंबर इस संदेश को न प्रस्तुत करते। इसका तात्त्विक या भौतिक प्रमाण नहीं है, यह केवल विश्वास पर आधारित है।
प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षाः पैगंबर का संदेश ईश्वर की इच्छा से है, जिसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।**
- **अनुमानः यह एक विश्वास आधारित दावा है।**
- **उदाहरणः किसी भी धार्मिक संदेश का प्रमाण केवल विश्वास और धार्मिक अनुभव पर आधारित होता है।**

  संरचित तर्कः
- **प्रतिज्ञाः पैगंबर का संदेश अल्लाह की इच्छा से प्रस्तुत हुआ है।**
- **हेतुः इसका कोई वैज्ञानिक या भौतिक प्रमाण नहीं है।**

- उदाहरण: कोई भी धार्मिक सिद्धांत भौतिक प्रमाण से रहित होता है।
- निगमन: यह आयत विश्वास आधारित है और इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।

  निष्कर्ष:

  Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत प्रमाणिक दृष्टिकोण से अव्यावहारिक है और विश्वास आधारित है।

आयत 17:

आयत का विवरण:

"तो जो शख़्स ख़ुदा पर झूठ बोहतान बाधे या उसकी आयतो को झुठलाए उससे बढ़ कर और ज़ालिम कौन होगा इसमें शक नहीं कि (ऐसे) गुनाहगार कामयाब नहीं हुआ करते।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 17

आधारित तत्व (Nyaya Element):

हेतु (Reason)

विश्लेषण:

यह आयत झूठ बोलने और अल्लाह की आयतों का इंकार करने वालों को ज़ालिम ठहराती है। Nyaya दर्शन में, किसी भी तर्क या विश्वास को प्रमाणिक और तात्त्विक आधार पर समझने की आवश्यकता होती है। यहाँ कहा गया है कि झूठ बोलने और आयतों का इंकार करने से सफलता नहीं मिलती। हालांकि, इसे धर्म और विश्वास का मामला माना जा सकता है, लेकिन इसका तात्त्विक प्रमाण नहीं है।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- प्रत्यक्षा: धर्म में विश्वास और झूठ बोलने के परिणामों का कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।
- अनुमान: यह धार्मिक विश्वास पर आधारित है।
- उदाहरण: झूठ बोलने का परिणाम व्यक्तिगत या सामाजिक होता है, जो किसी के विश्वास पर निर्भर करता है।

  संरचित तर्क:
- प्रतिज्ञा: झूठ बोलने और आयतों का इंकार करने से सफलता नहीं मिलती।
- हेतु: इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।
- उदाहरण: सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन में झूठ बोलने के परिणाम होते हैं, लेकिन धर्म में इसके परिणाम भौतिक प्रमाणों से अलग होते हैं।
- निगमन: यह आयत विश्वास और धार्मिक आस्थाओं पर आधारित है।

  निष्कर्ष:

Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत तात्त्विक दृष्टिकोण से अव्यावहारिक है और विश्वास आधारित है।

आयत 18:

आयत का विवरण:
"या लोग ख़ुदा को छोड़ कर ऐसी चीज़ की परसतिश करते है जो न उनको नुकसान ही पहुँचा सकती है न नफा और कहते हैं कि ख़ुदा के यहाँ यही लोग हमारे सिफारिषी होगे (ऐ रसूल) तुम (इनसे) कहो तो क्या तुम ख़ुदा को ऐसी चीज़ की ख़बर देते हो जिसको वह न तो आसमानों में (कहीं) पाता है और न ज़मीन में ये लोग जिस चीज़ को उसका शरीक बनाते है..."
संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 18
आधारित तत्व (Nyaya Element):
प्रमेय (Object of Knowledge)
विश्लेषण:
यह आयत उन लोगों को चुनौती देती है जो अल्लाह के बजाय मूर्तियों और अन्य चीजों की पूजा करते हैं। Nyaya दर्शन में किसी भी वस्तु का प्रमाण और प्रमाणिकता पर जोर दिया जाता है। यह आयत यह पूछती है कि क्या इन मूर्तियों का कोई वास्तविक अस्तित्व है या क्या ये अल्लाह के समकक्ष हैं। इसका भौतिक प्रमाण नहीं है, यह विश्वास आधारित है।
प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- प्रत्यक्षा: मूर्तियों और अन्य चीजों की पूजा का कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।
- अनुमान: यह धार्मिक विश्वासों पर आधारित है।
- उदाहरण: मूर्तियों की पूजा का कोई वैज्ञानिक या भौतिक प्रमाण नहीं है।
  संरचित तर्क:
- प्रतिज्ञा: मूर्तियों की पूजा का कोई वास्तविक प्रमाण नहीं है।
- हेतु: यह केवल विश्वास आधारित है।
- उदाहरण: पूजा की चीजों का भौतिक अस्तित्व नहीं होता।
- निगमन: यह आयत केवल विश्वास आधारित है।
  निष्कर्ष:
  Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत भौतिक और वैज्ञानिक प्रमाण से रहित है और विश्वास आधारित है।

आयत 19:

आयत का विवरण:

"सब लोग तो (पहले) एक ही उम्मत थे और (ऐ रसूल) अगर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से एक बात (क़यामत का वायदा) पहले न हो चुकी होती जिसमें ये लोग एख़्तिलाफ कर रहे हैं उसका फैसला उनके दरम्यिान (कब न कब) कर दिया गया होता..."

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 19

आधारित तत्व (Nyaya Element):

Vyapti (Universality)

विश्लेषण:

यह आयत बताती है कि सभी लोग पहले एक ही उम्मत थे, लेकिन क़यामत के वादे में विभिन्नताएँ आईं। Nyaya दर्शन में, किसी भी सार्वभौमिक सिद्धांत का प्रमाण आवश्यक होता है। यह आयत सार्वभौमिकता की अवधारणा को प्रस्तुत करती है, लेकिन इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: उम्मत का एक होना और क़यामत का वादा एक विश्वास आधारित विचार है।**
- **अनुमान: इसका भौतिक प्रमाण नहीं है।**
- **उदाहरण: इतिहास में उम्मतों का एक होना या क़यामत के वादे का कोई प्रमाण नहीं है।**

  संरचित तर्क:
- **प्रतिज्ञा: सभी लोग पहले एक ही उम्मत थे।**
- **हेतु: इसका कोई भौतिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं है।**
- **उदाहरण: सभी मानव समुदायों का एक होना कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।**
- **निगमन: यह आयत एक विश्वास आधारित अवधारणा है।**

  निष्कर्ष:

  Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत एक विश्वास आधारित अवधारणा है, जिसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।

आयत 20:

आयत का विवरण:

"और कहते हैं कि उस पैग़म्बर पर कोई मोजिज़ा (हमारी ख़्वाहिष के मुवाफिक़) क्यों नहीं नाज़िल किया गया

तो (ऐ रसूल) तुम कह दो कि ग़ैब (दानी) तो सिर्फ ख़ुदा के वास्ते ख़ास है तो तुम भी इन्तज़ार करो और तुम्हारे साथ मै (भी) यक़ीनन इन्तज़ार करने वालों में हूँ..."

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 20

आधारित तत्व (Nyaya Element):

Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:

यह आयत उन लोगों की आलोचना करती है जो पैगंबर से किसी चमत्कार की उम्मीद करते हैं। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी चमत्कार या अलौकिक घटना का कोई भौतिक प्रमाण नहीं होता। यह आयत यह कहती है कि ग़ैब केवल अल्लाह के पास है और चमत्कारों की कोई आवश्यकता नहीं है।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: चमत्कारों का कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।**
- **अनुमान: यह विश्वास और धार्मिक विचारों पर आधारित है।**
- **उदाहरण: चमत्कारों का कोई वैज्ञानिक या तात्त्विक आधार नहीं है।**
  संरचित तर्क:
- **प्रतिज्ञा: पैगंबर द्वारा चमत्कारों की आवश्यकता नहीं है।**
- **हेतु: यह विश्वास पर आधारित है।**
- **उदाहरण: चमत्कार का कोई भौतिक प्रमाण नहीं है**

।

- **निगमन: यह आयत केवल विश्वास पर आधारित है।**
  निष्कर्ष:
  Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत तात्त्विक रूप से अव्यावहारिक है और विश्वास आधारित है।

आयत 21-25 (सूरए युनूस, 10:21-25) का विश्लेषण:

आयत 21:

आयत का विवरण:

"और लोगों को जो तकलीफ पहुँची उसके बाद जब हमने अपनी रहमत का जाएक़ा चखा दिया तो यकायक उन लोगों से हमारी आयतों में हीले बाज़ी शुरू कर दी (ऐ रसूल) तुम कह दो कि तद्बीर में ख़ुदा सब से ज़्यादा तेज़ है तुम जो कुछ मक्कारी करते हो वह हमारे भेजे हुए (फरिशते) लिखते जाते हैं।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 21

आधारित तत्व (Nyaya Element):

हेतु (Reason)

विश्लेषण:

यह आयत उन लोगों की आलोचना करती है जो अल्लाह की रहमत के बाद भी उसके संकेतों और आयतों के साथ छेड़छाड़ करते हैं। Nyaya दर्शन में यह तत्व "हेतु" पर जोर देता है, जिसमें यह कहा गया है कि अल्लाह की तद्बीर (नियंत्रण) सबसे तेज़ होती है, और जो मक्कारी होती है वह फरिश्तों द्वारा लिखी जाती है। यह विश्वास आधारित तर्क है और इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: मक्कारी और तद्बीर का कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।**
- **अनुमान: यह एक धार्मिक विश्वास है।**
- **उदाहरण: किसी भी अलौकिक तद्बीर का भौतिक प्रमाण नहीं होता।**

  संरचित तर्क:
- **प्रतिज्ञा: मक्कारी की हर क्रिया फरिश्तों द्वारा लिखी जाती है।**
- **हेतु: इसका कोई भौतिक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।**
- **उदाहरण: कोई भी अलौकिक प्रक्रिया को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**
- **निगमन: यह आयत विश्वास आधारित है, जिसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।**

  निष्कर्ष:

  Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत विश्वास आधारित है और तात्त्विक दृष्टिकोण से अव्यावहारिक है।

आयत 22:

आयत का विवरण:

"वह वही ख़ुदा है जो तुम्हें खुश्की और दरिया में सैर कराता फिरता है यहाँ तक कि जब (कभी) तुम कश्तियों पर सवार होते हो और वह उन लोगों को बाद मुवाफिक़ (हवा के धारे) की मदद से लेकर चली और लोग उस (की रफ्तार) से ख़ुश हुए (यकायक) कश्ती पर हवा का एक झोंका आ पड़ा और (आना था कि) हर तरफ से उस पर लहरें (बढ़ी चली) आ रही हैं और उन लोगों ने समझ लिया कि अब घिर गए (और जान न बचेगी) तब अपने अक़ीदे को उसके वास्ते निरा खरा करके खुदा से दुआएँ माँगने लगते हैं कि (ख़ुदाया) अगर तूने इस (मुसीबत) से हमें नजात दी तो हम ज़रुर बड़े शुक्र गुज़ार होंगें।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 22

आधारित तत्व (Nyaya Element):

Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:

यह आयत बताती है कि जब लोग संकट में फँसते हैं, तो वे केवल अल्लाह से मदद मांगते हैं। Nyaya दर्शन में यह "प्रमेय" (ज्ञान का वस्तु) पर आधारित है, क्योंकि यह अल्लाह के साथ एक सीधा और व्यक्तिगत संबंध स्थापित करता है। हालांकि, यह केवल धार्मिक अनुभवों और विश्वासों पर आधारित है, जिसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: अल्लाह से मदद की कोई भौतिक प्रमाणिकता नहीं है।**
- **अनुमान: यह धार्मिक विश्वास है।**
- **उदाहरण: संकट के समय में धार्मिक विश्वास का उत्पन्न होना सामान्य है, लेकिन इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं होता।**

  संरचित तर्क:
- **प्रतिज्ञा: लोग संकट के समय अल्लाह से मदद मांगते हैं।**
- **हेतु: इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।**
- **उदाहरण: संकट में लोग प्रार्थना करते हैं, लेकिन इसका कोई भौतिक या वैज्ञानिक आधार नहीं होता।**
- **निगमन: यह आयत एक विश्वास आधारित सिद्धांत है।**

  निष्कर्ष:

  Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत विश्वास और धार्मिक अनुभव पर आधारित है, जिसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।

आयत 23:

आयत का विवरण:

"फिर जब ख़ुदा ने उन्हें नजात दी तो वह लोग ज़मीन पर (कदम रखते ही) फौरन नाहक़ सरकशी करने लगते हैं (ऐ लोगों तुम्हारी सरकशी का वबाल) तो तुम्हारी ही जान पर है - (ये भी) दुनिया की (चन्द रोज़ा) ज़िन्दगी का फायदा है फिर आख़िर हमारी (ही) तरफ तुमको लौटकर आना है तो (उस वक़्त) हम तुमको जो कुछ (दुनिया में) करते थे बता देगे।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 23

आधारित तत्व (Nyaya Element):

Vyapti (Universality)

विश्लेषण:

यह आयत बताती है कि लोग जब संकट से उबर जाते हैं तो फिर से अपनी सरकशी शुरू कर देते हैं, और इसके परिणामस्वरूप उन्हें अल्लाह के सामने लौटना होता है। Nyaya दर्शन में, "Vyapti" (Universality) का तत्व दिखाया गया है क्योंकि यह सभी के लिए एक सार्वभौमिक सत्य है कि लोग अपनी गलती पर पछताते हैं और फिर से वही गलती करते हैं। हालांकि, यह विश्वास पर आधारित विचार है।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: लोग संकट के बाद अपनी गलती को दोहराते हैं, लेकिन इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।**
- **अनुमान: यह एक विश्वास आधारित विचार है।**
- **उदाहरण: मनुष्य के व्यवहार में दोहराव देखा जाता है, लेकिन इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।**

  संरचित तर्क:
- **प्रतिज्ञा: लोग संकट से उबरने के बाद फिर से अपनी गलती करते हैं।**
- **हेतु: यह एक सार्वभौमिक सत्य नहीं है और केवल विश्वास पर आधारित है।**
- **उदाहरण: मनुष्य के व्यवहार में बदलाव आ सकता है, लेकिन इसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**
- **निगमन: यह आयत एक विश्वास आधारित अवधारणा है।**

  निष्कर्ष:

  Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत सार्वभौमिकता का दावा करती है, लेकिन यह विश्वास आधारित है और इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।

आयत 24:

आयत का विवरण:

"दुनियावी ज़िंदगी की मसल तो बस पानी की सी है कि हमने उसको आसमान से बरसाया फिर ज़मीन के साग पात जिसको लोग और चैपाए खा जाते हैं (उसके साथ मिल जुलकर निकले यहाँ तक कि जब ज़मीन ने (फसल की चीज़ों से) अपना बनाओ सिंगार कर लिया और (हर तरह) आरास्ता हो गई और खेत वालों ने समझ लिया कि अब वह उस पर यक़ीनन क़ाबू पा गए (जब चाहेंगे काट लेगे) यकायक हमारा हुक्म व अज़ाब रात या दिन को आ पहुँचा तो हमने उस खेत को ऐसा साफ कटा हुआ बना दिया कि गोया कुल उसमें कुछ था ही नहीं जो लोग ग़ौर व फिक्र करते हैं उनके वास्ते हम आयतों को यूँ तफसीलदार बयान करते है।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 24

आधारित तत्व (Nyaya Element):

Vyapti (Universality)

विश्लेषण:
यह आयत दुनियावी जीवन के नश्वरता और अनिश्चितता को प्रदर्शित करती है। Nyaya दर्शन में, यह "Vyapti" (Universality) तत्व को उजागर करती है, जिसमें यह कहा गया है कि दुनियावी जीवन की कोई स्थायिता नहीं है, यह नष्ट हो सकता है। हालांकि, यह सिद्धांत केवल धार्मिक और विश्वास पर आधारित है, जिसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।
प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: दुनियावी जीवन के नश्वरता का कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।**
- **अनुमान: यह एक धार्मिक विचार है।**
- **उदाहरण: सभी का जीवन नश्वर है, लेकिन इसे किसी वैज्ञानिक तरीके से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**
  संरचित तर्क:
- **प्रतिज्ञा: दुनियावी जीवन नश्वर और अस्थ**

ायी है।

- **हेतु: इसका कोई भौतिक या वैज्ञानिक आधार नहीं है।**
- **उदाहरण: कोई भी जीवन अनिश्चित है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।**
- **निगमन: यह आयत विश्वास और धार्मिक दृष्टिकोण से संबंधित है।**
  निष्कर्ष:
  Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत तात्त्विक दृष्टिकोण से अव्यावहारिक है और विश्वास आधारित है।

आयत 25:

आयत का विवरण:
"और ख़ुदा तो आराम के घर (बेहाशत की तरफ बुलाता है और जिसको चाहता है सीधे रास्ते की हिदायत करता है।"
संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 25
आधारित तत्व (Nyaya Element):
Prameya (Object of Knowledge)
विश्लेषण:
यह आयत अल्लाह के मार्गदर्शन और हिदायत देने की शक्ति को प्रदर्शित करती है। Nyaya दर्शन में यह

"प्रमेय" (ज्ञान का वस्तु) के रूप में प्रस्तुत होती है, क्योंकि यह व्यक्तिगत विश्वास और धार्मिक अनुभव पर आधारित है। हालांकि, इसका कोई भौतिक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: हिदायत देने की प्रक्रिया का कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।**
- **अनुमान: यह एक विश्वास आधारित विचार है।**
- **उदाहरण: किसी भी व्यक्ति का मार्गदर्शन आस्थावादी दृष्टिकोण से किया जाता है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं होता।**

  संरचित तर्क:
- **प्रतिज्ञा: अल्लाह का मार्गदर्शन सभी के लिए उपलब्ध है।**
- **हेतु: इसका कोई भौतिक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।**
- **उदाहरण: धार्मिक विश्वासों के अनुसार, मार्गदर्शन प्राप्त होता है, लेकिन इसे प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**
- **निगमन: यह आयत विश्वास और धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है।**

  निष्कर्ष:

  Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत विश्वास और धार्मिक दृष्टिकोण के आधार पर है, जिसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।

आयत 26-30 (सूरए युनूस, 10:26-30) का विश्लेषण:

आयत 26:

आयत का विवरण:

"जिन लोगों ने दुनिया में भलाई की उनके लिए (आख़िरत में भी) भलाई है (बल्कि) और कुछ बढ़कर और न (गुनेहगारों की तरह) उनके चेहरों पर कालिक लगी हुयी होगी और न (उन्हें ज़िल्लत होगी यही लोग जन्नती हैं कि उसमें हमेशा रहा सहा करेंगे।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 26

आधारित तत्व (Nyaya Element):

Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:

यह आयत यह बताती है कि अच्छे कार्य करने वालों को आखिरत में पुरस्कार मिलेगा और उनका चेहरा अंधकार से मुक्त रहेगा। Nyaya दर्शन के तहत यह तत्व "प्रमेय" (ज्ञान का वस्तु) के रूप में आता है, क्योंकि यह आस्थावादी विश्वास पर आधारित है। इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है, क्योंकि यह धार्मिक विश्वासों से

संबंधित है।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: अच्छे कार्यों के फल का कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।**
- **अनुमान: यह धार्मिक विश्वास है, न कि भौतिक सत्य।**
- **उदाहरण: अच्छे कार्यों के भौतिक परिणामों का कोई प्रमाण नहीं होता।**
  संरचित तर्क:
- **प्रतिज्ञा: अच्छे कार्यों का नतीजा अच्छा होता है।**
- **हेतु: यह केवल विश्वास पर आधारित है, कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।**
- **उदाहरण: यह विश्वास किया जाता है कि अच्छे कार्यों का फल मिलेगा, लेकिन इसे भौतिक दृष्टि से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**
- **निगमन: यह आयत एक विश्वास आधारित विचार प्रस्तुत करती है।**
  निष्कर्ष:
  Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत विश्वास पर आधारित है, जिसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।

आयत 27:

आयत का विवरण:
"और जिन लोगों ने बुरे काम किए हैं तो गुनाह की सज़ा उसके बराबर है और उन पर रुसवाई छाई होगी ख़ुदा (के अज़ाब) से उनका कोई बचाने वाला न होगा (उनके मुह ऐसे काले होंगे) गोया उनके चेहरे यबों यज़ूर (अंधेरी रात) के टुकड़े से ढक दिए गए हैं यही लोग जहन्नुमी हैं कि ये उसमें हमेषा रहेंगे।"
संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 27
आधारित तत्व (Nyaya Element):
Prameya (Object of Knowledge)
विश्लेषण:
यह आयत बुरे कार्य करने वालों के लिए निंदा और दंड की चेतावनी देती है। इसके तहत यह कहा गया है कि उनका चेहरा अंधेरे से ढक जाएगा। Nyaya दर्शन में यह "प्रमेय" (ज्ञान का वस्तु) पर आधारित है, क्योंकि यह कर्मफल के सिद्धांत को प्रतिपादित करता है। हालांकि, इस सिद्धांत का कोई भौतिक प्रमाण नहीं है, क्योंकि यह धार्मिक आस्थाओं पर निर्भर है।
प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: बुरे कार्यों के परिणाम का कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।**

- **अनुमान: यह एक विश्वास आधारित विचार है।**
- **उदाहरण: बुरे कर्मों का फल हमेशा बुरा होता है, लेकिन इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।**

  संरचित तर्क:
- **प्रतिज्ञा: बुरे कार्यों का फल बुरा होता है।**
- **हेतु: यह विश्वास आधारित विचार है।**
- **उदाहरण: धार्मिक दृष्टिकोण से बुरे कार्यों का दंड निश्चित है, लेकिन इसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**
- **निगमन: यह आयत एक विश्वास आधारित विचार है।**

  निष्कर्ष:

  Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत विश्वास आधारित है और इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।

आयत 28:

आयत का विवरण:

"(ऐ रसूल उस दिन से डराओ) जिस दिन सब को इकट्ठा करेगें-फिर मुशरेकीन से कहेगें कि तुम और तुम्हारे (बनाए हुए ख़ुदा के) शरीक ज़रा अपनी जगह ठहरो फिर हम वाहम उनमें फूट डाल देगें और उनके शररीक उनसे कहेंगे कि तुम तो हमारी परसतिश करते न थे।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 28

आधारित तत्व (Nyaya Element):

Vyapti (Universality)

विश्लेषण:

यह आयत बताती है कि एक दिन सब को इकट्ठा किया जाएगा और शिर्क करने वालों को उनके द्वारा बनाए गए भगवानों से अलग किया जाएगा। Nyaya दर्शन में यह "Vyapti" (Universality) तत्व है, क्योंकि यह दर्शाता है कि यह सिद्धांत सभी के लिए लागू होता है। हालांकि, यह केवल विश्वास पर आधारित है, जिसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: किसी दिन सभी को इकट्ठा करने का कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।**
- **अनुमान: यह विश्वास आधारित विचार है।**
- **उदाहरण: यह विश्वास किया जाता है कि एक दिन सभी का हिसाब होगा, लेकिन इसे किसी वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**

  संरचित तर्क:

- प्रतिज्ञा: एक दिन सभी का हिसाब होगा।
- हेतु: इसका कोई भौतिक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।
- उदाहरण: यह एक विश्वास आधारित विचार है, जिसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।
- निगमन: यह आयत धार्मिक आस्था पर आधारित है।

  निष्कर्ष:

  Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत विश्वास पर आधारित है और इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।

आयत 29:

आयत का विवरण:

"तो (अब) हमारे और तुम्हारे दरमियान गवाही के वास्ते ख़ुदा ही काफी है हम को तुम्हारी परसतिश की ख़बर ही न थी।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 29

आधारित तत्व (Nyaya Element):

Vyapti (Universality)

विश्लेषण:

यह आयत इस बात को स्पष्ट करती है कि अंततः गवाही देने का अधिकार केवल अल्लाह का है। Nyaya दर्शन में यह "Vyapti" तत्व पर आधारित है, जो यह दर्शाता है कि अल्लाह ही सबसे सच्ची गवाही देगा। हालांकि, यह केवल विश्वास आधारित विचार है, इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- प्रत्यक्षा: गवाही का कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।
- अनुमान: यह एक विश्वास आधारित विचार है।
- उदाहरण: केवल धार्मिक विश्वास के आधार पर गवाही दी जाती है, लेकिन इसे भौतिक दृष्टि से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

  संरचित तर्क:

- प्रतिज्ञा: गवाही देने का अधिकार केवल अल्लाह का है।
- हेतु: इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।
- उदाहरण: किसी भी धार्मिक दृष्टिकोण से गवाही देने का अधिकार केवल ईश्वर का होता है।

- **निगमन: यह आयत एक विश्वास आधारित विचार है।**

निष्कर्ष:

Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत विश्वास आधारित है और इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।

आयत 30:

आयत का विवरण:

"(ग़रज़) वहाँ हर शख़्स जो कुछ जिसने पहले (दुनिया में) किया है जाँच लेगा और वह सब के सब अपने सच्चे मालिक ख़ुदा की बारगाह में लौटकर लाए जाएँगें और (दुनिया में) जो कुछ इफ़तेरा परदाज़िया (झूठी बातें) करते थे सब उनके पास से चल चंपत हो जाएगें।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 30

आधारित तत्व (Nyaya Element):

Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:

यह आयत बताती है कि हर व्यक्ति को उसके कर्मों का हिसाब देना होगा और झूठी बातें करने वाले लोग अपने झूठ से छुटकारा पा लेंगे। Nyaya दर्शन में यह "प्रमेय" पर आधारित है, क्योंकि यह कर्मों के परिणामों और धार्मिक विश्वासों पर आधारित है। हालांकि, इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है, क्योंकि यह एक विश्वास आधारित विचार है।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: कर्मों का हिसाब देने का कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।**
- **अनुमान: यह धार्मिक विश्वास है।**
- **उदाहरण: कर्मों का हिसाब धार्मिक दृष्टिकोण से होता है, लेकिन इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं होता।**

संरचित तर्क:

- **प्रतिज्ञा: कर्मों का हिसाब दिया जाएगा।**
- **हेतु: इसका कोई भौतिक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।**
- **उदाहरण: कर्मों का हिसाब धार्मिक दृष्टिकोण से होता है, लेकिन इसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**
- **निगमन: यह आयत विश्वास और धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है।**

निष्कर्ष:

Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत विश्वास पर आधारित है और इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।

आयत 31:

आयत का विवरण:

"ऐ रसूल तुम उने ज़रा पूछो तो कि तुम्हें आसमान व ज़मीन से कौन रोज़ी देता है या (तुम्हारे) कान और (तुम्हारी) आँखों का कौन मालिक है और कौन शख़्स मुर्दे से ज़िन्दा को निकालता है और ज़िन्दा से मुर्दे को निकालता है और हर अम्र (काम) का बन्दोबस्त कौन करता है तो फौरन बोल उठेंगे कि ख़ुदा (ऐ रसूल) तुम कहो तो क्या तुम इस पर भी (उससे) नहीं डरते हो।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 31

आधारित तत्व (Nyaya Element):
Pramana (Valid Knowledge)

विश्लेषण:

यह आयत यह संकेत देती है कि अल्लाह ही सर्वशक्तिमान है और उसकी शक्ति से हर चीज़ नियंत्रित है, जैसे जीवन और मृत्यु, हर वस्तु की रोज़ी, और आकाश व पृथ्वी का संचालन। लेकिन इस तरह के कथन में केवल भूतकाल और वर्तमान का संकेत किया गया है, न कि वह ज्ञान जो सभी धर्मों और विचारों में सर्वमान्य हो। "प्रमाण" के संदर्भ में यह साबित करना कठिन है कि यह जानकारी एक निश्चित प्रमाणित स्रोत से आई है, क्योंकि यह केवल एक विशेष विश्वास पर आधारित है और मानवता के लिए सार्वभौमिक प्रमाणित सत्य नहीं है।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: यह कोई ऐसा तथ्य नहीं है जिसे हर व्यक्ति या समाज ने सत्य के रूप में देखा हो। मनुष्य को जीवन और मृत्यु का ज्ञान उसके तात्त्विक अनुभव से होता है, और इस आयत में केवल अल्लाह का नाम लिया गया है, जबकि कई अन्य धार्मिक और दर्शनिक प्रणाली जीवन के संचालन के लिए विभिन्न कारणों को स्वीकार करती हैं।**
- **अनुमान: यदि कोई यह दावा करता है कि केवल अल्लाह ही जीवन और मृत्यु का कारक है, तो उसे अन्य दर्शन और विज्ञान के तथ्यों के संदर्भ में पुनः परखने की आवश्यकता है, जो जीवन और मृत्यु को प्राकृतिक कारणों और परिघटनाओं के आधार पर समझाते हैं।**

- उदाहरण: वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जीवन और मृत्यु जैविक प्रक्रियाओं से संबंधित होते हैं, जिनमें प्राकृतिक कारणों का योगदान होता है, जैसे मृत्यु की प्रक्रिया में कोशिकाओं का नष्ट होना, या जीवन के निर्माण में प्राकृतिक चयन और विकास का सिद्धांत।

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- प्रतिज्ञा: केवल अल्लाह ही जीवन और मृत्यु का कारक नहीं है, यह एक संकीर्ण दृष्टिकोण है।
- हेतु: वैज्ञानिक और दार्शनिक दृष्टिकोण जीवन के कारकों को प्राकृतिक कारणों और प्रक्रियाओं में मान्यता देते हैं।
- उदाहरण: जीवन की उत्पत्ति और मृत्यु की प्रक्रियाओं को प्राकृतिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझा जा सकता है।
- निगमन: यह आयत सभी मानवता के लिए सही नहीं हो सकती, क्योंकि इसका दावा सार्वभौमिक नहीं है और केवल एक विशेष विश्वास पर आधारित है।

निष्कर्ष:
Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत एक विशेष धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, जो पूरी मानवता के लिए सटीक और सर्वमान्य प्रमाण नहीं हो सकता। यह सिर्फ एक निश्चित विश्वास प्रणाली का हिस्सा है, जिसे सभी लोग नहीं मानते। इसलिए यह आयत सार्वभौमिकता और प्रमाणिकता के दृष्टिकोण से गलत सिद्ध होती है।

आयत 32:

आयत का विवरण:
"फिर वही ख़ुदा तो तुम्हारा सच्चा रब है फिर हक़ बात के बाद गुमराही के सिवा और क्या है फिर तुम कहाँ फिरे चले जा रहे हो।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 32

आधारित तत्व (Nyaya Element):
Hetu (Reason)

विश्लेषण:
यह आयत यह दावा करती है कि केवल अल्लाह ही सत्य है और उसके बाद केवल गुमराही हो सकती है। Nyaya दर्शन के "Hetu" (Reason) के आधार पर, यह विश्लेषण किया जा सकता है कि यदि यह दावा किया

जाता है कि केवल एक ही स्रोत सत्य है, तो उसे सबके लिए तार्किक रूप से सिद्ध करना आवश्यक है। हर विचारधारा और दर्शन में सत्य की परिभाषा भिन्न होती है। इसलिए यह निष्कर्ष सार्वभौमिक रूप से सही नहीं हो सकता।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा:** यह केवल एक विशेष धार्मिक परिप्रेक्ष्य से सच माना जा सकता है, जबकि मानवता के विभिन्न हिस्सों में विभिन्न सत्य और दर्शन हो सकते हैं।
- **अनुमान:** अन्य धार्मिक और दार्शनिक दृष्टिकोणों में भी सत्य की परिभाषा दी जाती है, जो इस आयत के खिलाफ जाती है।
- **उदाहरण:** हिंदू दर्शन में सत्य की परिभाषा आत्मा के वास्तविक स्वरूप और ब्रह्म के साथ एकता से जुड़ी है, जो इस आयत के कथन से भिन्न है।

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रतिज्ञा:** केवल एक सत्य नहीं हो सकता, क्योंकि विभिन्न विचारधाराओं में सत्य की परिभाषा अलग-अलग है।
- **हेतु:** विभिन्न धार्मिक और दार्शनिक दृष्टिकोणों में सत्य की परिभाषा भिन्न है, जो इस आयत के दावे को असंगत बनाती है।
- **उदाहरण:** भगवद गीता में सत्य को आत्मा के साथ संबंध के रूप में परिभाषित किया गया है, जो अन्य धर्मों की परिभाषाओं से भिन्न है।
- **निगमन:** यह आयत सार्वभौमिक सत्य के रूप में स्वीकार्य नहीं है, क्योंकि विभिन्न दृष्टिकोणों में सत्य के बारे में भिन्नताएँ हैं।

निष्कर्ष:
Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत तार्किक रूप से गलत है, क्योंकि यह दावा करती है कि केवल एक सत्य है, जबकि अन्य विचारधाराओं में सत्य की परिभाषा अलग-अलग हो सकती है। यह सबके लिए सही नहीं हो सकता।

आयत 33:

आयत का विवरण:
"ये तुम्हारे परवरदिगार की बात बदचलन लोगों पर साबित होकर रही कि ये लोग हरगिज़ इमान न लाएँगें।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 33

आधारित तत्व (Nyaya Element):
Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:
यह आयत यह दावा करती है कि कुछ लोग कभी भी इमान नहीं लाएंगे, जो कि एक निश्चितता का दावा है। "Vyapti" (Invariable Concomitance) के सिद्धांत के अनुसार, कोई भी परिणाम जब किसी कारण के साथ अनिवार्य रूप से जुड़ा होता है, तो वह प्रत्येक स्थिति में सत्य होता है। लेकिन इस आयत का दावा सभी व्यक्तियों पर लागू नहीं हो सकता।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: यह अनुमान एक निश्चित सिद्धांत के बिना है और किसी के इमान लाने या न लाने के बारे में कोई प्रमाण नहीं प्रस्तुत करता।**
- **अनुमान: हर व्यक्ति का विश्वास उसकी व्यक्तिगत यात्रा और अनुभवों पर निर्भर करता है, और इस आधार पर कोई निश्चित भविष्यवाणी नहीं की जा सकती।**
- **उदाहरण: विश्व के विभिन्न हिस्सों में लोग विभिन्न धर्मों और विचारधाराओं के प्रति रुचि रखते हैं, जिससे यह सिद्ध होता है कि यह आयत सार्वभौमिक नहीं हो सकती।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रतिज्ञा: यह दावा सभी के लिए सही नहीं हो सकता कि कुछ लोग कभी भी इमान नहीं लाएंगे।**
- **हेतु: मानव स्वभाव और व्यक्तिगत यात्रा पर विश्वास करने का अधिकार है, जो इस आयत के दावे को असंगत बनाता है।**
- **उदाहरण: बहुत से लोग जीवन में बदलते हैं और किसी समय पर विश्वास करना शुरू कर देते हैं।**
- **निगमन: यह आयत गलत है, क्योंकि यह एक निश्चित भविष्यवाणी करती है जो सभी व्यक्तियों पर लागू नहीं हो सकती।**

निष्कर्ष:
Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत गलत है, क्योंकि यह दावा करती है कि कुछ लोग कभी इमान नहीं लाएंगे, जो व्यक्तिगत यात्रा और विकास की प्रक्रिया को नजरअंदाज करता है।

आयत 34:

आयत का विवरण:

"तुम से कहो कि तुम ने जिन लोगों को (ख़ुदा का) शररीक बनाया है कोई भी ऐसा है जो मख़लूकात को पहली बार पैदा करे फिर उन को (मरने के बाद) दोबारा ज़िन्दा करे तो क्या जवाब देगें तुम ही कहो कि ख़ुदा ही पहले भी पैदा करता है फिर वही दोबारा ज़िन्दा करता है तो किधर तुम उल्टे जा रहे हो।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 34

आधारित तत्व (Nyaya Element):

Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:

यह आयत यह दावा करती है कि केवल अल्लाह ही जीवन और मृत्यु को नियंत्रित करता है। "प्रमेय" के सिद्धांत के अनुसार, किसी चीज़ का अस्तित्व और उसकी सत्यता जब अन्य प्रमाणित सिद्धांतों से मेल नहीं खाता, तो वह सिद्धांत गलत हो सकता है।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: जीवन और मृत्यु के बारे में अनेक दृष्टिकोण हैं, जो अन्य धर्मों और दार्शनिक सिद्धांतों से संबंधित हैं।**
- **अनुमान: इस प्रकार का दावा केवल एक विशेष धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, जो सत्य के सार्वभौमिक और प्रमाणित सिद्धांतों से मेल नहीं खाता।**
- **उदाहरण: जीवों की उत्पत्ति और जीवन के चक्र को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी समझा जा सकता है, जिसमें प्राकृतिक प्रक्रिया और विकास के सिद्धांत शामिल हैं।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रतिज्ञा: केवल अल्लाह जीवन और मृत्यु का कारण नहीं हो सकता।**
- **हेतु: जीवन और मृत्यु के बारे में विभिन्न धार्मिक, दार्शनिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण मौजूद हैं।**
- **उदाहरण: विज्ञान जीवन की उत्पत्ति को प्राकृतिक चयन और जैविक प्रक्रियाओं से समझता है।**
- **निगमन: यह आयत सार्वभौमिक नहीं हो सकती, क्योंकि जीवन और मृत्यु के बारे में अन्य प्रमाणित सिद्धांत भी हैं।**

निष्कर्ष:

Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत केवल एक दृष्टिकोण पर आधारित है, जो सभी मानवता के लिए सही नहीं हो सकता।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों का आलोचनात्मक विश्लेषण Nyaya दर्शन के विभिन्न तत्वों से किया गया, जैसे "Pramana", "Hetu", "Vyapti", और "Prameya", और यह स्पष्ट हुआ कि ये आयतें विशेष रूप से एक दृष्टिकोण पर आधारित हैं, जो सभी मानवता के लिए सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं हो सकतीं। इन आयतों में दावा किया गया है कि केवल एक ही सत्य है और केवल एक शक्ति जीवन और मृत्यु को नियंत्रित करती है, जबकि अन्य दार्शनिक, वैज्ञानिक, और धार्मिक दृष्टिकोणों में विभिन्न विचार और प्रमाण मौजूद हैं। इस प्रकार, इन आयतों को सार्वभौमिक रूप से गलत और अस्वीकार्य माना जा सकता है।

आयत 36:

आयत का विवरण:
"तुम कैसे हुक्म लगाते हो और उनमें के अक्सर तो बस अपने गुमान पर चलते हैं (हालाकि) गुमान यक़ीन के मुक़ाबले में हरगिज़ कुछ भी काम नहीं आ सकता बेषक वह लोग जो कुछ (भी) कर रहे हैं खुदा उसे खूब जानता है।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 36

आधारित तत्व (Nyaya Element):
Pramana (Valid Knowledge)

विश्लेषण:
यह आयत यह कहती है कि लोग अपने गुमान पर चलते हैं, जबकि यकीन या प्रमाण पर आधारित ज्ञान ही सही है। यहाँ पर ज्ञान के सही और गलत होने की बात की जा रही है, और इसका प्रमाण "गुमान" और "यकीन" के बीच अंतर को स्पष्ट करता है। Nyaya दर्शन के अनुसार, ज्ञान का सही होना या गलत होना किसी प्रमाण के आधार पर तय होता है, और गुमान (अनुमान) वास्तविक प्रमाण के मुकाबले कमजोर होता है।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: गुमान या अनुमान वास्तविक अनुभव या प्रमाणित सत्य से अलग हो सकता है। हालांकि, यह पूरी तरह से सत्य नहीं होता। इस दृष्टिकोण से केवल गुमान का आधार लेकर किसी सत्य को निर्धारित करना गलत हो सकता है।**
- **अनुमान: गुमान का कोई निश्चित आधार नहीं होता, इसलिए इसे किसी वास्तविक ज्ञान के मुकाबले स्वीकार नहीं किया जा सकता।**

- **उदाहरण: वैज्ञानिक प्रमाण और प्राकृतिक घटनाओं का अनुभव एक प्रामाणिक सत्य है, जो गुमान या अनुमान से भिन्न होता है।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रतिज्ञा: यह आयत कहती है कि गुमान वास्तविक ज्ञान का विकल्प नहीं हो सकता। यह सार्वभौमिक सत्य नहीं है क्योंकि ज्ञान का कोई विशेष प्रमाण होना चाहिए।**
- **हेतु: गुमान व्यक्तिगत अनुभव या बिना प्रमाण के अनुमान होता है, जो वास्तविक प्रमाण से मेल नहीं खाता।**
- **उदाहरण: सच्चे ज्ञान के लिए अनुभव और प्रमाण आवश्यक होते हैं, जैसे वैज्ञानिक प्रयोग जो निष्कर्षों को साबित करते हैं।**
- **निगमन: यह आयत केवल एक दृष्टिकोण से सत्य प्रतीत होती है, और यह हर किसी के लिए सही नहीं हो सकती, क्योंकि विभिन्न प्रणालियाँ ज्ञान के प्रमाण और सत्य को मानती हैं।**

निष्कर्ष:
Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत पूरी मानवता के लिए सही नहीं हो सकती, क्योंकि ज्ञान का वास्तविकता से संबंध केवल प्रमाणित तथ्यों पर आधारित होना चाहिए, न कि केवल अनुमान पर। इस प्रकार, यह आयत सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं है।

आयत 37:

आयत का विवरण:
"और ये कुरान ऐसा नहीं कि खुदा के सिवा कोई और अपनी तरफ से झूठ मूठ बना डाले बल्कि (ये तो) जो (किताबें) पहले की उसके सामने मौजूद हैं उसकी तसदीक़ और (उन) किताबों की तफ़सील है उसमें कुछ भी शक नहीं कि ये सारे जहाँन के परवरदिगार की तरफ से है।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 37

आधारित तत्व (Nyaya Element):
Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:
यह आयत यह दावा करती है कि कुरान पूरी तरह से सही है और इसमें कोई शक नहीं हो सकता, क्योंकि यह पहले की किताबों से मेल खाती है और उन किताबों की तसदीक करती है। "Vyapti" (Invariable

Concomitance) के सिद्धांत के अनुसार, जब कोई घटनाएँ या तथ्य एक दूसरे से अनिवार्य रूप से जुड़े होते हैं, तो वे एक समान परिणाम देते हैं। इस आयत का दावा यह है कि कुरान में पूरी तरह से सत्य है, लेकिन इसे हर किसी के लिए एक समान सत्य के रूप में प्रस्तुत करना वैज्ञानिक और दार्शनिक दृष्टिकोण से सही नहीं हो सकता।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: यह दावा एक ही किताब को सही मानने पर आधारित है, जबकि विभिन्न धर्मों और विचारधाराओं में सत्य की परिभाषाएँ और किताबें अलग-अलग हो सकती हैं।**
- **अनुमान: यदि कोई यह मानता है कि कुरान पूरी तरह से सही है, तो उसे अन्य किताबों और धर्मों के सत्य का भी समान रूप से आदर करना चाहिए।**
- **उदाहरण: विभिन्न धर्मों और विचारधाराओं में विभिन्न पवित्र किताबों का अस्तित्व है, जो सत्य की अलग-अलग व्याख्याएँ प्रस्तुत करती हैं।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रतिज्ञा: कुरान को सत्य का अंतिम स्रोत मानना सभी के लिए सही नहीं हो सकता।**
- **हेतु: विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों में कई पवित्र किताबें हैं, जो सत्य के बारे में भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हैं।**
- **उदाहरण: हिंदू धर्म की वेद, बाइबिल, और बौद्ध ग्रंथों में सत्य की परिभाषाएँ भिन्न होती हैं।**
- **निगमन: यह आयत सार्वभौमिक रूप से सही नहीं हो सकती, क्योंकि यह केवल एक विशेष धर्म और विश्वास पर आधारित है।**

निष्कर्ष:
Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत पूरी मानवता के लिए सही नहीं हो सकती क्योंकि यह केवल एक विशेष विश्वास पर आधारित है और अन्य धार्मिक और दार्शनिक दृष्टिकोणों के सत्य को नकारती है।

आयत 38:

आयत का विवरण:
"क्या ये लोग कहते हैं कि इसको रसूल ने खुद झूठ मूठ बना लिया है (ऐ रसूल) तुम कहो कि (अच्छा) तो तुम अगर (अपने दावे में) सच्चे हो तो (भला) एक ही सूरा उसके बराबर का बना लाओ और ख़ुदा के सिवा जिसको तुम्हें (मदद के वास्ते) बुलाते बन पड़े बुला लो।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 38

आधारित तत्व (Nyaya Element):
Hetu (Reason)

विश्लेषण:
यह आयत यह चुनौती देती है कि यदि कोई व्यक्ति कुरान को झूठ मानता है, तो वह उसी जैसा सूरा (पद) लाने का प्रयास करे। "Hetu" (Reason) के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी दावे को साबित करने के लिए उचित कारण होना चाहिए। यहाँ पर आयत केवल एक चुनौती देती है, लेकिन यह नहीं बताती कि क्यों कुरान या सूरा का कोई समान स्तर हो सकता है। यह विश्वास पर आधारित है, न कि तार्किक कारणों पर।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: यह दावा केवल चुनौती देता है, बिना यह बताए कि क्यों कुरान को अस्वीकार किया जा सकता है या नहीं।**
- **अनुमान: यदि कोई यह कहता है कि कुरान असत्य है, तो इसे केवल एक दृष्टिकोण से आलोचना नहीं किया जा सकता, बल्कि इसे तार्किक और प्रमाणिक कारणों से साबित किया जाना चाहिए।**
- **उदाहरण: किसी भी धार्मिक ग्रंथ के आलोचनात्मक विश्लेषण के लिए प्रमाण और तर्क की आवश्यकता होती है, न कि केवल चुनौती देने से काम चल सकता है।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रतिज्ञा: यह आयत केवल एक चुनौती है, जो केवल विश्वास पर आधारित है।**
- **हेतु: चुनौती देने से कोई विचार या सिद्धांत सही नहीं हो सकता, जब तक उसका तार्किक समर्थन न हो।**
- **उदाहरण: कोई भी विचार केवल प्रमाणित कारणों से ही स्वीकार्य हो सकता है।**
- **निगमन: यह आयत केवल विश्वास पर आधारित है, और इसे सार्वभौमिक प्रमाणिकता के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता।**

निष्कर्ष:
Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत केवल चुनौती देती है और प्रमाण के आधार पर कोई मजबूत तर्क प्रस्तुत नहीं करती, जिससे यह सार्वभौमिक रूप से सही नहीं हो सकती।

आयत 39:

आयत का विवरण:

"(ये लोग लाते तो क्या) बल्कि (उलटे) जिसके जानने पर उनका हाथ न पहुँचा हो लगे उसको झुठलाने हालाकि अभी तक उनके ज़ेहन में उसके मायने नहीं आए इसी तरह उन लोगों ने भी झुठलाया था जो उनसे पहले थे-तब ज़रा ग़ौर तो करो कि (उन) ज़ालिमों का क्या (बुरा) अन्जाम हुआ।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 39

आधारित तत्व (Nyaya Element):
Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:

यह आयत कहती है कि लोग उस ज्ञान को झूठा मानते हैं, जिसे वे पूरी तरह से समझ नहीं पाते। "Vyapti" के सिद्धांत के अनुसार, जब कोई घटना या सत्य बिना किसी संशय के निश्चित हो, तो उसका प्रत्येक स्थान और समय में पालन होना चाहिए। लेकिन यह आयत केवल एक विशेष समय और स्थान के दृष्टिकोण पर आधारित है, और सभी परिस्थितियों में यह सही नहीं हो सकती।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: यह दावा एक निश्चित दृष्टिकोण से किया गया है, जबकि यह सत्य सार्वभौमिक रूप से सही नहीं हो सकता।**
- **अनुमान: प्रत्येक व्यक्ति का ज्ञान और समझ अलग-अलग होती है, इसलिए किसी चीज़ को केवल इसलिए अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि किसी ने उसे नहीं समझा।**
- **उदाहरण: कई बार लोग किसी नए विचार को समझ नहीं पाते, लेकिन वह समय के साथ सही साबित होता है।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रतिज्ञा: यह आयत सार्वभौमिक रूप से सही नहीं हो सकती, क्योंकि हर व्यक्ति का ज्ञान और समझ अलग होती है।**
- **हेतु: लोगों का अनुभव और ज्ञान भिन्न होता है, इसलिए किसी विचार को अस्वीकार करना गलत हो सकता है।**
- **उदाहरण: विज्ञान में कई बार नई खोजें ऐसी रही हैं, जिन्हें पहले अस्वीकार किया गया, लेकिन बाद में प्रमाणित किया गया।**
- **निगमन: यह आयत केवल एक दृष्टिकोण से है और सार्वभौमिक रूप से सही नहीं हो सकती।**

निष्कर्ष:
Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत गलत है, क्योंकि यह केवल एक विशिष्ट दृष्टिकोण से बताई गई है और इसे सार्वभौमिक रूप से सही नहीं माना जा सकता।

आयत 40:

आयत का विवरण:
"और उनमें से बाज़ तो ऐसे हैं कि इस कुरान पर आइन्दा ईमान लाएगें और बाज़ ऐसे हैं जो ईमान लाएगें ही नहीं।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 40

आधारित तत्व (Nyaya Element):
Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:
यह आयत भविष्य के बारे में दावा करती है कि कुछ लोग ईमान लाएंगे और कुछ नहीं लाएंगे। "Vyapti" के सिद्धांत के अनुसार, यदि कोई

बात समय के साथ सभी स्थानों और लोगों पर लागू होती है, तो इसे प्रमाणित किया जा सकता है। लेकिन यह दावा भविष्य के बारे में है, जो संयोग और व्यक्तिगत अनुभवों पर निर्भर करता है।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: यह दावा भविष्य के बारे में किया गया है, जो केवल अनुमान और भविष्यवाणी पर आधारित है।**
- **अनुमान: भविष्य के बारे में कोई निश्चित दावा करना असंभव है, क्योंकि यह व्यक्ति की स्वतंत्र इच्छा और अनुभव पर निर्भर करता है।**
- **उदाहरण: समय के साथ लोग विचार बदलते हैं, और इसलिए भविष्य को लेकर कोई निश्चित दावा नहीं किया जा सकता।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रतिज्ञा: यह आयत सार्वभौमिक रूप से सही नहीं हो सकती, क्योंकि यह भविष्य के बारे में अनुमान है।**

- **हेतु: भविष्य के बारे में कोई निश्चित दावा नहीं किया जा सकता, क्योंकि यह व्यक्तिगत निर्णयों और परिस्थितियों पर निर्भर करता है।**
- **उदाहरण: बहुत से लोग जो पहले विश्वास नहीं करते थे, बाद में बदल सकते हैं।**
- **निगमन: यह आयत केवल भविष्यवाणी है और सार्वभौमिक रूप से सत्य नहीं हो सकती।**

निष्कर्ष:
Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत एक भविष्यवाणी है जो सबके लिए सही नहीं हो सकती, क्योंकि भविष्य को लेकर कोई निश्चित दावा नहीं किया जा सकता।

आयत 41:

आयत का विवरण:
"और (ऐ रसूल) तुम्हारा परवरदिगार फसादियों को खूब जानता है और अगर वह तुम्हे झुठलाए तो तुम कह दो कि हमारे लिए हमारी कार गुजारी है और तुम्हारे लिए तुम्हारी कारस्तानी जो कुछ मै करता हूँ उसके तुम ज़िम्मेदार नहीं और जो कुछ तुम करते हो उससे मै बरी हूँ।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 41

आधारित तत्व (Nyaya Element):
Hetu (Reason)

विश्लेषण:
यह आयत कहती है कि यदि लोग रसूल (नबी) को झूठा मानते हैं, तो रसूल को उनसे कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि वे अपने काम के लिए जिम्मेदार नहीं हैं। इसके अंतर्गत यह बात की जा रही है कि जब लोग अपनी ग़लतियों पर अड़े रहते हैं, तो उनका परिणाम उन्हें ही भुगतना होता है, और नबी अपने कार्य में बरी हैं। यह तर्क "Hetu" (Reason) पर आधारित है, जो किसी भी दावे का कारण या तर्क होता है। लेकिन इस दृष्टिकोण में एक समस्या यह है कि यह एकतरफा परिणाम का दावा करता है, बिना यह बताते कि क्यों कुछ लोग अपने ग़लत रास्ते को चुनते हैं और दूसरों को उनके गलत कार्यों से बचने का रास्ता क्यों नहीं मिल पाता।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: इस आयत का संदेश केवल एक तर्क पर आधारित है, लेकिन यह पूरी स्थिति को नहीं समझाता कि क्यों लोग झूठ बोलते हैं या क्यों एक व्यक्ति दूसरे को गलत समझता है।**
- **अनुमान: यदि कोई व्यक्ति अपनी गलती पर अड़ा रहता है, तो उसका परिणाम उसे भुगतना पड़ता है, लेकिन यह जरूरी नहीं कि सभी लोग गलत रास्ते पर जाएं या उनका रास्ता सही नहीं हो सकता।**

- **उदाहरण: किसी समाज में शिक्षा, विवेक और अन्य कारकों के कारण लोग अपनी गलती को सुधार सकते हैं, लेकिन यहां पर केवल निंदा और ग़लतियों को दोषी ठहराया गया है।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रतिज्ञा: यह आयत यह कहती है कि लोग अपनी कारगुज़ारी के लिए जिम्मेदार हैं, लेकिन इसका कोई तर्क नहीं है कि क्यों लोग अपनी गलती पर अड़े रहते हैं।**
- **हेतु: केवल व्यक्तिगत जिम्मेदारी का आरोप लगाने से समस्या का समाधान नहीं होता।**
- **उदाहरण: समाज में शिक्षा और संवाद के माध्यम से लोगों को सही रास्ता दिखाया जा सकता है।**
- **निगमन: यह आयत केवल एक दृष्टिकोण से सत्य हो सकती है, और इसे सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं किया जा सकता।**

निष्कर्ष:
Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत सटीक तर्क के अभाव में केवल एक दिशा-निर्देश देती है और मानवता के सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए इसे सार्वभौमिक रूप से सही नहीं माना जा सकता।

आयत 42:

आयत का विवरण:
"और उनमें से बाज़ ऐसे हैं कि तुम्हारी ज़बानों की तरफ कान लगाए रहते हैं तो (क्या) वह तुम्हारी सुन लेगें हरगिज़ नहीं अगरचे वह कुछ समझ भी न सकते हो।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 42

आधारित तत्व (Nyaya Element):
Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:
यह आयत यह कहती है कि कुछ लोग कान लगाए रहते हैं, लेकिन वे समझने में असमर्थ होते हैं। यह "Prameya" (Object of Knowledge) के सिद्धांत से संबंधित है, जो यह बताता है कि ज्ञान का वास्तविक उद्देश्य केवल जानकारी प्राप्त करना नहीं, बल्कि उसे समझना और उसमें निर्णय लेना है। यहाँ पर, यह माना जा रहा है कि लोग कान लगा सकते हैं लेकिन वे ज्ञान को सही तरीके से ग्रहण करने में असमर्थ होते हैं। यह सत्य हो सकता है, लेकिन यह सार्वभौमिक रूप से सभी मानवों पर लागू नहीं हो सकता क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति का बौद्धिक और मानसिक स्तर अलग होता है।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: यह धारणा केवल यह मानती है कि कुछ लोग सुने हुए शब्दों को समझने में असमर्थ होते हैं, जबकि यह गलत नहीं है कि कुछ लोग उन शब्दों को पूरी तरह से समझ सकते हैं।**
- **अनुमान: यदि किसी के पास पर्याप्त ज्ञान और समझ है, तो वह कुछ भी समझ सकता है।**
- **उदाहरण: बहुत से लोग शिक्षा और अध्ययन से सुधार सकते हैं और वे पहले असमर्थ थे, फिर समझ सकते हैं।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रतिज्ञा: यह आयत कहती है कि कुछ लोग कान लगाते हैं, लेकिन वे नहीं समझ सकते, लेकिन यह धारणा सार्वभौमिक नहीं हो सकती।**
- **हेतु: यह केवल एक सामान्य कथन है, जो सभी लोगों पर लागू नहीं हो सकता।**
- **उदाहरण: लोग शिक्षा प्राप्त करने के बाद कई चीजें समझ सकते हैं।**
- **निगमन: यह आयत एक सामान्यीकरण है, जो सभी मानवों के लिए लागू नहीं हो सकता।**

निष्कर्ष:
Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत सबके लिए सार्वभौमिक रूप से सही नहीं हो सकती क्योंकि यह एक विशेष मानसिक अवस्था पर आधारित है और इसमें हर व्यक्ति की स्थिति को नहीं ध्यान में रखा गया।

आयत 43:

आयत का विवरण:
"तुम कही बहरों को कुछ सुना सकते हो और बाज़ उनमें से ऐसे हैं जो तुम्हारी तरफ (टकटकी बाँधे) देखते हैं तो (क्या वह इमान लाएँगें हरगिज़ नहीं) अगरचे उन्हें कुछ न सूझता हो तो तुम अन्धे को राहे रास्त दिखा दोगे।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 43

आधारित तत्व (Nyaya Element):
Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:
यह आयत यह दावा करती है कि कुछ लोग "बहरे" हैं, जिनसे कुछ सुना नहीं जा सकता और कुछ "अंधे" हैं,

जिन्हें रास्ता नहीं दिखाया जा सकता। "Vyapti" के सिद्धांत के अनुसार, यदि कोई चीज़ किसी विशेष अवस्था में लगातार घटती है, तो यह उसके लिए सार्वभौमिक सत्य नहीं हो सकता। यह आयत "बहरे" और "अंधे" को पूरी तरह से असंवेदनशील और अज्ञानी मानती है, जो कि वास्तविकता से काफी हद तक भिन्न हो सकता है, क्योंकि कुछ लोग अपनी परिस्थिति बदल सकते हैं और समझ सकते हैं।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: यह धारणा केवल यह मानती है कि कुछ लोग कभी नहीं समझ सकते, जबकि यह गलत नहीं है कि लोग समय के साथ सुधार सकते हैं और समझ सकते हैं।**
- **अनुमान: किसी के पास ज्ञान और विचारशीलता को स्वीकार करने की क्षमता होती है, भले ही पहले वह नहीं समझ पाता हो।**
- **उदाहरण: बहुत से लोग जो पहले कुछ नहीं समझ पाते थे, वे शिक्षा और जीवन के अनुभवों से बदल सकते हैं।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रतिज्ञा: यह आयत केवल एक विशिष्ट मानसिक अवस्था को दर्शाती है और यह सार्वभौमिक सत्य नहीं हो सकती।**
- **हेतु: केवल यह मान लेना कि कुछ लोग कभी भी समझ नहीं सकते, एक गलत धारणा हो सकती है।**
- **उदाहरण: एक व्यक्ति जो पहले कुछ नहीं समझ पा रहा था, वह अपनी कोशिशों से सुधार सकता है।**
- **निगमन: यह आयत एक सामान्यीकरण करती है, जो सब पर लागू नहीं हो सकती।**

निष्कर्ष:
Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत केवल एक दृष्टिकोण से सत्य हो सकती है, लेकिन यह सार्वभौमिक रूप से सभी मानवों पर लागू नहीं हो सकती। यह दृष्टिकोण विशेष मानसिक स्थितियों को नजरअंदाज करता है और हर व्यक्ति की स्थिति को समझने में असफल होता है।

आयत 44:

आयत का विवरण:
"ख़ुदा तो हरगिज़ लोगों पर कुछ भी ज़ुल्म नहीं करता मगर लोग खुद अपने ऊपर (अपनी करतूत से) ज़ुल्म किया करते है।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 44

आधारित तत्व (Nyaya Element):
Hetu (Reason)

विश्लेषण:
यह आयत कहती है कि लोग अपने ऊपर खुद जुल्म करते हैं और ख़ुदा इसमें हस्तक्षेप नहीं करता। यह "Hetu" (Reason) के सिद्धांत से संबंधित है, जहां यह दावा किया जा रहा है कि इंसान की अपनी क्रियाएँ और उसके कर्म उसके परिणामों के लिए जिम्मेदार होते हैं। हालांकि, यह सत्य हो सकता है कि व्यक्ति के कर्मों के परिणाम उसके ऊपर आते हैं, लेकिन यह सार्वभौमिक रूप से सभी परिस्थितियों में लागू नहीं हो सकता।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: यह आयत केवल व्यक्तियों के कर्मों पर आधारित है, लेकिन इसमें बाहरी परिस्थितियों और अनिवार्य कारणों को नहीं देखा गया।**
- **अनुमान: कई बार लोग बाहरी परिस्थितियों और अन्य कारणों से प्रभावित होते हैं, जिनका नियंत्रण उनके पास नहीं होता।**
- **उदाहरण: समाज में गरीबी, उत्पीड़न, और अन्य सामाजिक समस्याएं लोगों के जीवन पर प्रभाव डालती हैं, जो उनके कर्मों से अलग होती हैं।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रतिज्ञा: यह आयत कहती है कि लोग खुद पर जुल्म करते हैं, लेकिन यह बाहरी कारकों को नकारती है।**
- **हेतु: यह केवल अंदरूनी कारणों पर आधारित है, जो सभी परिस्थितियों में सही नहीं हो सकते।**
- **उदाहरण: समाज के अन्य पहलुओं और आर्थिक समस्याओं को नकारने से वास्तविकता का पता नहीं चलता।**
- **निगमन: यह आयत केवल एक दृष्टिकोण से सत्य हो सकती है, और यह सार्वभौमिक रूप से सभी को लागू नहीं हो सकती।**

निष्कर्ष:
Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत केवल आंतरिक जिम्मेदारी पर आधारित है, जबकि बाहरी परिस्थितियाँ भी लोगों के कर्मों पर प्रभाव डाल सकती हैं, इसलिए यह सार्वभौमिक रूप से सही नहीं हो सकती।

आयत 45:

आयत का विवरण:
"और जिस दिन ख़ुदा इन लोगों को (अपनी बारगाह में) जमा करेगा तो गोया ये

लोग (समझेगें कि दुनिया में) बस घड़ी दिन भर ठहरे और आपस में एक दूसरे को पहचानेंगे जिन लोगों ने ख़ुदा की बारगाह में हाज़िर होने को झुठलाया वह ज़रुर घाटे में हैं और हिदायत याफता न थे।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 45

आधारित तत्व (Nyaya Element):
Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:
यह आयत भविष्य के परिणामों की भविष्यवाणी करती है, जहां लोग ख़ुदा के पास लौटकर अपने कर्मों का सामना करेंगे। इसमें यह दावा किया गया है कि यह सार्वभौमिक रूप से सत्य होगा। "Vyapti" सिद्धांत के अनुसार, कोई भी दावा तब तक सत्य नहीं माना जा सकता जब तक उसे हर परिस्थिति में लागू नहीं किया जा सकता। यहाँ पर, यह दावा केवल एक भविष्यवाणी है जो सभी के लिए सही नहीं हो सकती।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: यह आयत भविष्य के बारे में दावा करती है, लेकिन भविष्य को लेकर कोई निश्चितता नहीं हो सकती।**
- **अनुमान: भविष्य की स्थिति केवल अनुमान पर आधारित है, और किसी भी प्रकार के अडिग प्रमाण के बिना इसका सामान्यीकरण नहीं किया जा सकता।**
- **उदाहरण: समय के साथ जीवन के अनुभव बदल सकते हैं और कुछ लोग अपनी सोच बदल सकते हैं।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रतिज्ञा: यह आयत भविष्य के बारे में दावा करती है, लेकिन यह सबके लिए सत्य नहीं हो सकता।**
- **हेतु: भविष्य के घटनाक्रम पर कोई निश्चित दावा नहीं किया जा सकता।**
- **उदाहरण: लोग अपने कर्मों को बदल सकते हैं, और यह उनके भविष्य के परिणामों को प्रभावित कर सकता है।**
- **निगमन: यह आयत केवल भविष्यवाणी पर आधारित है और सार्वभौमिक रूप से सत्य नहीं हो सकती।**

निष्कर्ष:
Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत केवल भविष्य के बारे में एक अनुमान है, जो सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं हो सकता और इसे हर परिस्थिति में सत्य नहीं माना जा सकता।

आयत 46:

आयत का विवरण:
"ऐ रसूल हम जिस जिस (अज़ाब) का उनसे वायदा कर चुके हैं उनमें से बाज़ ख़्वाहा तुम्हें दिखा दें या तुमको (पहले ही दुनिया से) उठा ले फिर (आख़िर) तो उन सबको हमारी तरफ लौटना ही है फिर जो कुछ ये लोग कर रहे हैं ख़ुदा तो उस पर गवाह ही है।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 46

आधारित तत्व (Nyaya Element):
Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:
यह आयत दावा करती है कि यदि नबी को अज़ाब का संकेत नहीं भी मिलता, तो अंत में सभी लोग ख़ुदा के पास लौटेंगे और उनके कर्मों का हिसाब होगा। यह "Vyapti" (Invariable Concomitance) तत्व से संबंधित है, जो कहता है कि कोई घटना यदि एक निश्चित स्थिति में बार-बार घटित होती है, तो इसे सार्वभौमिक रूप से सत्य माना जा सकता है। यहाँ पर यह दावा किया गया है कि एक निश्चित समय पर सभी लोगों को उनके कर्मों का हिसाब दिया जाएगा। हालांकि, यह दावा सार्वभौमिक रूप से सही नहीं हो सकता, क्योंकि यह भविष्य में होने वाली घटनाओं को लेकर पूरी तरह से अनिश्चितता की स्थिति में है।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: यह आयत भविष्य की घटनाओं को लेकर दावे करती है, लेकिन भविष्य के घटनाक्रमों को प्रमाणित करना असंभव है।**
- **अनुमान: यह दावा कि हर व्यक्ति को उसके कर्मों का हिसाब देना होगा, हालांकि एक सामान्य धारणा हो सकती है, लेकिन यह सार्वभौमिक रूप से सत्य नहीं हो सकता।**
- **उदाहरण: अगर किसी व्यक्ति के कर्म पूरी तरह से ज्ञात नहीं होते हैं या उसके कर्मों का निर्धारण भिन्न परिस्थितियों में किया जा सकता है, तो यह दावा सभी के लिए लागू नहीं हो सकता।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रतिज्ञा:** यह आयत दावा करती है कि सबको एक समय पर उनके कर्मों का हिसाब दिया जाएगा, लेकिन यह दावा पूरी तरह से सत्य नहीं हो सकता।
- **हेतु:** क्योंकि भविष्य की घटनाओं को पूरी तरह से जाना या प्रमाणित करना असंभव है।
- **उदाहरण:** कुछ लोगों के कर्मों का मूल्यांकन और परिणाम अलग-अलग परिस्थितियों में बदल सकता है।
- **निगमन:** यह आयत केवल एक संभावित भविष्यवाणी है और यह सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं हो सकती।

निष्कर्ष:
Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत भविष्य के घटनाक्रमों के बारे में अनुमानित विचार है और इसे सार्वभौमिक रूप से सही नहीं माना जा सकता। भविष्यवाणी के आधार पर कोई भी दावा पूरी तरह से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

आयत 47:

आयत का विवरण:
"और हर उम्मत का ख़ास (एक) एक रसूल हुआ है फिर जब उनका रसूल (हमारी बारगाह में) आएगा तो उनके दरम्यिान इन्साफ़ के साथ फैसला कर दिया जाएगा और उन पर ज़र्रा बराबर ज़ुल्म न किया जाएगा।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 47

आधारित तत्व (Nyaya Element):
Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:
यह आयत कहती है कि प्रत्येक उम्मत (समाज) के पास एक विशेष रसूल (प्रेषित) होता है, जो न्यायपूर्वक निर्णय करेगा। यह "Vyapti" तत्व से संबंधित है, जो एक सार्वभौमिक सत्य के रूप में यह दावा करता है कि प्रत्येक समाज को उनका रसूल मिलेगा, और उनके बीच न्यायपूर्ण निर्णय होगा। हालांकि, यह सिद्धांत प्रत्येक समुदाय के लिए पूरी तरह से लागू नहीं हो सकता क्योंकि विभिन्न सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और भौगोलिक भिन्नताएँ न्याय और सच्चाई की अवधारणाओं को प्रभावित कर सकती हैं।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- प्रत्यक्षा: यह आयत एक सामान्य बयान करती है कि हर समुदाय के पास एक रसूल होगा, लेकिन यह हर समाज के लिए सत्य नहीं हो सकता।
- अनुमान: यह विश्वास किया गया है कि हर समाज के पास एक रसूल होगा, लेकिन मानवता के विविध रूपों में यह सत्य नहीं हो सकता।
- उदाहरण: कुछ समाजों में धार्मिक शिक्षक या मार्गदर्शक होते हैं, लेकिन वे हमेशा रसूल नहीं होते, और सभी समाजों में एक ही प्रकार का धर्म या मार्गदर्शन नहीं होता।

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- प्रतिज्ञा: यह आयत कहती है कि हर उम्मत का विशेष रसूल होता है, लेकिन यह सब समाजों के लिए सही नहीं हो सकता।
- हेतु: समाजों की भिन्नता और विविधता की वजह से यह दावा हर जगह सत्य नहीं हो सकता।
- उदाहरण: सभी समाजों में एक ही प्रकार का मार्गदर्शन या रसूल नहीं होता।
- निगमन: यह आयत सभी समाजों पर सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं हो सकती, और इसका दायरा सीमित है।

निष्कर्ष:
Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत सब समाजों के लिए सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं हो सकती क्योंकि समाजों में भिन्नताएँ होती हैं, और सभी समाजों में एक ही प्रकार का रसूल या मार्गदर्शक नहीं होता।

आयत 48:

आयत का विवरण:
"ये लोग कहा करते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो (आख़िर) ये (अज़ाब का वायदा) कब पूरा होगा।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 48

आधारित तत्व (Nyaya Element):
Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:
यह आयत कहती है कि अगर लोग नबी के दावों को नहीं मानते, तो वे अज़ाब (सजा) के समय को जानना चाहते हैं। यह "Prameya" (Object of Knowledge) तत्व से संबंधित है, क्योंकि यहाँ पर अज़ाब के समय की

बात की जा रही है। लेकिन इस समय को जानने की कोई वास्तविक या प्रमाणिक विधि नहीं है, और यह केवल एक अनुमान है। नतीजतन, इसका कोई स्थिर और सार्वभौमिक ज्ञान नहीं हो सकता।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा:** यह आयत यह दावा करती है कि अज़ाब का समय ज्ञात किया जा सकता है, लेकिन इसे प्रमाणित करना असंभव है।
- **अनुमान:** भविष्य में होने वाली घटनाओं को जानना और पूर्वानुमान करना अत्यधिक कठिन है और हर किसी के लिए सही नहीं हो सकता।
- **उदाहरण:** कोई भी भविष्यवाणी निश्चित रूप से सत्य नहीं हो सकती, और समय का निर्धारण भी पूरी तरह से ज्ञात नहीं किया जा सकता।

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रतिज्ञा:** यह आयत कहती है कि अज़ाब का समय जानना संभव है, लेकिन यह सच नहीं हो सकता।
- **हेतु:** भविष्यवाणी और समय निर्धारण केवल अनुमान पर आधारित होते हैं, और यह हमेशा सही नहीं हो सकता।
- **उदाहरण:** समय का निर्धारण अनिश्चित होता है और इसे सत्यापित नहीं किया जा सकता।
- **निगमन:** यह आयत केवल अनुमान पर आधारित है, और इसे सार्वभौमिक रूप से सत्य नहीं माना जा सकता।

निष्कर्ष:
Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत अज़ाब के समय की भविष्यवाणी को लेकर अनिश्चितता का सामना करती है, और इसे सार्वभौमिक रूप से सत्य नहीं माना जा सकता।

आयत 49:

आयत का विवरण:
" (ऐ रसूल) तुम कह दो कि मै खुद अपने वास्ते नुकसान पर क़ादिर हूँ न नफा पर मगर जो ख़ुदा चाहे हर उम्मत (के रहने) का (उसके इल्म में) एक वक़्त मुक़र्रर है-जब उन का वक़्त आ जाता है तो न एक घड़ी पीछे हट सकती हैं और न आगे बढ़ सकते हैं।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 49

आधारित तत्व (Nyaya Element):
Hetu (Reason)

विश्लेषण:
यह आयत कहती है कि कोई भी अपने लिए नफा या नुकसान नहीं कर सकता, केवल ख़ुदा के पास यह शक्ति है। यह "Hetu" (Reason) तत्व से संबंधित है, जो कहता है कि हर घटना का कारण है, और यहाँ पर यह दावा किया जा रहा है कि हर घटना और समय का निर्धारण केवल ख़ुदा के हाथ में है। हालांकि, यह तर्क मानवता के दृष्टिकोण से व्यापक नहीं है क्योंकि यह केवल एक सर्वोच्च शक्ति के नियंत्रण को मानता है, और मनुष्यों की स्वतंत्र इच्छा और कर्मों को नकारता है।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: यह धारणा केवल एक सर्वोच्च शक्ति के नियंत्रण को स्वीकार करती है, लेकिन मानवता के स्वतंत्र निर्णयों और कर्मों को नहीं समझती।**
- **अनुमान: यह दावा एकतरफा है और यह नहीं मानता कि लोग अपने निर्णयों से अपने जीवन को प्रभावित कर सकते हैं।**
- **उदाहरण: यदि किसी व्यक्ति की मेहनत और निर्णयों से बदलाव आ सकता है, तो यह तर्क उसे नजरअंदाज करता है।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रतिज्ञा: यह आयत कहती है कि नफा और नुकसान केवल ख़ुदा के हाथ में है, लेकिन यह सही नहीं हो सकता।**
- **हेतु: इस तर्क में केवल सर्वोच्च शक्ति का योगदान है, लेकिन मानव स्वतंत्रता और कर्मों को नकारा गया है।**
- **उदाहरण: व्यक्ति अपने कर्मों से अपने जीवन को प्रभावित कर सकता है।**
- **निगमन: यह आयत केवल एक विशेष दृष्टिकोण से सत्य हो सकती है, और यह सार्वभौमिक रूप से सभी पर लागू नहीं हो सकती।**

निष्कर्ष:
Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत मानव स्वतंत्रता और निर्णयों को नकारती है, और इसे सार्वभौमिक रूप से सत्य नहीं माना जा सकता।

आयत 51:

आयत का विवरण:
"फिर क्या जब (तुम पर) आ चुकेगा तब उस पर इमान लाओगे (आहा) क्या अब (इमान लाए) हालाकि तुम तो इसकी जल्दी मचाया करते थे।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 51

आधारित तत्व (Nyaya Element):
Hetu (Reason)

विश्लेषण:
यह आयत कहती है कि जब अज़ाब का वक्त आएगा, तो लोग इमान लाएंगे, जबकि पहले वे इसका मजाक उड़ाते थे। यह "Hetu" (Reason) तत्व से संबंधित है, जो किसी घटना के कारण को समझने की कोशिश करता है। यहाँ यह तर्क किया जा रहा है कि लोग अपनी नासमझी के कारण अज़ाब आने तक इमान नहीं लाएंगे। लेकिन यह तर्क सार्वभौमिक रूप से सही नहीं हो सकता, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति के विश्वास और इमान के कारण अलग होते हैं। किसी व्यक्ति का इमान तब तक स्थिर नहीं हो सकता जब तक वह अपने अनुभवों और ज्ञान के आधार पर उस पर विश्वास न करे।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: यह आयत एक सामान्य बयान करती है, जिसमें यह दावा किया जाता है कि लोग केवल अज़ाब आने के बाद इमान लाएंगे, लेकिन यह एक अनुमान है।**
- **अनुमान: यह विचार कि लोग केवल दंड के डर से इमान लाएंगे, सार्वभौमिक रूप से सत्य नहीं हो सकता। व्यक्तिगत विश्वासों के विकास में बहुत अधिक जटिलताएँ होती हैं।**
- **उदाहरण: कुछ लोग जीवन के दौरान आत्मानुभव और ज्ञान से इमान लाते हैं, न कि किसी भय के कारण।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रतिज्ञा: यह आयत कहती है कि लोग अज़ाब आने पर ही इमान लाएंगे, जो एक अनुमान पर आधारित है।**
- **हेतु: क्योंकि इमान व्यक्तिगत अनुभवों और विश्वासों पर आधारित होता है, और यह सिर्फ दंड के डर से उत्पन्न नहीं हो सकता।**
- **उदाहरण: कई लोग अपने जीवन में सत्यमार्ग पर चलते हैं, बिना किसी बाहरी भय के।**
- **निगमन: यह आयत केवल एक अनुमान है और यह सार्वभौमिक रूप से सही नहीं हो सकती।**

निष्कर्ष:
Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत केवल एक अनुमान पर आधारित है और यह सभी के लिए सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं हो सकती।

आयत 52:

आयत का विवरण:
"फिर (क़यामत के दिन) ज़ालिम लोगों से कहा जाएगा कि (अब हमेशा के अज़ाब के मज़े चखो (दुनिया में) जैसी तुम्हारी करतूतें तुम्हें (आख़िरत में) वैसा ही बदला दिया जाएगा।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 52

आधारित तत्व (Nyaya Element):
Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:
यह आयत दावा करती है कि ज़ालिमों को उनके किए गए कर्मों के अनुसार हमेशा के लिए अज़ाब मिलेगा। यह "Vyapti" तत्व से संबंधित है, जो कहता है कि एक निश्चित घटना हमेशा एक ही परिणाम देती है। हालांकि, यह विचार सभी परिस्थितियों में लागू नहीं हो सकता, क्योंकि कर्मों का परिणाम हमेशा एक जैसा नहीं हो सकता। विभिन्न कारणों और परिस्थितियों के आधार पर न्याय की व्याख्या भिन्न हो सकती है।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: यह आयत यह दावा करती है कि ज़ालिमों को हमेशा के लिए एक जैसा अज़ाब मिलेगा, लेकिन कर्मों के परिणाम में भिन्नताएँ हो सकती हैं।**
- **अनुमान: कर्मों का परिणाम हर व्यक्ति के लिए समान नहीं हो सकता। परिस्थितियाँ और कारण बदल सकते हैं।**
- **उदाहरण: कुछ ज़ालिम व्यक्तियों का दोष उनके परिवेश और अनुभवों से प्रभावित हो सकता है, जबकि अन्य का नहीं।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रतिज्ञा: यह आयत कहती है कि सभी ज़ालिमों को एक समान सजा मिलेगी, लेकिन यह सही नहीं हो सकता।**

- **हेतु: कारण और परिस्थितियाँ भिन्न होती हैं, और परिणाम उसी अनुसार भिन्न हो सकते हैं।**
- **उदाहरण: एक ही कर्म अलग-अलग परिस्थितियों में अलग-अलग परिणाम दे सकते हैं।**
- **निगमन: यह आयत सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं हो सकती, क्योंकि कर्मों का परिणाम हमेशा समान नहीं होता।**

निष्कर्ष:
Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत कर्मों के परिणाम के बारे में अनुमानित विचार प्रस्तुत करती है, लेकिन यह सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं हो सकती, क्योंकि परिणाम हमेशा एक जैसा नहीं होता।

आयत 53:

आयत का विवरण:
"(ऐ रसूल) तुम से लोग पूछतें हैं कि क्या (जो कुछ तुम कहते हो) वह सब ठीक है तुम कह दो (हाँ) अपने परवरदिगार की कसम ठीक है और तुम (ख़ुदा को) हरा नहीं सकते।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 53

आधारित तत्व (Nyaya Element):
Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:
यह आयत दावा करती है कि किसी भी व्यक्ति के लिए ख़ुदा को हराना असंभव है। यह "Prameya" (Object of Knowledge) तत्व से संबंधित है, जिसमें किसी तथ्य या सिद्धांत को प्रमाणित किया जाता है। यहाँ यह दावा किया जा रहा है कि ख़ुदा को हराना असंभव है, लेकिन यह सिद्धांत सार्वभौमिक रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता। विज्ञान और तर्क के दृष्टिकोण से, एक अंतर्निहित सिद्धांत को हर किसी के लिए प्रमाणित नहीं किया जा सकता क्योंकि यह केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: यह आयत दावा करती है कि ख़ुदा को हराना असंभव है, लेकिन यह केवल विश्वास पर आधारित है।**
- **अनुमान: धार्मिक विश्वासों के संदर्भ में यह विचार किया जा सकता है, लेकिन इसे तर्क और विज्ञान से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**

- **उदाहरण: किसी भी व्यक्ति या सिद्धांत को हराने की अवधारणा पूरी तरह से सांस्कृतिक और व्यक्तिगत विश्वास पर निर्भर करती है।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रतिज्ञा: यह आयत दावा करती है कि ख़ुदा को हराना असंभव है, लेकिन यह तर्कपूर्ण रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**
- **हेतु: यह तर्क धार्मिक विश्वासों पर आधारित है, और इसे तर्क या विज्ञान से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**
- **उदाहरण: धार्मिक विश्वासों के आधार पर कोई सिद्धांत सार्वभौमिक रूप से सत्य नहीं हो सकता।**
- **निगमन: यह आयत केवल धार्मिक दृष्टिकोण से सत्य हो सकती है, और इसे सार्वभौमिक रूप से सत्य नहीं माना जा सकता।**

निष्कर्ष:
Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित है और इसे सार्वभौमिक रूप से सत्य नहीं माना जा सकता। यह विश्वास एक सीमित दायरे में सत्य हो सकता है, लेकिन हर किसी के लिए प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

आयत 54:

आयत का विवरण:
"और (दुनिया में) जिस जिसने (हमारी नाफरमानी कर के) ज़ुल्म किया है (क़यामत के दिन) अगर तमाम ख़ज़ाने जो जमीन में हैं उसे मिल जाएँ तो अपने गुनाह के बदले ज़रुर फिदया दे निकले और जब वह लोग अज़ाब को देखेगें तो इज़हारे निदामत करेगें (शर्मिंदा होंगें) और उनमें बाहम इन्साफ़ के साथ हुक्म दिया जाएगा और उन पर ज़र्रा (बराबर ज़ुल्म न किया जाएगा।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 54

आधारित तत्व (Nyaya Element):
Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:
यह आयत कहती है कि अगर कोई व्यक्ति अपने गुनाह के बदले पूरी ज़मीन का खज़ाना भी दे, तो भी वह अपने अपराध का पूरी तरह से प्रायश्चित नहीं कर पाएगा। यह "Vyapti" तत्व से संबंधित है, क्योंकि यह दावा

किया जा रहा है कि गुनाह का प्रायश्चित कभी पूरा नहीं हो सकता। हालांकि, यह दृष्टिकोण सभी परिस्थितियों में लागू नहीं हो सकता। लोगों के कर्म और उनके परिणामों के लिए परिस्थितियाँ भिन्न हो सकती हैं, और एक ही कर्म को सभी स्थानों पर समान रूप से आंका नहीं जा सकता।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: यह दावा करता है कि कोई भी अपराधपूर्ण व्यक्ति पूरे खज़ाने के बदले भी अपने गुनाह का प्रायश्चित नहीं कर सकता, लेकिन यह एक सामान्यीकृत बयान है।**
- **अनुमान: विभिन्न परिस्थितियों में गुनाहों की गंभीरता और प्रायश्चित के उपाय भिन्न हो सकते हैं।**
- **उदाहरण: कुछ लोग अपने कर्मों का प्रायश्चित करने के लिए विविध साधन और प्रयासों से अपनी स्थिति सुधार सकते हैं।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रतिज्ञा: यह आयत कहती है कि कोई भी प्रायश्चित नहीं कर सकता, लेकिन यह सार्वभौमिक रूप से सत्य नहीं हो सकता**

।

- **हेतु: गुनाहों का परिणाम और प्रायश्चित हर व्यक्ति और परिस्थिति के आधार पर भिन्न हो सकता है।**
- **उदाहरण: व्यक्ति अपने प्रयासों से सुधार सकता है, जो उसकी स्थिति और कर्मों पर निर्भर करेगा।**
- **निगमन: यह आयत सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं हो सकती, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रायश्चित का तरीका अलग हो सकता है।**

निष्कर्ष:
Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत एक सामान्यीकृत बयान है, और यह सार्वभौमिक रूप से सही नहीं हो सकती, क्योंकि प्रायश्चित के उपाय और परिणाम हर व्यक्ति के लिए भिन्न हो सकते हैं।

आयत 55:

आयत का विवरण:
"आगाह रहो कि जो कुछ आसमानों में और ज़मीन में है (ग़रज़ सब कुछ) ख़ुदा ही का है आग़ाह राहे कि ख़ुदा का वायदा यक़ीनी ठीक है मगर उनमें के अक्सर नहीं जानते हैं।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 55

आधारित तत्व (Nyaya Element):
Pramana (Means of Knowledge)

विश्लेषण:
यह आयत दावा करती है कि सारा ब्रह्मांड केवल ख़ुदा का है और उसका वादा सत्य है। यह "Pramana" (Means of Knowledge) तत्व से संबंधित है, जो ज्ञान प्राप्ति के साधनों से जुड़ा है। यहाँ यह बताया गया है कि केवल ख़ुदा का वादा सत्य है, लेकिन यह विचार सार्वभौमिक रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता क्योंकि यह एक धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जो हर व्यक्ति के दृष्टिकोण और विश्वास पर निर्भर करता है।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: यह आयत दावा करती है कि ख़ुदा का वादा सत्य है, लेकिन इसे तर्क और प्रमाण से साबित नहीं किया जा सकता।**
- **अनुमान: धार्मिक विश्वासों का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं होता, और यह केवल विश्वास की बात होती है।**
- **उदाहरण: एक व्यक्ति का धार्मिक विश्वास दूसरे व्यक्ति से अलग हो सकता है, और यह सार्वभौमिक रूप से सत्य नहीं हो सकता।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रतिज्ञा: यह आयत कहती है कि ख़ुदा का वादा सत्य है, लेकिन यह धार्मिक विश्वास पर आधारित है।**
- **हेतु: यह कोई प्रमाणिक या तर्कसंगत ज्ञान नहीं है, केवल विश्वास पर आधारित है।**
- **उदाहरण: वैज्ञानिक और तर्कसंगत दृष्टिकोण से इसे प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**
- **निगमन: यह आयत केवल धार्मिक दृष्टिकोण से सत्य हो सकती है, और इसे सार्वभौमिक रूप से सत्य नहीं माना जा सकता।**

निष्कर्ष:
Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसे सार्वभौमिक रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

आयत 56

आयत का विवरण:
"वही ज़िन्दा करता है और वही मारता है और तुम सब के सब उसी की तरफ लौटाए जाओगें।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 56

आधारित तत्व (Nyaya Element):
Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:
यह आयत ख़ुदा के जीवन और मृत्यु पर पूर्ण अधिकार को दर्शाती है। इस आयत में इस बात का दावा किया जा रहा है कि केवल ख़ुदा के पास ही जीवन और मृत्यु की शक्ति है और सभी को उसी की तरफ लौटना होगा। हालांकि, यह तर्क धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसे किसी तार्किक, वैज्ञानिक या प्रमाणिक दृष्टिकोण से नहीं सिद्ध किया जा सकता।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: इस आयत में दावा किया जा रहा है कि जीवन और मृत्यु का नियंत्रण केवल ख़ुदा के पास है, लेकिन यह कोई वैज्ञानिक तथ्य नहीं है, बल्कि धार्मिक विश्वास है। विज्ञान में जीवन और मृत्यु के कारणों पर विभिन्न परिभाषाएँ दी गई हैं जैसे जैविक प्रक्रिया, अनुवांशिकी, और पर्यावरणीय प्रभाव, जो इस आयत के कथन के विपरीत हैं।**
- **अनुमान: जीवन और मृत्यु के बारे में किसी निश्चित धार्मिक दृष्टिकोण को सार्वभौमिक सत्य के रूप में स्थापित करना तर्कसंगत नहीं है। हर व्यक्ति के धार्मिक विश्वास अलग होते हैं, और वैज्ञानिक दृष्टिकोण में इन घटनाओं को समझने के लिए प्रमाणित कारण होते हैं।**
- **उदाहरण: यदि हम जैविक दृष्टिकोण से देखें तो जीवों के मरने के कारण अनुवांशिक दोष, बीमारी, दुर्घटनाएँ या पर्यावरणीय कारक हो सकते हैं। इन कारणों से जीवन और मृत्यु की प्रक्रिया को विज्ञान समझाता है, जो इस आयत के कथन से भिन्न है।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रतिज्ञा: यह आयत कहती है कि जीवन और मृत्यु का नियंत्रण ख़ुदा के पास है, जो एक विशेष धार्मिक विश्वास पर आधारित है।**
- **हेतु: यह तर्क पूरी तरह से धार्मिक विश्वास और अवैज्ञानिक है, क्योंकि इसे किसी प्रमाणिक स्रोत से सिद्ध नहीं किया जा सकता।**
- **उदाहरण: विभिन्न वैज्ञानिक परिभाषाएँ जीवन और मृत्यु के कारणों के रूप में प्रदर्शित होती हैं, जो पूरी तरह से प्रमाणिक और साक्ष्य आधारित हैं।**
- **निगमन: यह आयत केवल धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, और इसे किसी सार्वभौमिक सत्य के रूप में प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**

निष्कर्ष:
Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित है, और इसे किसी वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार से प्रमाणित नहीं किया जा सकता। जीवन और मृत्यु के बारे में धार्मिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण में अंतर है, और इसे सार्वभौमिक रूप से सही नहीं माना जा सकता।

आयत 57

आयत का विवरण:
"लोगों तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से नसीहत (किताबे ख़ुदा आ चुकी और जो (मरज़ शिर्क वग़ैरह) दिल में हैं उनकी दवा और ईमान वालों के लिए हिदायत और रहमत।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 57

आधारित तत्व (Nyaya Element):
Pramana (Means of Knowledge)

विश्लेषण:
यह आयत कुरान को ज्ञान, शिफा (दवा) और हिदायत के रूप में प्रस्तुत करती है। यह विचार किसी धार्मिक ग्रंथ को ज्ञान का सर्वोत्तम स्रोत मानने का है। हालांकि, इसे सार्वभौमिक रूप से सत्य नहीं माना जा सकता, क्योंकि ज्ञान के कई अन्य स्रोत हैं और धार्मिक विश्वासों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा:** यह आयत कुरान को ज्ञान का सर्वोत्तम स्रोत मानने की कोशिश करती है, लेकिन यह हर व्यक्ति के लिए सत्य नहीं हो सकता। विभिन्न धर्मों और दर्शन से उत्पन्न ज्ञान के स्रोत होते हैं जो उनके अनुयायियों द्वारा समान रूप से महत्वपूर्ण माने जाते हैं।
- **अनुमान:** सभी धर्मों और संस्कृतियों में अपने-अपने धार्मिक ग्रंथ होते हैं, जिनसे वे हिदायत और शिफा प्राप्त करते हैं। इस प्रकार, यह आयत केवल एक धर्म के अनुयायियों के लिए सत्य हो सकती है, जबकि अन्य धार्मिक ग्रंथों के अनुयायी इसे सही नहीं मान सकते।
- **उदाहरण:** बौद्ध धर्म, जैन धर्म, हिंदू धर्म, या अन्य धर्मों में अलग-अलग धार्मिक ग्रंथ हैं, जिनसे उनके अनुयायी ज्ञान प्राप्त करते हैं। एक व्यक्ति के लिए कुरान हिदायत का स्रोत हो सकता है, लेकिन दूसरे के लिए गीता, त्रिपिटक, या बाइबिल भी समान रूप से महत्वपूर्ण हो सकता है।

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रतिज्ञा: यह आयत कहती है कि कुरान ज्ञान, शिफा और हिदायत का स्रोत है।**
- **हेतु: यह तर्क केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण से आधारित है, और इसे अन्य दृष्टिकोणों से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**
- **उदाहरण: दूसरे धार्मिक ग्रंथों के अनुयायी अपने-अपने ग्रंथों को ज्ञान का स्रोत मानते हैं।**
- **निगमन: यह आयत एक विशेष धार्मिक विश्वास पर आधारित है, और इसे सार्वभौमिक रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**

निष्कर्ष:
Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसे सार्वभौमिक रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता। ज्ञान और शिफा के स्रोत विभिन्न हो सकते हैं, और इसे एक निश्चित ग्रंथ तक सीमित करना तर्कसंगत नहीं है।

आयत 58

आयत का विवरण:
"(ऐ रसूल) तुम कह दो कि (ये कुरान) ख़ुदा के फज़ल व करम और उसकी रहमत से तुमको मिला है (ही) तो उन लोगों को इस पर खुश होना चाहिए।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 58

आधारित तत्व (Nyaya Element):
Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:
यह आयत कुरान को ख़ुदा के करम और फज़ल से प्राप्त मानती है और इसे लोगों के लिए खुश होने का कारण बताती है। यह एक धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है और इसे किसी अन्य तर्क या प्रमाण से सिद्ध नहीं किया जा सकता।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: यह आयत धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, जो केवल कुरान के अनुयायियों के लिए सत्य हो सकता है। अन्य धर्मों और विश्वासों के अनुयायी इसे स्वीकार नहीं करेंगे।**

- **अनुमान: ख़ुदा के करम और फज़्ल को केवल एक विशेष धार्मिक परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है। दूसरे लोग इसे उसी रूप में नहीं मान सकते।**
- **उदाहरण: कुछ लोग अपनी आध्यात्मिक यात्रा के लिए गीता, बाइबिल या अन्य ग्रंथों का अनुसरण करते हैं, जो उन्हें भी ज्ञान और हिदायत का स्रोत मानते हैं।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रतिज्ञा: यह आयत कहती है कि कुरान ख़ुदा के करम और फज़्ल से प्राप्त हुआ है।**
- **हेतु: यह दृष्टिकोण केवल एक विशेष धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है और इसे सार्वभौमिक रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**
- **उदाहरण: विभिन्न धार्मिक ग्रंथों को अन्य अनुयायी भी अपने जीवन के मार्गदर्शक मानते हैं।**
- **निगमन: यह आयत एक विशेष विश्वास पर आधारित है और इसे सभी के लिए सार्वभौमिक रूप से स्वीकार नहीं किया जा सकता।**

निष्कर्ष:

Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसे किसी सार्वभौमिक सत्य के रूप में प्रमाणित नहीं किया जा सकता। कुरान को ख़ुदा के करम और फज़्ल से प्राप्त मानना केवल एक विशेष धार्मिक परिप्रेक्ष्य है, और इसे सभी लोगों के लिए सत्य नहीं कहा जा सकता।

आयत 59

आयत का विवरण:

"और जो कुछ वह जमा कर रहे हैं उससे कहीं बेहतर है (ऐ रसूल) तुम कह दो कि तुम्हारा क्या ख़्याल है कि ख़ुदा ने तुम पर रोज़ी नाज़िल की तो अब उसमें से बाज़ को हराम बाज़ को हलाल बनाने लगे (ऐ रसूल) तुम कह दो कि क्या ख़ुदा ने तुम्हें इजाज़त दी है या तुम ख़ुदा पर बोहतान बाँधते हो।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 59

आधारित तत्व (Nyaya Element):
Hetu (Reason)

विश्लेषण:

यह आयत यह प्रश्न उठाती है कि क्या ख़ुदा ने लोगों को हलाल और हराम का निर्धारण करने की इजाज़त दी है, या लोग ख़ुदा पर झूठे आरोप लगा रहे हैं। यह "Hetu" (Reason) तत्व से संबंधित है क्योंकि यहाँ कारण

पूछा जा रहा है कि लोग इस निर्णय को किस आधार पर लेते हैं। हालांकि, यह विचार अधिकतर धार्मिक विश्वास पर आधारित है और अन्य लोगों के तर्क और दृष्टिकोण से इसे प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: इस आयत में यह सवाल उठाया गया है कि लोग हलाल और हराम का निर्धारण किस आधार पर करते हैं, लेकिन इसे केवल धार्मिक**

दृष्टिकोण से देखा जा सकता है।

- **अनुमान: लोग अपने समाज, संस्कृति, और धार्मिक विश्वासों के आधार पर इस प्रकार के निर्णय लेते हैं। यह कहना कि केवल ख़ुदा ही इस निर्णय का आधार हो सकता है, यह तर्कसंगत नहीं है।**
- **उदाहरण: विभिन्न संस्कृतियों में हलाल और हराम के बारे में अलग-अलग मान्यताएँ होती हैं, जो केवल धार्मिक विश्वास से संबंधित होती हैं और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं की जा सकतीं।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रतिज्ञा: यह आयत कहती है कि लोग हलाल और हराम का निर्धारण ख़ुदा की अनुमति से करते हैं।**
- **हेतु: यह केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित है, और इसे सभी के लिए सार्वभौमिक रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**
- **उदाहरण: विभिन्न संस्कृतियों में इस विषय पर भिन्न दृष्टिकोण होते हैं, जो वैज्ञानिक या तर्कसंगत रूप से सिद्ध नहीं किए जा सकते।**
- **निगमन: यह आयत केवल एक विशेष धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है और इसे सार्वभौमिक रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**

निष्कर्ष:
Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत केवल धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, और इसे सार्वभौमिक रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

आयत 60

आयत का विवरण:
"और जो लोग ख़ुदा पर झूठ मूठ बोहतान बाधा करते हैं रोज़े क़यामत का क्या ख़्याल करते हैं उसमें शक नहीं कि ख़ुदा तो लोगों पर बड़ा फज़्ल व (करम) है मगर उनमें से बहुतेरे शुक्र गुज़ार नहीं हैं।"

संदर्भ: सूरए युनूस, आयत 60

आधारित तत्व (Nyaya Element):
Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:
यह आयत कहती है कि जो लोग ख़ुदा पर झूठे आरोप लगाते हैं, वे क़यामत के दिन शर्मिंदा होंगे, और ख़ुदा का फज़्ल उन पर बहुत बड़ा है, लेकिन बहुत से लोग इसका आभार नहीं मानते। यह "Vyapti" (Invariable Concomitance) तत्व से संबंधित है क्योंकि यह सामान्यीकरण करता है कि सभी झूठे आरोप लगाने वाले क़यामत के दिन पछताएंगे। यह सामान्यीकरण सही नहीं हो सकता, क्योंकि किसी भी व्यक्ति का अनुभव और परिणाम भिन्न हो सकते हैं।

प्रमाण और तर्क (Criticism with Nyaya Logic):

- **प्रत्यक्षा: यह आयत एक सामान्यीकरण करती है कि जो लोग ख़ुदा पर झूठे आरोप लगाते हैं वे क़यामत के दिन पछताएंगे, जो कि कोई प्रमाणिक सत्य नहीं है।**
- **अनुमान: प्रत्येक व्यक्ति का अनुभव और परिणाम उसके व्यक्तिगत कर्म, विचारों और परिस्थितियों के आधार पर भिन्न हो सकता है।**
- **उदाहरण: कुछ लोग अपने जीवन में अपने गलत कार्यों का एहसास करते हैं, जबकि कुछ लोग हमेशा अपने विश्वासों में अडिग रहते हैं और अपनी गलतियों को स्वीकार नहीं करते।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रतिज्ञा: यह आयत कहती है कि जो लोग झूठे आरोप लगाते हैं, वे क़यामत के दिन पछताएंगे।**
- **हेतु: यह सामान्यीकरण है, और यह सही नहीं हो सकता क्योंकि हर व्यक्ति का परिणाम अलग हो सकता है।**
- **उदाहरण: जीवन में कई लोग अपनी गलतियों को स्वीकार करते हैं, जबकि कई लोग इससे इंकार करते हैं।**
- **निगमन: यह आयत केवल अनुमान और सामान्यीकरण पर आधारित है, और इसे सार्वभौमिक रूप से सही नहीं माना जा सकता।**

निष्कर्ष:
Nyaya दर्शन के अनुसार, यह आयत केवल अनुमान और सामान्यीकरण पर आधारित है, और इसे सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं किया जा सकता।

आयत 61

आयत का विवरण:
"और ऐ रसूल तुम (चाहे) किसी हाल में हो और कुरान की कोई सी भी आयत तिलावत करते हो और (लोगों) तुम कोई सा भी अमल कर रहे हो हम (हम सर वक़्त) जब तुम उस काम में मषग़ूल होते हो तुम को देखते रहते हैं और तुम्हारे परवरदिगार से ज़र्रा भी कोई चीज़ ग़ायब नहीं रह सकती न ज़मीन में और न आसमान में और न कोई चीज़ ज़र्रे से छोटी है और न उससे बढ़ी चीज़ मगर वह रौषन किताब लौहे महफूज़ में ज़रुर है।"

न्याय तत्व (Prameya - Object of Knowledge):
यह आयत कहती है कि कोई भी घटना, चाहे वह कितनी भी छोटी क्यों न हो, ख़ुदा से ग़ायब नहीं रहती, और वह सब कुछ "लौहे महफूज़" (संरक्षित पुस्तक) में दर्ज है। इसमें दावा किया गया है कि सभी घटनाएँ, चाहे वे भौतिक या मानसिक हों, हमेशा ख़ुदा के ज्ञान में रहती हैं।

आलोचना:

1. **प्रत्यक्ष ज्ञान (Pratyaksha - Empirical Evidence): यह दावा कि हर घटना ख़ुदा के ज्ञान में होती है, भौतिक रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता है। हमें कोई ऐसा भौतिक या दृश्य प्रमाण नहीं मिलता, जिससे यह सिद्ध हो सके कि हर घटना का अनुसरण ख़ुदा के द्वारा किया जाता है। यह केवल एक धार्मिक विश्वास है, जिसे विज्ञान या अन्य दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**

2. **संवेदनशीलता (Sensitivity): इस आयत में यह संकेत किया गया है कि हर व्यक्ति और प्रत्येक घटना पर ख़ुदा का पूर्ण नियंत्रण है, जो मानव स्वतंत्रता के सिद्धांतों के खिलाफ हो सकता है। यह अवधारणा व्यक्तित्व और स्वतंत्रता को प्रभावित करती है, और इसे नैतिक और धार्मिक दृष्टिकोण से भी सवालिया नजर से देखा जा सकता है।**

न्याय दर्शन और अन्य शास्त्रों के अनुसार:

- **पुरवा मीमांसा (Purva Mimamsa): पुरवा मीमांसा में कर्मों और उनके परिणामों का स्पष्ट उल्लेख है, लेकिन यह किसी बाहरी शक्ति के पूर्ण नियंत्रण के बजाय कर्मों के परिणामों के आधार पर न्याय करने की बात करती है।**

- **वेदांत (Vedanta): वेदांत में व्यक्ति की स्वतंत्रता और आत्मज्ञान पर बल दिया गया है, और यह विचार कि हर घटना पर किसी बाहरी शक्ति का पूर्ण नियंत्रण होता है, वेदांत के सिद्धांतों के खिलाफ है।**

निष्कर्ष:
यह आयत भौतिक प्रमाणों से परे है और इसे सार्वभौमिक रूप से सिद्ध नहीं किया जा सकता। यह मानव स्वतंत्रता और निर्णय के अधिकार को चुनौती देती है, जो सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य सिद्धांत नहीं हो सकता।

आयत 62

आयत का विवरण:
"आगाह रहो इसमें शक नहीं कि दोस्ताने ख़ुदा पर (क़यामत में) न तो कोई ख़ौफ होगा और न वह आज़ुर्दा (ग़मग़ीन) ख़ातिर होगे।"

न्याय तत्व (Vyapti - Invariable Concomitance):
यह आयत यह दावा करती है कि ख़ुदा के दोस्तों को क़यामत में कोई डर या ग़म नहीं होगा, क्योंकि उनका स्थान ख़ुदा के करम में सुरक्षित है।

आलोचना:

1. **अनुमान (Anumana - Inference): यह दावा किया गया है कि ख़ुदा के मित्रों को क़यामत में कोई दु:ख या डर नहीं होगा, लेकिन यह एक अनुमान है जो सभी के लिए लागू नहीं हो सकता। क्या सभी लोग ख़ुदा के मित्र हो सकते हैं? यह अवधारणा केवल एक धार्मिक विश्वास पर आधारित है, और यह वास्तविकता के निकट नहीं है।**

2. **सांस्कृतिक और धार्मिक विविधता (Cultural and Religious Diversity): यह विचार अन्य संस्कृतियों और धर्मों में भिन्न है। हर धर्म में अलग-अलग विचार हैं कि भगवान के मित्र कौन हो सकते हैं, और यह एक धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण से स्वीकार्य नहीं है।**

न्याय दर्शन और अन्य शास्त्रों के अनुसार:

- **वैशेषिक दर्शन (Vaisheshika): यह दर्शन वस्तुओं और घटनाओं के भौतिक प्रमाण पर आधारित है, और यह धार्मिक विश्वासों और अनुमान के बजाय वास्तविकता की जांच करता है।**
- **भगवद गीता (Bhagavad Gita): गीता में भगवान के भक्तों की भूमिका स्पष्ट रूप से बताई गई है, लेकिन यह किसी विशेष समुदाय को केवल ख़ुदा के दोस्त मानने की अवधारणा से मेल नहीं खाती।**

निष्कर्ष:
यह आयत एक अनुमान है, जो सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं हो सकता है। हर व्यक्ति के लिए यह धारणा लागू नहीं होती, और यह धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण से विवादास्पद हो सकती है।

आयत 63

आयत का विवरण:
"ये वह लोग हैं जो ईमान लाए और (ख़ुदा से) डरते थे।"

न्याय तत्व (Hetu - Reason):
यह आयत कहती है कि जो लोग ईमान लाए और ख़ुदा से डरते थे, उन्हें क़यामत में ख़ुशख़बरी मिलेगी। इसका कारण यह है कि उनका विश्वास और डर ही उन्हें सुरक्षा प्रदान करेगा।

आलोचना:

1. **साक्ष्य का अभाव (Lack of Evidence): इस आयत में ईमान और डर को ख़ुशख़बरी का कारण बताया गया है, लेकिन इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है। हमें यह सिद्ध करने के लिए कोई वास्तविक घटना नहीं मिलती, जो यह साबित कर सके कि ईमान और डर के कारण किसी व्यक्ति को ख़ुशख़बरी मिलती है।**

2. **मानव अधिकार और विविधता (Human Rights and Diversity): यह आयत एक विशिष्ट धार्मिक परिप्रेक्ष्य पर आधारित है, जो अन्य धार्मिक विचारों और विश्वासों को नकारता है। यह विचार सभी मानवों के अधिकारों और विविधता का सम्मान नहीं करता।**

न्याय दर्शन और अन्य शास्त्रों के अनुसार:

- **सांख्य योग (Sankhya Yoga): सांख्य में प्रत्येक व्यक्ति को उसके कर्मों के आधार पर फल प्राप्त होता है, न कि केवल विश्वास और डर से।**

- **भागवद गीता (Bhagavad Gita): गीता में भगवान का भक्त होना ईमान के आधार पर नहीं, बल्कि कर्म और ज्ञान पर आधारित होता है।**

निष्कर्ष:
यह आयत अन्य धर्मों और विचारों के खिलाफ है, और इसका सिद्धांत सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं हो सकता।

आयत 64

आयत का विवरण:
"उन्हीं लोगों के वास्ते दीन की ज़िन्दगी में भी और आख़िरत में (भी) ख़ुशख़बरी है ख़ुदा की बातों में अदल बदल नहीं हुआ करता यही तो बड़ी कामयाबी है।"

न्याय तत्व (Vyapti - Invariable Concomitance):
यह आयत यह दावा करती है कि ख़ुदा के आदेशों में कोई बदलाव नहीं होता, और यही लोगों के लिए सच्ची कामयाबी है।

आलोचना:

1. **विविधता और साक्ष्य का अभाव (Diversity and Lack of Evidence): यह दावा किया गया है कि ख़ुदा के आदेशों में कोई बदलाव नहीं होता, लेकिन यह किसी सांस्कृतिक या भौतिक प्रमाण से सिद्ध नहीं किया जा सकता। दुनिया भर में विभिन्न धर्मों के आदेश और विश्वास अलग-अलग हैं, और कोई भी आदेश सार्वभौमिक रूप से सभी के लिए सही नहीं हो सकता।**
2. **न्याय का उल्लंघन (Violation of Justice): इस विचार में यह समझाया गया है कि कुछ आदेश हर समय समान रहते हैं, जबकि न्याय का सिद्धांत यह कहता है कि हर व्यक्ति और स्थिति का न्याय स्वतंत्र रूप से किया जाना चाहिए।**

न्याय दर्शन और अन्य शास्त्रों के अनुसार:

- **उत्तरा मीमांसा (Vedanta): वेदांत में यह विश्वास नहीं है कि भगवान के आदेश हर समय समान रहते हैं, क्योंकि वे अपने भक्तों की व्यक्तिगत स्थिति और कर्मों के आधार पर बदलते हैं।**

- **मनुस्मृति (Manusmriti): मनुस्मृति में न्याय को प्रत्येक व्यक्ति और परिस्थिति के अनुसार लचीला बनाने की बात की गई है।**

निष्कर्ष:
यह आयत एक सामान्य सिद्धांत प्रस्तुत करती है जो सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं हो सकता है, क्योंकि यह न्याय की अवधारणा से मेल नहीं खाती है।

आयत 65

आयत का विवरण:
"और (ऐ रसूल) उन (कुफ़्फ़ार) की बातों का तुम रंज न किया करो इसमें तो शक नहीं कि सारी इज़्ज़त तो सिर्फ ख़ुदा ही के लिए है वही सबकी सुनता जानता है।"

न्याय तत्व (Hetu - Reason):
यह आयत कहती है कि केवल ख़ुदा के पास इज़्ज़त है, और वह हर चीज़ को सुनता और जानता है।

आलोचना:

1. **संवेदनशीलता (Sensitivity): यह दावा कि केवल ख़ुदा के पास इज़्ज़त है, मानवता के सिद्धांतों के खिलाफ हो सकता है। यह किसी एक सत्ता के पक्ष में एकतरफा खड़ा होता है, जबकि सभी मानवों को समान इज़्ज़त मिलनी चाहिए।**
2. **न्याय का उल्लंघन (Violation of Justice): यह विचार असमानता को बढ़ावा**

देता है, जो पूरी मानवता के लिए न्यायपूर्ण नहीं हो सकता।

न्याय दर्शन और अन्य शास्त्रों के अनुसार:

- **भागवद गीता (Bhagavad Gita): गीता में सभी जीवों को समान इज़्ज़त देने की बात की गई है, और यह एकतंत्र दृष्टिकोण के खिलाफ है।**
- **वैशेषिक दर्शन (Vaisheshika): वैशेषिक दर्शन में प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तिगत अस्तित्व और इज़्ज़त समान रूप से मूल्यवान है।**

निष्कर्ष:
यह आयत असमानता को बढ़ावा देती है और पूरी मानवता के लिए अनुपयुक्त है।

आयत 66

आयत का विवरण:
"आगाह रहो इसमें शक नहीं कि जो लोग आसमानों में हैं और जो लोग ज़मीन में है (ग़रज़ सब कुछ) ख़ुदा ही के लिए है और जो लोग ख़ुदा को छोड़कर (दूसरों को) पुकारते हैं वह तो (ख़ुदा के फर्ज़ी) शररीकों की राह पर भी नहीं चलते बल्कि वह तो सिर्फ अपनी अटकल पर चलते हैं और वह सिर्फ वहमी और ख़्याली बातें किया करते हैं।"

न्याय तत्व (Hetu - Reason):
यह आयत कहती है कि जो लोग ख़ुदा के अलावा दूसरों को पुकारते हैं, वे अपनी अटकल पर चलते हैं और वह केवल वहमी बातें करते हैं, इसलिये उनका विश्वास गलत है।

आलोचना:

1. **अनुमान (Anumana - Inference): यह दावा किया गया है कि जो लोग दूसरों को पुकारते हैं, वे केवल अपने क़यास और वहम पर आधारित होते हैं। यह केवल एक अनुमान है और सभी व्यक्तियों या धार्मिक विश्वासों के बारे में सामान्यीकरण नहीं किया जा सकता। क्या अन्य धर्मों के अनुयायी हमेशा केवल वहमी बातें करते हैं? यह स्पष्ट नहीं है, और यह केवल एक पक्षपाती दृष्टिकोण है।**

2. **संवेदनशीलता और बहुलता (Sensitivity and Pluralism): यह दृष्टिकोण अन्य धर्मों और विश्वासों के प्रति असंवेदनशील है। सभी विश्वासों को समान रूप से सम्मानित किया जाना चाहिए, और दूसरों के विश्वासों को वहम और अटकल मानना बहुलतावादी दृष्टिकोण के खिलाफ है।**

न्याय दर्शन और अन्य शास्त्रों के अनुसार:

- **वैशेषिक दर्शन (Vaisheshika): वैशेषिक दर्शन वस्तु और पदार्थ के वास्तविक गुणों पर ध्यान केंद्रित करता है, न कि किसी धर्म या विश्वास की आलोचना करने पर। यह यथार्थवादी दृष्टिकोण है जो प्रत्येक व्यक्ति के विश्वास को समान रूप से देखता है।**
- **सांख्य योग (Sankhya Yoga): सांख्य योग में आस्थाओं और विश्वासों की विविधता को स्वीकार किया गया है, और यह मानता है कि हर व्यक्ति के अनुभव और स्थिति अलग-अलग होते हैं।**

निष्कर्ष:
यह आयत बहुलतावाद और धार्मिक विविधता को नकारती है। यह दृष्टिकोण सभी विश्वासों के बीच असहिष्णुता को बढ़ावा देता है और मानवता के लिए अनुपयुक्त है।

आयत 67

आयत का विवरण:
"वह वही (खुदाए क़ादिर तवाना) है जिसने तुम्हारे नफा के वास्ते रात को बनाया ताकि तुम इसमें चैन करो और दिन को (बनाया) कि उसकी रौषनी में देखो भालो उसमें शक नहीं जो लोग सुन लेते हैं उनके लिए इसमें (कुदरत की बहुतेरी निशानियाँ हैं)।"

न्याय तत्व (Vyapti - Invariable Concomitance):
यह आयत कहती है कि रात और दिन को ख़ुदा ने इंसान के लाभ के लिए बनाया है, और जो लोग सुनते हैं उनके लिए कुदरत की निशानियाँ हैं।

आलोचना:

1. **व्यावहारिक साक्ष्य का अभाव (Lack of Practical Evidence): यह दावा कि रात और दिन को इंसान के भले के लिए बनाया गया है, एक धार्मिक विश्वास है। यह भौतिक प्रमाण या वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सिद्ध नहीं किया जा सकता। क्या यह सभी जीवों के लिए भी सच है? क्या रात और दिन का अस्तित्व केवल मानव के लाभ के लिए है? यह सवाल उठता है।**

2. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण (Scientific Perspective): यह विचार कुदरत के प्राकृतिक नियमों और जीवन के जैविक विकास को नकारता है। रात और दिन का अस्तित्व पृथ्वी के घूर्णन और सूरज की रोशनी पर आधारित है, और यह केवल इंसान के लिए नहीं, बल्कि सभी जीवों के लिए महत्वपूर्ण है।**

न्याय दर्शन और अन्य शास्त्रों के अनुसार:

- **वेदांत (Vedanta): वेदांत में कुदरत की भूमिका का विचार किया गया है, लेकिन इसे केवल मानव कल्याण से जोड़ने की बजाय यह कहा जाता है कि कुदरत का उद्देश्य सभी जीवों के जीवन के संतुलन में योगदान देना है।**
- **भगवद गीता (Bhagavad Gita): गीता में कहा गया है कि कुदरत के तत्व सभी जीवों के लिए हैं, और इसका उद्देश्य केवल मानवता के लिए नहीं है।**

निष्कर्ष:
यह आयत कुदरत और जीवन के प्राकृतिक नियमों को केवल मानव कल्याण से जोड़कर उसे संकीर्ण दृष्टिकोण से देखती है, जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण से गलत है।

आयत 68

आयत का विवरण:
"लोगों ने तो कह दिया कि ख़ुदा ने बेटा बना लिया-ये महज़ लगों वह तमाम नकायस से पाक व पाकीज़ा वह (हर तरह) से बेपरवाह हैं व जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है (सब) उसी का है (जो कुछ) तुम कहते हो(उसकी कोई दलील तो तुम्हारे पास है नहीं क्या तुम ख़ुदा पर) (यूही) बे जाने बूझे झूठ बोला करते हो।"

न्याय तत्व (Hetu - Reason):
यह आयत कहती है कि जो लोग यह कहते हैं कि ख़ुदा ने बेटा बना लिया, वे झूठ बोलते हैं क्योंकि इसमें कोई प्रमाण नहीं है।

आलोचना:

1. **साक्ष्य का अभाव (Lack of Evidence): यह आयत यह आरोप लगाती है कि दूसरों के विश्वासों के खिलाफ कोई प्रमाण नहीं है, लेकिन क्या स्वयं इस आयत का कोई प्रमाण है कि ख़ुदा ने बेटे का निर्माण नहीं किया? यह भी केवल एक धार्मिक मान्यता है, जो नकारात्मक रूप से दूसरे विश्वासों को खारिज करती है।**

2. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण (Scientific Perspective): यह आरोप किसी वैज्ञानिक या भौतिक प्रमाण से सिद्‌ध नहीं किया जा सकता। विभिन्न धर्मों और संस्कृति में "ईश्वर का पुत्र" होने के विचार का अपना स्थान है, और इसे केवल 'झूठ' कहकर खारिज नहीं किया जा सकता।**

न्याय दर्शन और अन्य शास्त्रों के अनुसार:

- **पुरवा मीमांसा (Purva Mimamsa): पुरवा मीमांसा में किसी भी धार्मिक विश्वास या कथन को केवल प्रमाण के आधार पर स्वीकारा जाता है, और नकारात्मक दृष्टिकोण का पालन नहीं किया जाता।**

- **सांख्य योग (Sankhya Yoga): सांख्य योग में विविधता और विभिन्न दृष्टिकोणों का सम्मान किया जाता है, और इसे संकीर्ण दृष्टिकोण से नहीं देखा जाता।**

निष्कर्ष:
यह आयत अन्य विश्वासों को नकारते हुए अपना पक्ष प्रस्तुत करती है, और इसे एकतरफा धार्मिक दृष्टिकोण से देखा जाता है। यह मानवता के लिए सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं हो सकती।

आयत 69

आयत का विवरण:
"ऐ रसूल तुम कह दो कि बेशक जो लोग झूठ मूठ ख़ुदा पर बोहतान बाधते हैं वह कभी कामयाब न होगें।"

न्याय तत्व (Vyapti - Invariable Concomitance):
यह आयत कहती है कि जो लोग झूठा आरोप लगाते हैं, वे कभी सफल नहीं होंगे।

आलोचना:

1. **अनुमान (Anumana - Inference): यह दावा किया गया है कि झूठे आरोप लगाने वाले कभी सफल नहीं हो सकते, लेकिन यह केवल एक अनुमान है। क्या इतिहास में कभी किसी झूठे आरोप लगाने वाले ने सफलता नहीं पाई है? यह दावा वास्तविकता से मेल नहीं खाता।**

2. **साक्ष्य का अभाव (Lack of Evidence): यह बात प्रमाणित नहीं की जा सकती कि हमेशा झूठ बोलने वाले असफल होते हैं। इतिहास में ऐसे बहुत से उदाहरण मिलते हैं जहां झूठे आरोप लगाने वाले सफलता हासिल करते हैं।**

न्याय दर्शन और अन्य शास्त्रों के अनुसार:

- **न्याय दर्शन (Nyaya Darshan): न्याय दर्शन में प्रमाण और तर्क की विशेष अहमियत है। किसी भी दावे को सच्चा साबित करने के लिए प्रमाण की आवश्यकता होती है, जो इस आयत में मौजूद नहीं है।**
- **भगवद गीता (Bhagavad Gita): गीता में कर्म के फल की बात की गई है, लेकिन यह सिद्धांत केवल कर्मों पर आधारित है, न कि किसी को झूठ बोलने या सही करने पर।**

निष्कर्ष:
यह आयत एक सामान्यीकरण है, जिसे सभी परिस्थितियों में लागू नहीं किया जा सकता। यह तर्क और प्रमाण से परे है।

आयत 70

आयत का विवरण:
"(ये) दुनिया के (चन्द रोज़ा) फायदे हैं फिर तो आख़िर हमारी ही तरफ लौट कर आना है तब उनके कुफ्र की सज़ा में हम उनको सख़्त अज़ाब के मज़े चखाएँगें।"

न्याय तत्व (Vyapti - Invariable Concomitance):
यह आयत कहती है कि जो लोग कुफ्र करते हैं, उन्हें आख़िरत में सख्त सज़ा

मिलेगी।

आलोचना:

1. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण (Scientific Perspective): यह धार्मिक दृष्टिकोण मानवीय व्यवहार और जीवन की वैज्ञानिक प्रक्रिया को नकारता है। क्या कुफ्र (अविश्वास) की सजा केवल मृत्यु के बाद दी जाएगी? क्या इसका कोई भौतिक प्रमाण या कारण है?**

2. **मानवाधिकार (Human Rights): यह दृष्टिकोण विविधता और व्यक्तिगत विश्वास की स्वतंत्रता का उल्लंघन करता है। धर्मनिरपेक्षता और मानवाधिकारों के सिद्धांत के तहत, लोगों को अपने विश्वासों के पालन में स्वतंत्रता होनी चाहिए।**

न्याय दर्शन और अन्य शास्त्रों के अनुसार:

- **वैशेषिक दर्शन (Vaisheshika): वैशेषिक दर्शन में इस प्रकार के सांप्रदायिक दृष्टिकोण का कोई स्थान नहीं है, क्योंकि यह सभी व्यक्तियों के व्यक्तिगत अधिकारों को महत्व देता है।**
- **सांख्य योग (Sankhya Yoga): सांख्य योग जीवन के तात्त्विक सिद्धांतों के अनुसार काम करता है और इस तरह के विभाजन और सजा के दृष्टिकोण को नकारता है।**

निष्कर्ष:
यह आयत व्यक्तियों के विश्वासों के खिलाफ कठोर दृष्टिकोण अपनाती है, और यह मानवाधिकारों और धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांतों के खिलाफ है।

आयत 71

आयत का विवरण:
"और (ऐ रसूल) तुम उनके सामने नूह का हाल पढ़ दो जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा ऐ मेरी क़ौम अगर मेरा ठहरना और ख़ुदा की आयतों का चर्चा करना तुम पर याक़ व गरा (बुरा) गुज़रता है तो मैं सिर्फ ख़ुदा ही पर भरोसा रखता हूँ तो तुम और तुमहारे शरीक़ सब मिलकर अपना काम ठीक कर लो फिर तुम्हारी बात तुम (में से किसी) पर महज़ (छुपी) न रहे फिर (जो तुम्हारा जी चाहे) मेरे साथ कर गुज़रों और गुझे (दम मारने की भी) मोहलत न दो।"

न्याय तत्व (Hetu - Reason):
यह आयत नूह के संदेश को प्रस्तुत करती है, जहाँ वे अपनी क़ौम से कहते हैं कि अगर उनके संदेश से वे नाखुश हैं, तो वे केवल ख़ुदा पर भरोसा रखते हैं और उनके साथ जो चाहें कर सकते हैं।

आलोचना:

1. **साक्ष्य का अभाव (Lack of Evidence): नूह के संदेश का यह कथन और उसके बाद के घटनाक्रम को केवल धार्मिक विश्वासों के आधार पर प्रस्तुत किया गया है। क्या वास्तव में नूह की क़ौम के लोग उसके संदेश को नकारते थे और इसे साकारात्मक रूप में प्रमाणित किया जा सकता है? यह घटना केवल धार्मिक कथा है, जिसका कोई भौतिक या ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है।**
2. **मानवीय विकल्प और आलोचना (Human Agency and Critique): नूह का यह कथन अपने संदेश को प्रस्तुत करने में निश्चित रूप से नकारात्मक दृष्टिकोण से भरा है। क्या यह सभी विश्वासों और विचारधाराओं को एक तरह से खारिज करता है? क्या एक व्यक्ति को अपनी विचारधारा को थोपने का अधिकार है, जबकि अन्य उसके विचारों से सहमत नहीं हैं? यह तर्क पर आधारित एक बहस का हिस्सा बनता है, जो विविधता और बहुलतावाद के खिलाफ है।**

न्याय दर्शन और अन्य शास्त्रों के अनुसार:

- **पुरवा मीमांसा (Purva Mimamsa): पुरवा मीमांसा में कर्मों और आस्थाओं की स्वतंत्रता की अहमियत दी गई है, जहां सभी विश्वासों का सम्मान किया जाता है और कोई एक पक्ष दूसरे पर थोपने का प्रयास नहीं करता।**
- **सांख्य योग (Sankhya Yoga): सांख्य योग में आत्म-निर्भरता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को प्राथमिकता दी जाती है, न कि एकतरफा विश्वासों का प्रचार।**

निष्कर्ष:
यह आयत अन्य विश्वासों और विचारधाराओं के प्रति असंवेदनशील है, और इसे एकतरफा धर्मनिष्ठा की ओर प्रवृत्त करती है, जो मानवता के लिए अनुपयुक्त हो सकती है।

आयत 72

आयत का विवरण:
"फिर भी अगर तुम ने (मेरी नसीहत से) मुँह मोड़ा तो मैने तुम से कुछ मज़दूरी तो न माँगी थी-मेरी मज़दूरी तो सिर्फ ख़ुदा ही पर है और (उसी की तरफ से) मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं उसके फरमाबरदार बन्दों में से हो जाऊँ।"

न्याय तत्व (Vyapti - Invariable Concomitance):
यह आयत नूह के संदेश का पालन न करने वालों को उनके कथित दोषों के लिए जवाबदेह ठहराती है, यह कहते हुए कि नूह को किसी तरह का व्यक्तिगत लाभ नहीं चाहिए था, बल्कि उनका उद्देश्य केवल ख़ुदा की सेवा था।

आलोचना:

1. **मानवाधिकार का उल्लंघन (Violation of Human Rights): यह आयत कहती है कि नूह का उद्देश्य केवल ख़ुदा की सेवा था, और दूसरों को इस सेवा का पालन करने के लिए बाध्य करना था। क्या हर व्यक्ति के पास अपनी स्वतंत्र इच्छा का अधिकार नहीं होना चाहिए? क्या किसी व्यक्ति को मजबूर करना सही है कि वह विशेष विश्वासों का पालन करे?**

2. **कानूनी और तार्किक दृष्टिकोण (Legal and Logical Perspective): किसी धार्मिक विचारधारा को जबरन थोपना या किसी व्यक्ति को अपनी आस्थाओं को स्वीकार करने के लिए बाध्य करना तर्कसंगत नहीं है। यह विभिन्न विश्वासों और दृष्टिकोणों के बीच सम्मान और सहिष्णुता को नकारता है।**

न्याय दर्शन और अन्य शास्त्रों के अनुसार:

- **न्याय दर्शन (Nyaya Darshan): न्याय दर्शन में प्रमाण और तर्क की अहमियत दी गई है, जहां किसी धार्मिक विश्वास को प्रमाण के बिना स्वीकार नहीं किया जा सकता। इसके अनुसार किसी को अपनी आस्थाओं को थोपने का अधिकार नहीं है।**
- **भगवद गीता (Bhagavad Gita): गीता में कहा गया है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्मों के परिणाम का सामना करना पड़ता है और उसे अपनी इच्छाओं और विश्वासों के अनुसार स्वतंत्र रूप से कार्य करने का अधिकार है।**

निष्कर्ष:
यह आयत धार्मिक विश्वासों के पालन को दूसरों पर थोपने का समर्थन करती है, जो विविधता और सहिष्णुता के सिद्धांत के खिलाफ है।

आयत 73

आयत का विवरण:
"उस पर भी उन लोगों ने उनको झुठलाया तो हमने उनको और जो लोग उनके साथ कष्ती में (सवार) थे (उनको) नजात दी और उनको (अगलों का) जानषीन बनाया और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया था उनको डुबो मारा फिर ज़रा ग़ौर तो करो कि जो (अज़ाब से) डराए जा चुके थे उनका क्या (ख़राब) अन्जाम हुआ।"

न्याय तत्व (Hetu - Reason):
यह आयत यह कहती है कि जिन्होंने नूह के संदेश को नकारा, उन्हें डुबो दिया गया, जबकि जो लोग नूह के साथ थे, उन्हें बचा लिया गया। यह इस बात का कारण बताती है कि सज़ा का कारण उनकी अवज्ञा थी।

आलोचना:

1. **अत्यधिक सजा (Excessive Punishment): यह सज़ा अत्यधिक और असंगत लगती है, क्योंकि यहां पर केवल विश्वासों की वजह से पूरी क़ौम को नष्ट कर दिया गया। क्या यह न्यायपूर्ण है कि केवल विचारधारा के आधार पर एक पूरे समाज को नष्ट कर दिया जाए?**

2. **साक्ष्य का अभाव (Lack of Evidence): यह घटना भी केवल धार्मिक कथा के रूप में प्रस्तुत की गई है, जिसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है। क्या ऐसे ऐतिहासिक घटनाएँ सच में घटी थीं, या ये केवल**

धार्मिक आख्यान हैं?

न्याय दर्शन और अन्य शास्त्रों के अनुसार:

- **वैशेषिक दर्शन (Vaisheshika): वैशेषिक दर्शन में प्रत्येक कर्म और घटना को तात्त्विक आधार पर परखा जाता है, और यह सजा देने की इस प्रकार की कठोरता को न्यायपूर्ण नहीं मानता।**
- **सांख्य योग (Sankhya Yoga): सांख्य योग में सभी जीवों के अनुभवों और कर्मों को एक सार्वभौमिक दृष्टिकोण से देखा जाता है, और इस प्रकार की व्यापक और असंवेदनशील सजा को स्वीकार नहीं किया जाता।**

निष्कर्ष:
यह आयत अत्यधिक सज़ा को उचित ठहराती है, जो न्याय और तात्त्विक दृष्टिकोण से असंगत है।

आयत 74

आयत का विवरण:
"फिर हमने नूह के बाद और रसूलों को अपनी क़ौम के पास भेजा तो वह पैग़म्बर उनके पास वाज़ेए (खुले हुए) व रौषन मौजिज़े लेकर आए इस पर भी जिस चीज़ को ये लोग पहले झुठला चुके थे उस पर ईमान (न लाना था) न लाए हम यू ही हद से गुज़र जाने वालों के दिलों पर (गोया) खुद मोहर कर देते हैं।"

न्याय तत्व (Vyapti - Invariable Concomitance):
यह आयत कहती है कि हर पैग़म्बर के पास रौषन मौजिज़े थे, फिर भी लोग उनके संदेश को नकारते थे, और उनके दिलों पर मोहर लगाई जाती थी।

आलोचना:

1. **विविधता और स्वतंत्रता (Diversity and Freedom): यह कथन यह मानता है कि लोग हमेशा धार्मिक संदेशों को स्वीकार करें, लेकिन क्या यह हमेशा संभव है? क्या सभी को अपनी व्यक्तिगत विश्वास प्रणाली बनाने और अनुसरण करने का अधिकार नहीं होना चाहिए?**

2. **तर्कसंगतता (Rationality): यह विचार केवल तात्त्विक और धार्मिक विश्वासों पर आधारित है, जबकि यह तार्किक दृष्टिकोण से सिद्ध नहीं किया जा सकता।**

न्याय दर्शन और अन्य शास्त्रों के अनुसारः

- **न्याय दर्शन (Nyaya Darshan): न्याय दर्शन में तर्क और प्रमाण को अत्यधिक महत्व दिया जाता है, और किसी भी दावे को केवल प्रमाण के बिना स्वीकार नहीं किया जा सकता।**
- **भगवद गीता (Bhagavad Gita): गीता में कहा गया है कि प्रत्येक व्यक्ति का हृदय और मस्तिष्क स्वतंत्र रूप से विचार करने और अपने विश्वासों को चुनने का अधिकार रखते हैं।**

निष्कर्षः
यह आयत उन लोगों के विश्वासों को नकारने और उन्हें अवश्य स्वीकारने के लिए प्रेरित करती है, जो हर किसी के लिए स्वीकार्य नहीं हो सकता।

आयत 75

आयत का विवरणः
"फिर हमने इन पैग़म्बरों के बाद मूसा व हारुन को अपनी निषानियाँ (मौजिज़े) लेकर फिरआऊन और उस (की क़ौम

) के सरदारों के पास भेजा तो वह लोग अकड़ बैठे और ये लोग थे ही कुसूरवार।"

न्याय तत्व (Vyapti - Invariable Concomitance):
यह आयत कहती है कि मूसा और हारुन को अपनी निषानियों के साथ भेजा गया, लेकिन फिरआऊन और उसके लोग अहंकार करते हुए नकारते रहे।

आलोचनाः

1. **आत्मघाती अहंकार (Self-destructive arrogance): इस आयत में अहंकार की स्थिति को दिखाया गया है, लेकिन क्या यह उचित है कि किसी धार्मिक विचारधारा को इस प्रकार नकारा जाए?**

2. **साक्ष्य की कमी (Lack of Evidence): यह भी एक धार्मिक आख्यान है, जिसका कोई ऐतिहासिक या भौतिक प्रमाण नहीं है।**

न्याय दर्शन और अन्य शास्त्रों के अनुसारः

- **न्याय दर्शन (Nyaya Darshan): न्याय दर्शन में प्रमाण के बिना किसी भी घटना को सत्य मानने का कोई स्थान नहीं है।**
- **वैशेषिक दर्शन (Vaisheshika): वैशेषिक दर्शन में यह देखा जाता है कि क्या इस प्रकार की घटनाएँ तार्किक रूप से सिद्ध हो सकती हैं।**

निष्कर्ष:
यह आयत सत्य के प्रमाण के बिना एकपक्षीय दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती है, जो तार्किक दृष्टिकोण से असंगत है।

आयत 76

आयत का विवरण:
"फिर जब उनके पास हमारी तरफ से हक़ बात (मौजिज़े) पहुँच गए तो कहने लगे कि ये तो यक़ीनी खुल्लम खुल्ला जादू है।"

न्याय तत्व (Hetu - Reason):
यह आयत कहती है कि जब मूसा के पास दिखाए गए चमत्कारी संकेत (मौजिज़े) लोगों के पास पहुंचे, तो उन्होंने इसे केवल एक "जादू" माना। इस विचारधारा को लेकर उनका कारण यह था कि उनका विश्वास यह था कि यह चमत्कार वास्तविक नहीं है, बल्कि जादू है।

आलोचना:

1. **साक्ष्य का अभाव (Lack of Evidence): यह कथन बिना किसी भौतिक या वैज्ञानिक प्रमाण के प्रस्तुत किया गया है। क्या केवल किसी चमत्कारी घटना के आधार पर इसे जादू कहना उचित है? एक चमत्कार को जादू कहना न केवल तर्कहीन है, बल्कि यह भी इस बात की अनदेखी करता है कि किसी घटना के सही कारण की समझ के बिना उसे केवल अंधविश्वास के तहत परिभाषित किया जा सकता है।**

2. **साक्षात्कार की स्वतंत्रता (Freedom of Observation): यह दृष्टिकोण दर्शाता है कि लोग किसी नई बात या अनुभव को देखकर उसे अपनी परिभाषाओं के अंतर्गत समाहित करने की कोशिश करते हैं। हालांकि, यह एक तथ्य है कि हम हर नए अनुभव को बिना वैज्ञानिक आधार के स्वीकार नहीं कर सकते, लेकिन इसे केवल "जादू" कहकर नकारना तर्कहीन है।**

न्याय दर्शन और अन्य शास्त्रों के अनुसार:

- **न्याय दर्शन (Nyaya Darshan):** न्याय दर्शन में यह कहा गया है कि किसी भी दावे को प्रमाण के बिना स्वीकार नहीं किया जा सकता। जब एक घटना के कारण को समझने के लिए पर्याप्त तर्क नहीं होते, तो उसे तर्कसंगत दृष्टिकोण से समझना चाहिए, न कि अंधविश्वास के आधार पर नकार देना चाहिए।
- **वैशेषिक दर्शन (Vaisheshika):** वैशेषिक दर्शन के अनुसार, कोई भी घटना या परिघटना वास्तविक सिद्धांतों और प्रमाणों पर आधारित होनी चाहिए। जादू को एक प्राकृतिक घटना के रूप में नहीं समझा जा सकता, यदि इसका कोई प्रमाण नहीं है।

निष्कर्ष:
यह आयत बिना तर्क और प्रमाण के चमत्कारों को जादू के रूप में नकारने का पक्ष रखती है, जो तर्कसंगत दृष्टिकोण से खारिज किया जा सकता है।

आयत 77

आयत का विवरण:
"मूसा ने कहा क्या जब (दीन) तुम्हारे पास आया तो उसके बारे में कहते हो कि क्या ये जादू है और जादूगर लोग कभी कामयाब न होगें।"

न्याय तत्व (Prameya - Object of Knowledge):
यह आयत मूसा के तर्क को प्रस्तुत करती है, जिसमें वे कहते हैं कि जादूगर लोग कभी कामयाब नहीं हो सकते, और उनका उद्देश्य यह है कि यदि यह वास्तव में जादू होता तो वह कभी सफल नहीं हो सकते।

आलोचना:

1. **साक्षात्कार के प्रकार (Types of Evidence):** यह तर्क केवल विश्वास के आधार पर है, जबकि कोई भी घटना या प्रकट चमत्कार वैज्ञानिक दृष्टिकोण से परखा जा सकता है। मूसा का यह तर्क एक धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जो तात्त्विक रूप से आलोचनात्मक नहीं है।

2. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण की अनदेखी (Disregard for Scientific Perspective):** क्या मूसा का यह कथन वास्तविकता के आधार पर है या सिर्फ एक धार्मिक व्याख्या? किसी घटना को पूरी तरह से जादू के रूप में नकारने का यह दृष्टिकोण भौतिकवादी दृष्टिकोण को नकारता है। क्या यह संभव नहीं है कि यह चमत्कार या प्राकृतिक घटना किसी अन्य प्रकार से व्याख्यायित हो सकती हो?

न्याय दर्शन और अन्य शास्त्रों के अनुसार:

- **न्याय दर्शन (Nyaya Darshan): न्याय दर्शन में यह बात स्पष्ट की जाती है कि कोई भी दावा बिना प्रमाण के अवैध होता है। एक चमत्कार को केवल विश्वास के आधार पर प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**
- **सांख्य योग (Sankhya Yoga): सांख्य योग में यह कहा गया है कि केवल वास्तविकता का अनुसरण किया जाना चाहिए, न कि अंधविश्वास को बढ़ावा दिया जाए।**

निष्कर्ष:
यह आयत यह विचार प्रस्तुत करती है कि जादू कभी सफल नहीं हो सकता, जबकि वास्तविकता में किसी भी घटना को तर्कसंगत तरीके से प्रमाणित किया जाना चाहिए, और यह विचार अंधविश्वास के खिलाफ है।

आयत 78

आयत का विवरण:
"वह लोग कहने लगे कि (ऐ मूसा) क्यों तुम हमारे पास उस वास्ते आए हो कि जिस दीन पर हमने अपने बाप दादाओं को पाया उससे तुम हमे बहका दो और सारी ज़मीन में ही दोनों की बढ़ाई हो और ये लोग तुम दोनों पर ईमान लाने वाले नहीं।"

न्याय तत्व (Hetu - Reason):
यह आयत उन लोगों के तर्क को प्रस्तुत करती है, जो मूसा और हारुन के संदेश को नकारते हैं। उनका कहना है कि वह अपने पूर्वजों के विश्वासों को छोड़कर नया विश्वास नहीं अपनाना चाहते हैं।

आलोचना:

1. **पारंपरिक विश्वासों का पालन (Adherence to Traditional Beliefs): यह तर्क केवल इस तथ्य पर आधारित है कि लोग अपने पुरखों के विश्वासों का पालन करना चाहते हैं। क्या यह तार्किक है कि केवल पारंपरिक विश्वासों को बिना किसी आलोचना के सही माना जाए? क्या किसी संस्कृति का कोई मानक कभी वैज्ञानिक या तर्कसंगत रूप से परखा गया है?**

2. **स्वतंत्र विचार की कमी (Lack of Independent Thought): क्या यह उचित है कि लोग केवल अपने बाप-दादाओं के विश्वासों को अपनाकर जीवन बिताएं, जबकि हर व्यक्ति को अपने विचार स्वतंत्र रूप से विकसित करने का अधिकार होना चाहिए?**

न्याय दर्शन और अन्य शास्त्रों के अनुसार:

- **न्याय दर्शन (Nyaya Darshan): न्याय दर्शन में यह कहा गया है कि किसी भी ज्ञान या विश्वास को तर्कसंगत रूप से परखा जाना चाहिए, न कि केवल पुरानी परंपराओं या विश्वासों के आधार पर।**
- **भगवद गीता (Bhagavad Gita): गीता में कहा गया है कि व्यक्ति को अपने विश्वासों और विचारों को स्वतंत्र रूप से चुनने का अधिकार है, और उसे अंधविश्वास या परंपरा के आधार पर किसी एक विचार को स्वीकार नहीं करना चाहिए।**

निष्कर्ष:
यह आयत तर्क और स्वतंत्र विचार के खिलाफ है, और इसे केवल पारंपरिक विश्वासों पर आधारित मान्यता से नकारा जा सकता है।

आयत 79

आयत का विवरण:
"और फिरआऊन ने हुक्म दिया कि हमारे हुज़ूर में तमाम खिलाड़ी (वाक़िफकार) जादूगर को तो ले आओ।"

न्याय तत्व (Vyapti - Invariable Concomitance):
यह आयत कहती है कि फिरआऊन ने आदेश दिया कि जादूगरों को उनके पास लाया जाए। यह दिखाता है कि फिरआऊन अपने विरोधी की बातों का सामना करने के लिए जादूगरों का सहारा लेने को तैयार था।

आलोचना:

1. **तर्क के अभाव में प्रतिक्रिया (Reaction in the Absence of Reason): फिरआऊन की यह कार्रवाई केवल विरोधी विचारधारा को नकारने की एक रणनीति दिखाती है। क्या यह उचित नहीं था कि वह तर्कसंगत रूप से इस विवाद का समाधान करता?**

2. **विकृति (Distortion): जादू और चमत्कारी घटनाओं के बीच का अंतर कभी स्पष्ट नहीं किया गया। क्या फिरआऊन को यह नहीं समझना चाहिए था कि वह केवल एक तर्कसंगत दृष्टिकोण से इस विवाद को सुलझा सकता था?**

न्याय दर्शन और अन्य शास्त्रों के अनुसार:

- **न्याय दर्शन (Nyaya Darshan): न्याय दर्शन में यह कहा गया है कि किसी भी विवाद को समझदारी और प्रमाण के आधार पर हल किया जाना चाहिए, न कि केवल शक्ति या डर के माध्यम से।**
- **सांख्य योग (Sankhya Yoga): सांख्य योग में कहा गया है कि किसी भी स्थिति को अपनी आत्म-चेतना और विवेक से परखना चाहिए, न कि किसी बाहरी ताकत का सहारा लेना चाहिए।**

निष्कर्ष:
यह आयत तर्क और विवेक के बजाय शक्ति का प्रयोग करती है, जो हर दृष्टिकोण से अनुचित है।

निष्कर्ष (Overall Conclusion):
इन आयतों का विश्लेषण दिखाता है कि इनमें से कई विचार केवल विश्वास और परंपराओं पर आधारित हैं, बिना वैज्ञानिक या तर्कसंगत प्रमाण के। इन कथनों का उद्देश्य दूसरों पर अपने विचार थोपना और विश्वासों को बिना किसी तर्क के स्वीकार करना है, जो कि मानवता और स्वतंत्र विचार के सिद्धांतों के खिलाफ है।

आयत 80

आयत का विवरण:
"फिर जब जादूगर लोग (मैदान में) आ मौजूद हुए तो मूसा ने उनसे कहा कि तुमको जो कुछ फेंकना हो फेंको।"

न्याय तत्व (Pramana - Valid Knowledge):
यह आयत जादूगरों से अपेक्षापूर्वक एक चुनौती की स्थिति में है। मूसा ने जादूगरों से कहा कि वे जो कुछ भी करना चाहें, वह कर सकते हैं। यह एक प्रकार की 'प्रमाण' की स्थिति है, जिसमें सामने वाले से अपेक्षा की जाती है कि वह अपनी शक्ति दिखाए।

आलोचना:

1. **तर्कसंगत स्थिति की कमी (Lack of Logical Basis): यह आयत केवल एक चुनौती देती है बिना किसी स्पष्ट तर्क के। यह कैसे कहा जा सकता है कि जादू से एक सत्य का पता चलता है? क्या इस प्रकार की चुनौती उचित है, जो केवल भौतिक शक्तियों के प्रदर्शन पर आधारित हो, जबकि तर्क और प्रमाण की आवश्यकता होनी चाहिए?**
2. **प्राकृतिक घटनाओं का विकृत रूप (Distortion of Natural Phenomena): जादू और चमत्कारी घटनाओं को चुनौती देने और उन्हें सत्य मानने का तरीका वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अस्वीकार्य है। क्या**

यह उचित है कि किसी असामान्य घटना को 'जादू' के रूप में ले लिया जाए, बजाय इसके कि उसे तर्क और प्रमाण से समझा जाए?

न्याय दर्शन और अन्य शास्त्रों के अनुसार:

- न्याय दर्शन (Nyaya Darshan): न्याय दर्शन के अनुसार, किसी घटना को केवल तर्क और प्रमाण से परखा जाना चाहिए, न कि इसे जादू या चमत्कार के रूप में लिया जाए। यहां पर प्रमाण की आवश्यकता है, जो इस आयत में गायब है।
- वैशेषिक दर्शन (Vaisheshika): वैशेषिक दर्शन यह सिखाता है कि हम जिस किसी भी घटना को समझने का प्रयास करते हैं, वह केवल उसकी कारण और प्रभाव के आधार पर किया जाना चाहिए। इस आयत में तर्क का अभाव है, और बिना कारण के कोई घटना को चुनौती दी जा रही है।

निष्कर्ष:
यह आयत एक ऐसे वाक्य को प्रस्तुत करती है जिसमें केवल चुनौती दी जाती है, लेकिन बिना किसी तर्क या प्रमाण के। इसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अस्वीकार्य माना जा सकता है, और इसे केवल भौतिक शक्ति के प्रदर्शन से सत्य सिद्ध करने का प्रयास किया गया है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता।

आयत 81

आयत का विवरण:
"फिर जब वह लोग (रस्सियों को साँप बनाकर) डाल चुके तू मूसा ने कहा जो कुछ तुम (बनाकर) लाए हो (वह तो सब) जादू है- इसमें तो शक ही नहीं कि ख़ुदा उसे फौरन मिटियामेट कर देगा (क्योंकि) ख़ुदा तो हरगिज़ मफ़सिदों (फसाद करने वालों) का काम दुरुस्त नहीं होने देता।"

न्याय तत्व (Hetu - Reason):
यह आयत मूसा का यह तर्क प्रस्तुत करती है कि जो चीज़ें जादू के रूप में दिखाई जा रही हैं, वह केवल एक धोखा हैं, और भगवान उन्हें मिटा देंगे। यह तर्क इस पर आधारित है कि भगवान हमेशा उन लोगों के कर्मों को असफल कर देता है जो फसाद (अराजकता) फैलाने की कोशिश करते हैं।

आलोचना:

1. साक्ष्य का अभाव (Lack of Evidence): यह दावा कि "ख़ुदा तुरंत उसे मिटा देगा" बिना किसी तर्क या वैज्ञानिक आधार के किया गया है। क्या यह संभव नहीं है कि किसी परिघटना को बिना एक जादू

के भी समझा जा सकता है?

2. **अंधविश्वास का प्रचार (Promotion of Superstition):** यह विचार कि कुछ भी असामान्य दिखने वाली घटना को केवल जादू के रूप में नकारा जाए, यह अंधविश्वास को बढ़ावा देता है। इसे किसी प्राकृतिक घटना के रूप में भी समझा जा सकता है, जो तर्कसंगत रूप से व्याख्यायित की जा सकती है।

न्याय दर्शन और अन्य शास्त्रों के अनुसार:

- **न्याय दर्शन (Nyaya Darshan):** न्याय दर्शन के अनुसार, किसी घटना या दावे को प्रमाण और तर्क के आधार पर परखा जाना चाहिए। बिना किसी तर्क के इसे जादू कहना अनुचित है।
- **भगवद गीता (Bhagavad Gita):** गीता में यह कहा गया है कि हर घटना का कारण और उद्देश्य समझने का प्रयास किया जाना चाहिए, न कि बिना समझे उसे नकारा जाए।

निष्कर्ष:
यह आयत तर्क और प्रमाण के बिना एक घटना को जादू कहकर नकारने का पक्ष रखती है, जो कि अस्वीकृत किया जा सकता है।

आयत 82

आयत का विवरण:
"और ख़ुदा सच्ची बात को अपने कलाम की बरकत से साबित कर दिखाता है अगरचे गुनाहगारों को नापसंद हो।"

न्याय तत्व (Vyapti - Invariable Concomitance):
यह आयत कहती है कि भगवान सच्ची बात को साबित करता है, चाहे गुनाहगारों को वह बात कितनी भी नापसंद क्यों न हो। यह विचार है कि सत्य की पुष्टि भगवान के द्वारा की जाती है, और इसका कोई विरोध नहीं कर सकता।

आलोचना:

1. **स्वतंत्र सोच का उल्लंघन (Violation of Independent Thought):** यह कथन यह बताता है कि कोई भी सत्य के खिलाफ जा ही नहीं सकता, हालांकि यह विचार स्वतंत्र सोच के खिलाफ है। क्या

यह उचित है कि केवल एक शक्ति द्वारा सत्य को सही ठहराया जाए, जबकि यह मानवता के तर्क और स्वतंत्र विचार के सिद्धांतों को चुनौती देता है?

2. **सत्य का दमन (Suppression of Truth):** क्या यह सही है कि किसी सत्य को केवल किसी उच्च शक्ति के विचारों के आधार पर माना जाए, बिना उसे स्वतंत्र रूप से परखने के? क्या सत्य का कोई स्थिर और सार्वभौमिक आधार नहीं होना चाहिए?

न्याय दर्शन और अन्य शास्त्रों के अनुसार:

- **न्याय दर्शन (Nyaya Darshan):** न्याय दर्शन के अनुसार, सत्य का पालन केवल प्रमाण और तर्क के आधार पर किया जाना चाहिए, न कि किसी बाहरी सत्ता के आदेश से।
- **वैशेषिक दर्शन (Vaisheshika):** वैशेषिक दर्शन में यह कहा गया है कि सत्य को समझने के लिए व्यक्तिगत विवेक और तर्क का प्रयोग होना चाहिए, न कि किसी बाहरी तत्व के आदेश से।

निष्कर्ष:
यह आयत स्वतंत्र विचार और तर्क की स्वतंत्रता को नकारती है, और इसका आधार एक परम सत्ता के विचारों पर है, जो आलोचना के योग्य है।

आयत 83

आयत का विवरण:
"अलग़रज़ मूसा पर उनकी क़ौम की नस्ल के चन्द आदमियों के सिवा फिरआऊन और उसके सरदारों के इस ख़ौफ से कि उन पर कोई मुसीबत डाल दे कोई ईमान न लाया और इसमें शक नहीं कि फिरआऊन रुए ज़मीन में बहुत बढ़ा चढ़ा था और इसमें शक नहीं कि वह यक़ीनन ज़्यादती करने वालों में से था।"

न्याय तत्व (Hetu - Reason):
यह आयत कहती है कि फिरआऊन और उसके सरदारों ने डर के कारण मूसा और उसके संदेश को नकारा, क्योंकि उन्हें डर था कि यदि वे ईमान लाएंगे तो उन पर मुसीबत आ सकती है। यह तर्क इस विचार पर आधारित है कि सत्ता के लोग कभी भी अपनी स्थिति को खोने से डरते हैं।

आलोचना:

1. **तर्कहीन नकारना (Illogical Denial): फिरआऊन और उसके समर्थकों का यह तर्क कि वे ईमान नहीं लाए, केवल इस आधार पर था कि वे अपनी सत्ता और स्थिति को खोने से डरते थे। क्या यह तर्कसंगत है कि किसी सत्य को केवल इस कारण से नकारा जाए क्योंकि इससे व्यक्ति की स्थिति पर असर पड़ सकता है?**

2. **स्वार्थ और अंधविश्वास (Self-interest and Superstition): यह तर्क इस बात को दिखाता है कि स्वार्थ और डर ने लोगों को सही सत्य से दूर रखा, जो एक नकारात्मक मानसिकता को दर्शाता है।**

न्याय दर्शन और अन्य शास्त्रों के अनुसार:

- **न्याय दर्शन (Nyaya Darshan): न्याय दर्शन के अनुसार, कोई भी निर्णय केवल प्रमाण और तर्क पर आधारित होना चाहिए, न कि स्वार्थ और डर पर।**
- **पुरवा मीमांसा (Purva Mimamsa): पुरवा मीमांसा में यह कहा गया है कि केवल तर्क और सत्य पर आधारित कार्यों को ही सही माना जाता है, न कि किसी प्रकार के भय और स्वार्थ के आधार पर।**

निष्कर्ष:
यह आयत दिखाती है कि फिरआऊन और उसके लोगों ने डर और स्वार्थ के कारण सत्य को नकारा, जो तर्कसंगत नहीं था।

आयत 84

आयत का विवरण:
"और मूसा ने कहा ऐ मेरी क़ौम अगर तुम (सच्चे दिल से) ख़ुदा पर इमान ला चुके तो अगर तुम फरमाबरदार हो तो बस उसी पर भरोसा करो।"

न्याय तत्व (Pramana - Valid Knowledge):
यह आयत मूसा के सत्य और परमेश्वर पर विश्वास करने का आह्वान करती है। यह तर्क आधारित है कि जब कोई व्यक्ति सही मार्ग पर होता है, तो उसे परमेश्वर पर विश्वास रखना चाहिए, और कोई बाहरी शक्ति उसे नहीं हरा सकती।

आलोचना:

1. **विश्वास की अपील (Appeal to Belief): यह आयत केवल विश्वास पर आधारित है, और यह कोई ठोस प्रमाण या तर्क प्रदान नहीं करती। क्या यह पर्याप्त है कि किसी व्यक्ति को केवल विश्वास करने के लिए कहा जाए, जबकि उसे तर्क और प्रमाण के आधार पर सत्य का पालन करना चाहिए?**
2. **साक्ष्य की अनुपस्थिति (Absence of Evidence): यह बात साबित करने के लिए कोई प्रमाण नहीं प्रस्तुत किया गया है कि परमेश्वर पर विश्वास करना सही है।**

न्याय दर्शन और अन्य शास्त्रों के अनुसार:

- **न्याय दर्शन (Nyaya Darshan): न्याय दर्शन में यह कहा गया है कि किसी भी विश्वास को बिना प्रमाण के स्वीकार नहीं किया जा सकता।**
- **भगवद गीता (Bhagavad Gita): गीता में कहा गया है कि व्यक्ति को अपने कार्यों और विश्वासों का चयन तर्क और विचार पर आधारित करना चाहिए, न कि केवल विश्वास पर।**

निष्कर्ष:
यह आयत बिना तर्क और प्रमाण के विश्वास पर आधारित है, जो कि आलोचना के योग्य है।

आयत 85

आयत का विवरण:
"उस पर उन लोगों ने अजऱ् की हमने तो ख़ुदा ही पर भरोसा कर लिया है और दुआ की कि ऐ हमारे पालने वाले तू हमें ज़ालिम लोगों का (ज़रिया) इम्तिहान न बना।"

न्याय तत्व (Hetu - Reason):
यह आयत ईश्वर पर भरोसा करने और एक दुआ करने के संदर्भ में है, जिसमें लोग खुदा से यह प्रार्थना कर रहे हैं कि उन्हें ज़ालिम लोगों के द्वारा इम्तिहान (परीक्षा) में न डाला जाए। यहाँ पर 'Hetu' तत्व का उपयोग किया गया है, यानी कारण (Reason), जो इस आयत में यह है कि लोग खुदा पर भरोसा करने के बावजूद अत्याचार से बचने की प्रार्थना कर रहे हैं।

आलोचना:

1. **परीक्षा और विश्वास के बीच विरोधाभास (Contradiction between Trust and Test):**
   यह आयत यह प्रस्तुत करती है कि ईश्वर पर विश्वास रखने वाले लोग स्वयं को परीक्षा से बचाने की दुआ करते हैं। अगर किसी को ईश्वर पर भरोसा है, तो क्या यह विश्वास की कमी नहीं है कि उन्हें किसी परीक्षा से गुज़रने से डर लगता है? दुआ के माध्यम से यह संकेत दिया गया है कि ईश्वर पर

विश्वास करने के बावजूद लोग असुरक्षित महसूस करते हैं, जो एक प्रकार से विरोधाभास उत्पन्न करता है।

2. **दुनियाई समस्याओं से बचने की अपील (Appeal to Avoid Worldly Trials):**
   यह आयत यह दिखाती है कि लोग सिर्फ ईश्वर से डर और दुख से बचने की प्रार्थना कर रहे हैं, बजाय इसके कि वे ईश्वर की योजना को समझने और स्वीकार करने की कोशिश करें। ऐसे प्रार्थना करते समय यह जरूरी है कि लोग अपने कार्यों और उद्देश्यों पर ध्यान दें, न कि केवल कठिनाइयों से बचने की इच्छा रखें।

3. **न्याय और दायित्व (Justice and Accountability):**
   इस आयत में यह भावना दिखाई जाती है कि लोग अपने कार्यों के लिए जिम्मेदार नहीं होना चाहते हैं और सिर्फ ईश्वर से मुसीबतों से बचने की प्रार्थना करते हैं। यदि लोग अपनी परिस्थितियों का सामना करने के लिए तैयार नहीं हैं, तो क्या यह न्यायिक दृषटिकोन से उचित है? क्या यह वांछनीय नहीं है कि हर व्यक्ति अपने कर्मों का फल खुद भुगते, बजाय इसके कि वह केवल ईश्वर से मुसीबतों से बचने की प्रार्थना करें?

न्याय दर्शन और अन्य शास्त्रों के अनुसारः

- **न्याय दर्शन (Nyaya Darshan): न्याय दर्शन के अनुसार, हर व्यक्ति को अपनी परीक्षा (कर्म) का सामना करना चाहिए और यह जीवन का हिस्सा है। यह आयत कर्मों से भागने की कोशिश करती है, जबकि न्याय दर्शन यह सिखाता है कि कर्मों का फल अवश्य मिलता है। अगर लोग अपनी जिम्मेदारी स्वीकार करते हैं तो वे न्यायपूर्ण तरीके से जीवन जी सकते हैं।**

- **सांख्य योग (Sankhya Yoga): सांख्य योग के अनुसार, व्यक्ति को कर्मों के फल का सामना करना ही चाहिए क्योंकि यह जीवन का स्वाभाविक भाग है। ईश्वर की योजना को समझते हुए आत्मज्ञान और समर्पण की प्रक्रिया का पालन करना अधिक उपयुक्त है।**

निष्कर्ष:
यह आयत विरोधाभासी है, क्योंकि एक ओर लोग खुदा पर विश्वास करने का दावा करते हैं, तो दूसरी ओर वे कठिनाइयों और परीक्षणों से बचने के लिए प्रार्थना करते हैं। न्याय दर्शन के अनुसार, जीवन में हमें अपने कर्मों का सामना करना चाहिए और किसी भी परिस्थिति से भागने का प्रयास नहीं करना चाहिए। यह आयत जीवन के संघर्ष और परीक्षा की अनिवार्यता को नकारती है और सिर्फ कठिनाइयों से बचने का रास्ता दिखाती है, जो कि न्याय और कर्म के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता।

आयत 86 से 90 का विश्लेषण (Nyaya Darshan के तत्व का उपयोग)

आयत 86:

"और अपनी रहमत से हमें इन काफ़िर लोगों (के नीचे) से नजात दे।"

Nyaya Element: Hetu (Reason)
आलोचना:
यह आयत यह दावा करती है कि ईश्वर अपनी रहमत से काफ़िरों से नजात दे सकता है। इस तर्क में कोई विशिष्ट और मजबूत कारण नहीं दिया गया है कि ईश्वर केवल अपनी रहमत से काफ़िरों को छोड़ सकता है। यह विचार मानवता के लिए अपारदर्शी है क्योंकि यह अनिवार्य रूप से एक निश्चित समूह (मुसलमानों) को विशेषाधिकार देता है और अन्य धार्मिक विचारों को नकारता है। प्रमेय (Object of Knowledge) के दृष्टिकोण से भी, यह सिद्धांत सार्वभौमिक नहीं है क्योंकि हर व्यक्ति का अधिकार है कि वह अपनी आस्था का पालन करे, बिना किसी पूर्वनिर्धारित सीमा के।

निष्कर्ष:
इस आयत में एक सशक्त और तर्कसंगत आधार नहीं है और यह मानवता के समान अधिकारों के सिद्धांत का उल्लंघन करती है। यह केवल विशेष विश्वासों के आधार पर लोगों को "नजात" देने का दावा करती है, जो सार्वभौमिक नहीं हो सकता।

आयत 87:

"और हमने मूसा और उनके भाई (हारुन) के पास 'वही' भेजी कि मिस्र में अपनी क़ौम के (रहने सहने के) लिए घर बना डालो और अपने अपने घरों ही को मस्जिदें क़रार दे लो और पाबन्दी से नमाज़ पढ़ों और मोमिनीन को (नजात का) खुशख़बरी दे दो।"

Nyaya Element: Prameya (Object of Knowledge)
आलोचना:
यह आयत धार्मिक पूजा और कर्मकांडों को मानवता का एकमात्र सही रास्ता मानती है। यह केवल एक विशिष्ट धार्मिक समूह (मुसलमानों) के लिए लागू होती है और अन्य धर्मों को पूरी तरह से नकारती है। प्रमेय के दृष्टिकोण से, यह वस्तु (नमाज़, मस्जिदें) सार्वभौमिक रूप से सभी मानवता के लिए नहीं है। विभिन्न संस्कृतियाँ और विश्वास प्रणाली अपने-अपने धार्मिक अभ्यासों में विविधता रखती हैं। इस आयत में केवल

एक धार्मिक पद्धति का अनुसरण करने की अपेक्षा की जाती है, जो अन्य धर्मों के अनुयायियों के लिए अप्रासंगिक हो सकती है।

निष्कर्ष:
यह आयत केवल एक विशिष्ट धार्मिक विश्वास को सार्वभौमिक सच्चाई मानती है और मानवता के विविध धर्मों और विश्वासों की अनदेखी करती है, जो इसे सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं बनाती।

आयत 88:

"और मूसा ने अजऱ् की ऐ हमारे पालने वाले तूने फिरआऊन और उसके सरदारों को दुनिया की ज़िन्दगी में (बड़ी) आराइश और दौलत दे रखी है (क्या तूने ये सामान इस लिए अता किया है) ताकि ये लोग तेरे रास्तें से लोगों को बहकाए परवरदिगार तू उनके माल (दौलत) को ग़ारत (बरबाद) कर दे और उनके दिलों पर सख़्ती कर (क्योंकि) जब तक ये लोग तकलीफ देह अज़ाब न देख लेगें ईमान न लाएगें।"

Nyaya Element: Vyapti (Invariable Concomitance)
आलोचना:
यह आयत दावा करती है कि अगर किसी व्यक्ति को धन और संपत्ति दी जाती है, तो वह स्वाभाविक रूप से दूसरों को बहका सकता है और ईश्वर की राह से भटका सकता है। इस तर्क में एक कमजोर व्याप्ति (Vyapti) है। सभी संपन्न लोग न तो स्वार्थी होते हैं, न ही वे दूसरों को गलत रास्ते पर डालते हैं। वास्तव में, कई संपन्न व्यक्तियों ने समाज के भले के लिए अपना धन खर्च किया है। इस प्रकार, इस आयत का दावा गलत और सीमित है। यह केवल एक प्रकार के अनुभव और धारणा पर आधारित है, जो सभी मानव अनुभवों में लागू नहीं हो सकती।

निष्कर्ष:
यह आयत अत्यधिक सामान्यीकरण करती है और हर संपन्न व्यक्ति को गलत मार्ग पर चलने वाला मानती है, जो कि न्यायसंगत नहीं है। यह धारणा सभी व्यक्तियों और परिस्थितियों पर लागू नहीं हो सकती।

आयत 89:

"(ख़ुदा ने) फरमाया तुम दोनों की दुआ कुबूल की गई तो तुम दोनों साबित कदम रहो और नादानों की राह पर न चलो।"

Nyaya Element: Hetu (Reason)
आलोचना:
यह आयत आदेश देती है कि मूसा और हारुन अपनी राह पर दृढ़ रहें और "नादानों" की राह से बचें। इसका तर्क यह है कि उनके द्वारा की गई दुआ को स्वीकार किया गया है, लेकिन यह किसी प्रमाण या तर्क पर आधारित नहीं है। यह केवल विश्वास और धर्म के आधार पर एक आदेश है। Hetu के रूप में, यह तर्क आधारहीन है क्योंकि यह किसी वैज्ञानिक, सामाजिक या नैतिक वास्तविकता को प्रमाणित नहीं करता। यह केवल धार्मिक आदेश पर आधारित है।

निष्कर्ष:
यह आयत एक धार्मिक आदेश देती है जो केवल एक विशिष्ट धार्मिक दृष्टिकोण को मान्यता देती है, जबकि एक सार्वभौमिक दृष्टिकोण के लिए कोई तर्क या व्याख्या नहीं है।

आयत 90:

"और हमने बनी इसराइल को दरिया के उस पार कर दिया फिर फिरआऊन और उसके लश्कर ने सरकशी की और शरारत से उनका पीछा किया-यहाँ तक कि जब वह डूबने लगा तो कहने लगा कि जिस ख़ुदा पर बनी इसराइल इमान लाए हैं मै भी उस पर इमान लाता हूँ उससे सिवा कोई माबूद नहीं और मैं फरमाबरदार बन्दों से हूँ।"

Nyaya Element: Hetu (Reason)
आलोचना:
यह आयत कहती है कि फिरआऊन ने तब ईश्वर पर विश्वास किया जब वह डूबने लगा, लेकिन यह दावा करता है कि यह विश्वास तब स्वीकार नहीं किया गया। यह तर्क कमजोर है क्योंकि यह सिर्फ विश्वास और सजा के बीच एक लिंक स्थापित करता है, जो हर व्यक्ति के व्यक्तिगत अनुभव और चेतना पर निर्भर नहीं होता। एक व्यक्ति को उसके अंतिम क्षणों में विश्वास करने की स्वतंत्रता है, लेकिन इसे अचानक स्वीकार्यता नहीं मिल सकती। यह तर्क न्यायसंगत नहीं है क्योंकि यह केवल किसी विशेष स्थिति में विश्वास की सच्चाई पर आधारित है, जो सार्वभौमिक नहीं हो सकती।

निष्कर्ष:
यह आयत एक विशेष स्थिति में विश्वास की स्वीकार्यता पर आधारित है, जो हर व्यक्ति के जीवन में लागू नहीं हो सकती और इसलिए यह सार्वभौमिक सत्य का दावा नहीं करती।

सामूहिक निष्कर्ष (Collective Conclusion):

इन सभी आयतों में न्याय दर्शन के तत्वों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि ये तर्क और आदेश केवल एक विशिष्ट धार्मिक और सांस्कृतिक संदर्भ में सही हो सकते हैं, लेकिन इन्हें सार्वभौमिक रूप से सभी मानवता के लिए स्वीकार नहीं किया जा सकता। आयतों में दी गई अवधारणाएँ, जैसे कि धर्म, दुआ, और विश्वास केवल एक विशेष विश्वास पद्धति तक सीमित हैं और इनका कोई तर्कसंगत या वैज्ञानिक आधार नहीं है जो सभी मानवता के लिए उपयुक्त हो।

आयत 91 से 95 का विश्लेषण (Nyaya Darshan के तत्व का उपयोग)

आयत 91:

"अब (मरने) के वक़्त ईमान लाता है हालाकि इससे पहले तो नाफ़रमानी कर चुका और तू तो फ़सादियों में से था।"

Nyaya Element: Hetu (Reason)
आलोचना:
यह आयत इस विचार को प्रस्तुत करती है कि केवल मृत्यु के समय ईमान लाना नकारा जाता है, जबकि पहले के जीवन में नाफ़रमानी की थी। यह तर्क केवल एक विशेष परिस्थिति में लागू होता है। Hetu (Reason) के हिसाब से, यदि कोई व्यक्ति सच्चे दिल से ईमान लाता है, तो इसे नकारा क्यों किया जाए? मानव जीवन में बदलाव की संभावना को रोकने वाला यह विचार सार्वभौमिक रूप से सही नहीं हो सकता, क्योंकि किसी के अंतिम क्षणों में परिवर्तन या पश्चाताप की भावना भी हो सकती है।

निष्कर्ष:
यह आयत मानवीय जीवन की संभावनाओं को सीमित करती है और अंतिम समय में बदलाव की संभावना को नकारती है, जो एक बहुत ही कठोर और असंवेदनशील दृष्टिकोण है।

आयत 92:

"तो हम आज तेरी रुह को तो नहीं (मगर) तेरे बदन को (तह नशीं होने से) बचाएँगें ताकि तू अपने बाद वालों के लिए इबरत का (बाइस) हो और इसमें तो शक नहीं कि तेरे लोग हमारी निशानियों से यक़ीनन बेख़बर हैं।"

Nyaya Element: Pramana (Valid Knowledge)
आलोचना:
यह आयत कहती है कि ईश्वर ने एक विशेष व्यक्ति के शरीर को सड़ने से बचा लिया ताकि वह बाद के लोगों के लिए एक शिक्षा का कारण बने। यह दावा वास्तविकता से मेल नहीं खाता क्योंकि शरीर का संरक्षण या विशेष रूप से उसकी शारीरिक स्थिति को बचाने का दावा कोई सटीक और प्रमाणित ज्ञान (Pramana) नहीं है। यह केवल एक धार्मिक सिद्धांत है, जिसका कोई वैज्ञानिक या तार्किक आधार नहीं है।

निष्कर्ष:
यह आयत बगैर किसी प्रमाण के एक कथा प्रस्तुत करती है और इसका कोई सटीक या वैज्ञानिक आधार नहीं है। यह एक धार्मिक विश्वास है, जिसे सभी मानवता के लिए सार्वभौमिक नहीं माना जा सकता।

आयत 93:

"और हमने बनी इसराइल को (मालिक शयाम में) बहुत अच्छी जगह बसाया और उन्हें अच्छी अच्छी चीज़ें खाने को दी तो उन लोगों के पास जब तक इल्म (न) आ चुका उन लोगों ने एख़्तेलाफ़ नहीं किया इसमें तो शासक ही नहीं जिन बातों में ये (दुनिया में) बाहम झगड़े रहे है क़यामत के दिन तुम्हारा परवरदिगार इसमें फैसला कर देगा।"

Nyaya Element: Vyapti (Invariable Concomitance)
आलोचना:
यह आयत दावा करती है कि जिन लोगों के पास ज्ञान था, वे संघर्ष नहीं करते थे, लेकिन जब वे ज्ञान से वंचित हो गए, तो झगड़े होने लगे। यह तर्क Vyapti (Invariable Concomitance) के तहत पूरी तरह सही नहीं है, क्योंकि हर समय संघर्ष केवल ज्ञान की कमी पर निर्भर नहीं करता। संघर्षों के कई कारण हो सकते हैं, जैसे सत्ता का संघर्ष, आस्थाओं में भिन्नता, और अन्य सामाजिक, राजनीतिक, और आर्थिक कारण।

निष्कर्ष:
यह आयत संघर्षों के कारणों को केवल ज्ञान की कमी तक सीमित करती है, जो वास्तविकता से मेल नहीं खाता। यह सबको एक जैसा समाधान नहीं प्रदान कर सकता और इसे सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं किया जा सकता।

आयत 94:

"पस जो कुरान हमने तुम्हारी तरफ नाज़िल किया है अगर उसके बारे में तुम को कुछ शक हो तो जो लोग तुम से पहले से किताब (ख़ुदा) पढ़ा करते हैं उन से पूछ के देखों तुम्हारे पास यक़ीनन तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से बरहक़ किताब आ चुकी तो तू न हरगिज़ शक करने वालों से होना।"

Nyaya Element: Prameya (Object of Knowledge)
आलोचनाः
यह आयत कहती है कि यदि किसी को कुरान पर शक है, तो उन्हें अन्य धार्मिक किताबों को देखना चाहिए, जो पहले से मौजूद थीं। लेकिन Prameya के दृष्टिकोण से, यह विचार वस्तुगत रूप से सही नहीं है क्योंकि अन्य धार्मिक किताबों का आस्थाएँ, उद्देश्य और उद्देश्य अलग-अलग हो सकते हैं। यह तुलना सार्वभौमिक रूप से मान्य नहीं है क्योंकि अन्य किताबों के तात्त्विक आधार कुरान से भिन्न हो सकते हैं।

निष्कर्ष:
यह आयत एक धार्मिक पुस्तक को दूसरी किताबों से तुलना करने का सुझाव देती है, जो सभी पाठकों के लिए समान रूप से स्वीकार्य नहीं हो सकती, और यह किसी प्रमाणिक तर्क से मेल नहीं खाती।

आयत 95:

"न उन लोगों से होना जिन्होंने ख़ुदा की आयतों को झुठलाया (वरना) तुम भी घाटा उठाने वालों से हो जाओगे।"

Nyaya Element: Hetu (Reason)
आलोचनाः
यह आयत कहती है कि यदि किसी ने अल्लाह की आयतों को झुथलाया, तो वह घाटा उठाएगा। यह तर्क केवल एक नैतिक चेतावनी है, लेकिन इसका आधार पूरी तरह से धार्मिक विश्वासों पर आधारित है। **Hetu** (Reason) के हिसाब से, धर्म के आधार पर किसी को घाटा या नुकसान पहुंचाना ठीक नहीं है, क्योंकि यह तर्क सार्वभौमिक नहीं है। यदि कोई व्यक्ति किसी विशेष धार्मिक विश्वास को नहीं मानता, तो इसका मतलब यह नहीं है कि वह नष्ट हो जाएगा या घाटा उठाएगा।

निष्कर्ष:
यह आयत केवल एक तात्त्विक चेतावनी देती है, जो केवल धार्मिक दृष्टिकोण से उपयुक्त हो सकती है, लेकिन यह सभी मानवता के लिए उपयुक्त नहीं है, क्योंकि यह किसी विशेष विश्वास को अनिवार्य रूप से सही मानती है।

सामूहिक निष्कर्ष (Collective Conclusion):

इन आयतों में दिए गए तर्कों की सार्वभौमिकता पर सवाल उठता है, क्योंकि ये धार्मिक विचारों पर आधारित हैं और किसी वैज्ञानिक, नैतिक या सामाजिक आधार से मेल नहीं खाते। ये केवल विशेष धार्मिक पद्धतियों को स्वीकार करते हैं और अन्य धर्मों या विश्वासों को नकारते हैं। Nyaya Darshan के तत्वों का उपयोग करके यह साबित होता है कि इन आयतों में दी गई अवधारणाएँ सभी मानवता के लिए सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं होतीं और इनकी वैधता सीमित है।

आयत 96 से 100 का विश्लेषण (Nyaya Darshan के तत्व का उपयोग)

आयत 96:

"(ऐ रसूल) इसमें शक नहीं कि जिन लोगों के बारे में तुम्हारे परवरदिगार को बातें पूरी उतर चुकी हैं (कि ये मुस्तहक़े अज़ाब हैं)।"

Nyaya Element: Vyapti (Invariable Concomitance)
आलोचना:
यह आयत कहती है कि उन लोगों के बारे में जिन्हें अज़ाब का हक़ है, उनके बारे में अल्लाह की निर्णय पूरा हो चुका है। Vyapti (Invariable Concomitance) के तहत, इस विचार की वैधता पर सवाल उठता है क्योंकि किसी व्यक्ति या समूह का अज़ाब सिर्फ तात्कालिक निर्णय पर निर्भर नहीं होता। जीवन में कई बदलाव हो सकते हैं, जो व्यक्ति को सुधार सकते हैं और उनके कर्मों को बदल सकते हैं। यह विचार कि किसी का भाग्य पहले से तय है, और उसे बदलने का कोई रास्ता नहीं है, निराशाजनक और मानवता के लिए अनुकूल नहीं है।

निष्कर्ष:
यह आयत मनुष्य के सुधार की संभावना को नकारती है और जीवन को स्थिर और अपरिवर्तनीय मानती है, जो किसी भी तात्त्विक दृष्टिकोण से सही नहीं हो सकता। इसका कोई सार्वभौमिक आधार नहीं है।

आयत 97:

"वह लोग जब तक दर्दनाक अज़ाब देख (न) लेगें इमान न लाएगें अगरचे इनके सामने सारी (ख़ुदाई के) मौजिज़े आ मौजूद हो।"

Nyaya Element: Hetu (Reason)
आलोचना:
यह आयत कहती है कि लोग केवल दर्दनाक अज़ाब के बाद ही इमान लाएंगे, चाहे उनके सामने कितने भी मौजिज़े क्यों न आ जाएं। यह तर्क Hetu (Reason) के तहत खारिज किया जा सकता है, क्योंकि यह व्यक्ति की व्यक्तिगत स्वतंत्रता और तर्क क्षमता को नकारता है। क्या केवल डर और अज़ाब से ही किसी व्यक्ति का आस्थावान होना सही है? यह तर्क न केवल असंवेदनशील है, बल्कि यह व्यक्ति की सोच और आत्मनिर्भरता की अनदेखी करता है।

निष्कर्ष:
यह आयत डर और दंड के माध्यम से विश्वास पैदा करने की अवधारणा प्रस्तुत करती है, जो मानवता और नैतिकता के खिलाफ है। यह अवधारणा सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं हो सकती क्योंकि यह किसी भी व्यक्ति को अपने धर्म या विश्वास पर स्वतंत्र रूप से विचार करने का अवसर नहीं देती।

आयत 98:

"कोई बस्ती ऐसी क्यों न हुयी कि इमान कुबूल करती तो उसको उसका इमान फायदे मन्द होता हाँ यूनूस की क़ौम जब (अज़ाब देख कर) इमान लाई तो हमने दुनिया की (चन्द रोज़ा) ज़िन्दगी में उनसे रुसवाई का अज़ाब दफा कर दिया और हमने उन्हें एक ख़ास वक़्त तक चैन करने दिया।"

Nyaya Element: Prameya (Object of Knowledge)
आलोचना:
यह आयत यह कहती है कि यूनूस की क़ौम के इमान लाने से उनका अज़ाब हटा लिया गया। Prameya (Object of Knowledge) के तहत, इस विचार पर सवाल उठता है कि केवल विश्वास के कारण पूरे समुदाय का अज़ाब बदल सकता है। यह सत्य नहीं हो सकता, क्योंकि इमान लाने के बाद भी, विभिन्न व्यक्तियों और समुदायों की समस्याएं और हालात अलग-अलग होते हैं। यह धारणा निराकार और एकतरफा है, और यह उस व्यक्ति की स्वतंत्र सोच और उसके कार्यों के सही मूल्यांकन को नकारती है।

निष्कर्ष:
यह आयत एक विशेष घटना को सामान्यीकृत करती है और यह पूरे मानवता के लिए उपयुक्त नहीं है। यह केवल एक कहानी पर आधारित है, जो जीवन के जटिल तत्त्वों को समग्र रूप से नहीं देखती।

आयत 99:

"और (ऐ पैग़म्बर) अगर तेरा परवरदिगार चाहता तो जितने लोग रुए ज़मीन पर हैं सबके सब इमान ले आते तो क्या तुम लोगों पर ज़बरदस्ती करना चाहते हो ताकि सबके सब इमानदार हो जाएँ हालाकि किसी शख़्स को ये एख़्तेयार नहीं (कि बग़ैर ख़ुदा की इजाज़त ईमान ले आए)।"

Nyaya Element: Hetu (Reason)
आलोचना:
यह आयत कहती है कि यदि अल्लाह चाहता, तो सभी लोग इमान लाते, लेकिन वह किसी को अपने इमान का अधिकार नहीं देता। यह तर्क Hetu (Reason) के तहत सही नहीं है, क्योंकि हर व्यक्ति को अपनी आस्था और विश्वास का अधिकार होता है। धर्म, विश्वास, और आस्थाएँ केवल व्यक्तिगत अनुभव और स्वतंत्र विचारधारा से उत्पन्न होती हैं, और इन्हें किसी के इशारे पर नहीं थोपना चाहिए।

निष्कर्ष:
यह आयत व्यक्ति की स्वतंत्रता को नकारती है और धर्म को एक अनिवार्य अनुशासन बना देती है। यह विचार मानवता के विविधतापूर्ण विश्वासों और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के खिलाफ है।

आयत 100:

"और जो लोग (उसूले दीन में) अक़ल से काम नहीं लेते उन्हीं लोगें पर ख़ुदा (कुफ्र) की गन्दगी डाल देता है।"

Nyaya Element: Vyapti (Invariable Concomitance)
आलोचना:
यह आयत कहती है कि जो लोग अक़ल से काम नहीं लेते, उन पर अल्लाह "कुफ्र" की गन्दगी डाल देता है। यह तर्क Vyapti (Invariable Concomitance) के तहत गलत है क्योंकि यह व्यक्तियों के आस्थाओं और सोच के विभिन्न पहलुओं को एक ही नज़रिये से देखता है। हर व्यक्ति का दिमाग और सोच अलग होती है, और किसी को अपनी आस्था पर विश्वास करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए।

निष्कर्ष:
यह आयत व्यक्तिगत विचार और स्वतंत्र सोच के खिलाफ है, और यह किसी व्यक्ति को गलत ठहराने और उन पर निर्णय लेने का अधिकार नहीं देती। यह विचार सार्वभौमिक रूप से गलत है क्योंकि यह किसी के विचार और विश्वास के अधिकार को नकारता है।

सामूहिक निष्कर्ष (Collective Conclusion):

इन आयतों में प्रस्तुत तर्कों की सार्वभौमिकता पर सवाल उठता है। इन आयतों में मानव स्वतंत्रता, व्यक्तिगत विश्वास, और तर्क पर आधारित दृष्टिकोणों को नकारा गया है। Nyaya Darshan के तत्वों का उपयोग करके यह साबित होता है कि इन आयतों में दी गई अवधारणाएँ सभी मानवता के लिए सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं होतीं और इनकी वैधता सीमित है।

आयत 101 से 105 का विश्लेषण (Nyaya Darshan के तत्व का उपयोग)

आयत 101:

"(ऐ रसूल) तुम कहा दो कि ज़रा देखों तो सही कि आसमानों और ज़मीन में (ख़ुदा की निशानियाँ क्या) क्या कुछ हैं (मगर सच तो ये है) और जो लोग ईमान नहीं क़ुबूल करते उनको हमारी निशानियाँ और डरावे कुछ भी मुफीद नहीं।"

Nyaya Element: Vyapti (Invariable Concomitance)
आलोचना:
यह आयत कहती है कि जो लोग ईमान नहीं लाते, उनके लिए कोई निशानी या डर बेकार है। **Vyapti** (Invariable Concomitance) के आधार पर यह तर्क ग़लत है क्योंकि यह सोचता है कि सभी लोग एक ही तरीके से विचार करते हैं और केवल ईश्वर के संकेतों से ही सबका मन बदल जाएगा। इस विचार में व्यक्ति की मानसिक स्थिति, तर्क की क्षमता और आस्थाओं का कोई स्थान नहीं है। विभिन्न लोग विभिन्न कारकों से प्रभावित होते हैं, और केवल डर या चमत्कार से कोई भी व्यक्ति विश्वास नहीं करेगा। इसलिए यह आयत सार्वभौमिक सत्य का दावा नहीं कर सकती।

निष्कर्ष:
यह आयत यह मानती है कि किसी को सुधारने का एक ही तरीका है, जो कि सभी के लिए उचित नहीं हो सकता। यह विचार व्यक्ति की स्वतंत्र सोच और जीवन के विभिन्न पहलुओं को नकारता है, जो इस दृष्टिकोण से गलत है।

आयत 102:

"तो ये लोग भी उन्हें सज़ाओं के मुन्तिज़र (इन्तजार में) हैं जो उनसे क़ब्ल (पहले) वालो पर गुज़र चुकी हैं (ऐ रसूल उनसे) कह दो कि अच्छा तुम भी इन्तज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ यक़ीनन इन्तज़ार करता हूँ।"

Nyaya Element: Hetu (Reason)
आलोचना:
यह आयत कहती है कि ईश्वर की सज़ा आने तक लोग इंतजार कर रहे हैं और यह प्रतीक्षा दोनों पक्षों के लिए समान है। Hetu (Reason) के आधार पर यह विचार असंगत है, क्योंकि सज़ा केवल बाहरी इंतजार का परिणाम नहीं होती, बल्कि यह उनके कर्मों और कार्यों का न्यायपूर्ण फल होती है। यही कारण है कि इस सोच में त्रुटि है, क्योंकि केवल प्रतीक्षा से कोई परिणाम नहीं निकलता, बल्कि व्यक्ति के कर्म और उनकी नैतिकता की भी अहमियत होती है।

निष्कर्ष:
यह आयत केवल प्रतीक्षा करने पर जोर देती है, जो यह मानती है कि किसी के कर्म या विवेक की आवश्यकता नहीं है, जो गलत है। सही न्याय के लिए व्यक्ति के कार्य और उनके मूल्यांकन को भी महत्वपूर्ण माना जाना चाहिए।

आयत 103:

"फिर (नुज़ूले अज़ाब के वक़्त) हम अपने रसूलों को और जो लोग ईमान लाए उनको (अज़ाब से) तलूउ बचा लेते हैं यूँ ही हम पर लाज़िम है कि हम इमान लाने वालों को भी बचा लें।"

Nyaya Element: Hetu (Reason)
आलोचना:
यह आयत कहती है कि ईमान लाने वालों को अज़ाब से बचा लिया जाएगा, और यह ईश्वर का कर्तव्य है। Hetu (Reason) के तहत यह तर्क सही नहीं है, क्योंकि यह अवधारणा किसी विशेष व्यक्ति या समूह को विशेष रूप से बचाने के आधार पर है। क्या यह मानवता के अन्य हिस्सों को उपेक्षित कर देता है? क्या केवल इमान लाने के आधार पर किसी को अज़ाब से बचाना, उनके कर्मों और नैतिकता को नकारना सही है? न्याय के अनुसार, हर व्यक्ति को अपने कर्मों के अनुसार सजा या पुरस्कार मिलना चाहिए, न कि केवल उनके विश्वास के आधार पर।

निष्कर्ष:
यह आयत न्याय के सिद्धांतों से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें केवल इमान लाने वालों को विशेष उपचार दिया गया है, जबकि यह दृष्टिकोण सार्वभौमिक न्याय के खिलाफ है।

आयत 104:

"(ऐ रसूल) तुम कह दो कि अगर तुम लोग मेरे दीन के बारे में शक में पड़े हो तो (मैं भी तुमसे साफ कहें देता हूँ) ख़ुदा के सिवा तुम भी जिन लोगों की परसतिश करते हो मै तो उनकी परसतिश नहीं करने का मगर (हाँ) मै उस ख़ुदा की इबादत करता हूँ जो तुम्हें (अपनी कुदरत से दुनिया से) उठा लेगा और मुझे तो ये हुक्म दिया गया है कि मोमिन हूँ।"

Nyaya Element: Pramana (Valid Knowledge)
आलोचना:
यह आयत खुदा के सिवा किसी अन्य इबादत से इंकार करती है और केवल खुदा के मार्ग पर चलने का आदेश देती है। Pramana (Valid Knowledge) के तहत यह बोध केवल धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, जबकि सत्य की खोज में विभिन्न रास्ते हो सकते हैं। यह विचार किसी को एक ही सत्य से परिचित कराता है और उन सभी अन्य धार्मिक दृष्टिकोणों और ज्ञान से उन्हें बाहर कर देता है। क्या ज्ञान केवल एक स्रोत से आ सकता है, या हमें विभिन्न स्रोतों से प्राप्त ज्ञान का मूल्यांकन करना चाहिए? यह आयत केवल एक ही मार्ग को सही मानती है, जो कि व्यापक दृष्टिकोण से गलत है।

निष्कर्ष:
यह आयत व्यक्तियों को एक ही सत्य के अनुसार जीने की प्रेरणा देती है, जो मानवीय स्वतंत्रता और विविधता के खिलाफ है।

आयत 105:

"और (मुझे) ये भी (हुक्म है) कि (बातिल) से कतरा के अपना रुख़ दीन की तरफ कायम रख और मुशरेकीन से हरगिज़ न होना।"

Nyaya Element: Prameya (Object of Knowledge)
आलोचना:
यह आयत कहती है कि किसी को शिर्क (कुफ्र) से बचना चाहिए और केवल एक ही ईश्वर का अनुयायी होना चाहिए। Prameya (Object of Knowledge) के तहत यह विचार केवल एक ही ईश्वर के अनुसरण को सही मानता है, लेकिन क्या यह सार्वभौमिक रूप से सही है? क्या अन्य धार्मिक विश्वासों की उपेक्षा की जा सकती है? यह आयत अन्य विश्वासों और मार्गों को नकारती है, जबकि धर्म और विश्वासों के संदर्भ में विविधता को स्वीकार करना महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष:
यह आयत विविध धार्मिक विचारों और मार्गों की स्वतंत्रता का उल्लंघन करती है। सभी विश्वासों को समान अधिकार मिलने चाहिए, न कि केवल एक विशिष्ट विश्वास को श्रेष्ठ मानकर।

सामूहिक निष्कर्ष (Collective Conclusion):

इन आयतों में प्रस्तुत विचारों में सार्वभौमिकता का अभाव है। प्रत्येक आयत एक ही दिशा में सोचने को प्रेरित करती है, जो कि केवल एक समूह के दृष्टिकोण को मान्यता देती है। Nyaya Darshan के तत्वों का उपयोग करके यह स्पष्ट हो जाता है कि इन आयतों में दिये गए विचार और तर्क सार्वभौमिक दृष्टिकोण से अपर्याप्त और गलत हैं, क्योंकि वे मनुष्य की स्वतंत्रता, विविधता, और तर्क की अनदेखी करते हैं।

आयत 106 से 109 का विश्लेषण (Nyaya Darshan के तत्व का उपयोग)

आयत 106:

"और ख़ुदा को छोड़ ऐसी चीज़ को पुकारना जो न तुझे नफा ही पहुँचा सकती हैं न नुक़सान ही पहुँचा सकती है तो अगर तुमने (कहीं ऐसा) किया तो उस वक़्त तुम भी ज़ालिमों में (षुमार) होगें।"

Nyaya Element: Hetu (Reason)
आलोचना:
यह आयत कहती है कि यदि कोई ऐसी चीज़ को पुकारे जो नफा या नुक़सान न पहुँचा सके, तो वह ज़ालिम है। Hetu (Reason) के आधार पर यह तर्क असंगत है, क्योंकि यह केवल बाहरी संकेतों और प्रभावों के आधार पर किसी के कार्य का मूल्यांकन करती है, जबकि व्यक्ति का आंतरिक मनोबल, विश्वास और सोच महत्वपूर्ण होते हैं। यह अवधारणा केवल किसी बाहरी शक्ति या संकेत की उपयोगिता को ही महत्व देती है, जो न्याय के सिद्धांत से मेल नहीं खाता। क्या किसी व्यक्ति की आस्थाएँ या उसकी आंतरिक सोच केवल इस आधार पर गलत हैं कि बाहरी रूप से उनका असर नहीं दिखता?

निष्कर्ष:
यह आयत उन लोगों को ज़ालिम मानती है जो आस्थाएँ रखते हैं, भले ही उनका कोई बाहरी असर न हो, जो कि न्याय और तर्क की दृष्टि से गलत है। यह विचार व्यक्ति की आंतरिक सोच और विश्वास को नकारता है, जो सार्वभौमिक दृष्टिकोण से गलत है।

आयत 107:

"और (याद रखो कि) अगर ख़ुदा की तरफ से तुम्हें कोई बुराई छू भी गई तो फिर उसके सिवा कोई उसका दफा करने वाला नहीं होगा और अगर तुम्हारे साथ भलाई का इरादा करे तो फिर उसके फज़ल व करम का लपेटने वाला भी कोई नहीं वह अपने बन्दों में से जिसको चाहे फायदा पहुँचाएँ और वह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है।"

Nyaya Element: Vyapti (Invariable Concomitance)
आलोचना:
यह आयत कहती है कि यदि किसी पर ख़ुदा की बुराई आए, तो उसे कोई नहीं हटा सकता, और यदि ख़ुदा भलाई करे, तो कोई उस भलाई को छीन नहीं सकता। **Vyapti** (Invariable Concomitance) के तहत यह तर्क गलत है, क्योंकि यह कहता है कि हर स्थिति में केवल ख़ुदा की इच्छा का प्रभाव होता है। क्या यह सार्वभौमिक सत्य है? क्या यह न्याय की बात है कि एक व्यक्ति को हमेशा ख़ुदा के फैसले पर निर्भर होना चाहिए? क्या एक व्यक्ति के कर्म और संघर्ष की कोई अहमियत नहीं? यह अवधारणा किसी भी व्यक्ति की स्वतंत्रता और कार्यों को नकार देती है।

निष्कर्ष:
यह आयत केवल ख़ुदा की इच्छा पर निर्भर रहने की बात करती है, जबकि हर व्यक्ति के कर्म और विचारों का महत्व होना चाहिए। यह तर्क की दृष्टि से न्याय से मेल नहीं खाता और सार्वभौमिक दृष्टिकोण से गलत है।

आयत 108:

"(ऐ रसूल) तुम कह दो कि ऐ लोगों तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम्हारे पास हक़ (क़ुरान) आ चुका फिर जो शख़्स सीधी राह पर चलेगा तो वह सिर्फ अपने ही दम के लिए हिदायत एख़्तेयार करेगा और जो गुमराही एख़्तेयार करेगा वह तो भटक कर कुछ अपना ही खोएगा और मैं कुछ तुम्हारा ज़िम्मेदार तो हूँ नहीं।"

Nyaya Element: Pramana (Valid Knowledge)
आलोचना:
यह आयत कहती है कि जो व्यक्ति सही मार्ग पर चलता है, वह अपनी हिदायत के लिए जिम्मेदार है, और जो गुमराही अपनाता है, वह अपना नुकसान करता है। **Pramana** (Valid Knowledge) के आधार पर यह विचार सही नहीं है, क्योंकि यह न केवल क़ुरान की दृष्टि को सत्य मानता है, बल्कि यह यह भी मानता है कि हर व्यक्ति को अपनी हिदायत के लिए स्वयं जिम्मेदार ठहराया जाए। क्या यह ज्ञान सभी के लिए सार्वभौमिक है? क्या हर व्यक्ति एक ही तरीके से सोचता है? यह दृष्टिकोण व्यक्तिगत अनुभवों, मानसिकता, और परिस्थिति की विविधता को नकारता है।

निष्कर्ष:

यह आयत सार्वभौमिक रूप से सही नहीं है, क्योंकि यह केवल कुरान की हिदायत को मानता है और किसी व्यक्ति की व्यक्तिगत स्थिति या मानसिकता का ध्यान नहीं रखता। यह सार्वभौमिक दृष्टिकोण से गलत है।

आयत 109:

"और (ऐ रसूल) तुम्हारे पास जो 'वही' भेजी जाती है तुम बस उसी की पैरवी करो और सब्र करो यहाँ तक कि ख़ुदा तुम्हारे और काफिरों के दरम्यिान फैसला फरमाए और वह तो तमाम फैसला करने वालों से बेहतर है।"

Nyaya Element: Vyapti (Invariable Concomitance)

आलोचना:

यह आयत कहती है कि केवल कुरान की पैरवी करो और किसी अन्य विचार या दृष्टिकोण से न हटो। Vyapti (Invariable Concomitance) के तहत यह तर्क गलत है, क्योंकि यह केवल एक विश्वास को सही मानता है और अन्य विचारों या दृष्टिकोणों को नकारता है। क्या यह उचित है कि केवल एक विचार को ही सही माना जाए और बाकी को गलत ठहराया जाए? क्या सभी के पास एक समान अनुभव या मार्गदर्शन है? यह विचार सार्वभौमिक नहीं है, क्योंकि यह केवल एक दृष्टिकोण पर जोर देता है और मानवता की विविधता और विचारों की स्वतंत्रता को नकारता है।

निष्कर्ष:

यह आयत एक ही विश्वास को सत्य मानने की बात करती है, जबकि मानवता में विभिन्न विचारों और विश्वासों की विविधता होनी चाहिए। यह दृष्टिकोण सार्वभौमिक दृष्टिकोण से सही नहीं है और व्यक्ति की स्वतंत्रता को नकारता है।

सामूहिक निष्कर्ष (Collective Conclusion):

इन आयतों में प्रस्तुत विचारों में भी सार्वभौमिकता का अभाव है। प्रत्येक आयत एक ही दृष्टिकोण को सही मानती है, जो कि केवल एक विश्वास प्रणाली पर आधारित है। Nyaya Darshan के तत्वों का उपयोग करके यह स्पष्ट हो जाता है कि इन आयतों में दिए गए विचार और तर्क सार्वभौमिक दृष्टिकोण से अपर्याप्त और गलत हैं, क्योंकि वे मनुष्य की स्वतंत्र सोच, आस्थाओं और विचारों की विविधता को नकारते हैं।